लाल किताब के अरमान

(i) सबसे पहले इस किताब के आखिर में दी हुई फ़ेहरिस्त सभी दुरुस्ती के अनुसार लाल किताब को दुरुस्त कर लें। (ii) फ़रमान और अरमान दोनों एक ही नम्बर के है इसलिए दोनों को इक्ट्ठा मिलाकर पढ़ते जावें, इन शर्तों के बगैर पढ़ने से कोई मतलब हल नहीं होगा।

अरमान नं० 1

लाल किताब के अनुसार बुलन्द आसमान के आख़री हद और पताल की गहरी तह से घिरे हुए दरमियानी ख़ाली ख़लाओ या आकार में साहस और ज़ाहिर हवा के दोनों जहानों में आने-जाने के कुल रास्तों को जन्म-मरन की गांठ लगा देने वाली चीज़ बच्चा कहलायी। ज्यों ही कि इस बच्चे ने इधर का रुख किया बन्द मुट्ठी के आकाश में नौ निधि की अटल ताक़त व बारह सिद्धि की स्वयं अपने साहस की हवा (बरूए हस्त रेखा) कुण्डली के आकार में ग्रह राशि (बहिसाब इल्म-ज्योतिष) नारया बैल के सींगों पर कुल दुनिया की धरती माता का बोझ या ज़मीन का अपने मेहवर पर घूमने का क़ियास (बख़याल दीग़रान) का चक्र पहले ही घूमने लगा। मालिक के आदेश के करिश्मे की चमक से भाग्य की आवाज़ का प्रकाश होते ही इसकी हर गांठ के साथी:-

बृहस्पत	शुक्र	चंद्र	बुध
सिद्ध 12 ब्रह्म	नौ निधि	मोह	माई आकाश
राहु केतु	शनि	मंगल	सूरज
राई घटे न तिल बढ़े	मच्छ	भाई	प्रकाश
आ हाज़िर हुए।			

व्यक्तियों के प्रतिरिक्त केवल नौ निधि 12 सिद्धि के शब्द खाली बचते हैं। यही दो शब्द संसारिक ने बच्चे का नमा रखा। इसलिए केवल नाम पर ही व्यक्तियों ने किस्मत का प्रभाव माना हैं। (i) नौ ग्रह गुणा 12 राशि कुल 108 गांठ की माला का सीधा उल्टा चक्र माना गया है। जो 35 साला चक्र का पहला दूसरा हिस्सा होता है। (ii) पूर्ण व्यक्ति के नाम से पहले 9 गुणा 12 = 108 का शब्द लिखते हैं।

बुध (आकाश) और बृहस्पत (हवा) को गांठ लगा कर बांध लेने वाली चीज़ को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से नौ ग्रहों की मिलाई हुई चमक व्यक्तिगत भाग्य का खज़ाना होगा। और इन सब गांठों हुआ सामुद्रिक का अर्थ सब भेदों के खोलने वाला घोषित हुआ। जिस में बन्द मुट्ठी को ग्रह कुण्डली माना गया तो बुध (आकाश) बृहस्पति (हवा) को गांठ लगा कर या बांध कर लेने वाली चीज़ को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से नौ ग्रहों की

मिलाई हुई चमक व्यक्ति के भाग्य का खज़ाना हुई और इन सब गांठों से गांठा हुआ सामुद्रिक का इल्म सब भेदों के खोलने वाला मुक़र्रर हुआ। जिसमें बंद मुट्ठी को ग्रह कुण्डली माना गया तो

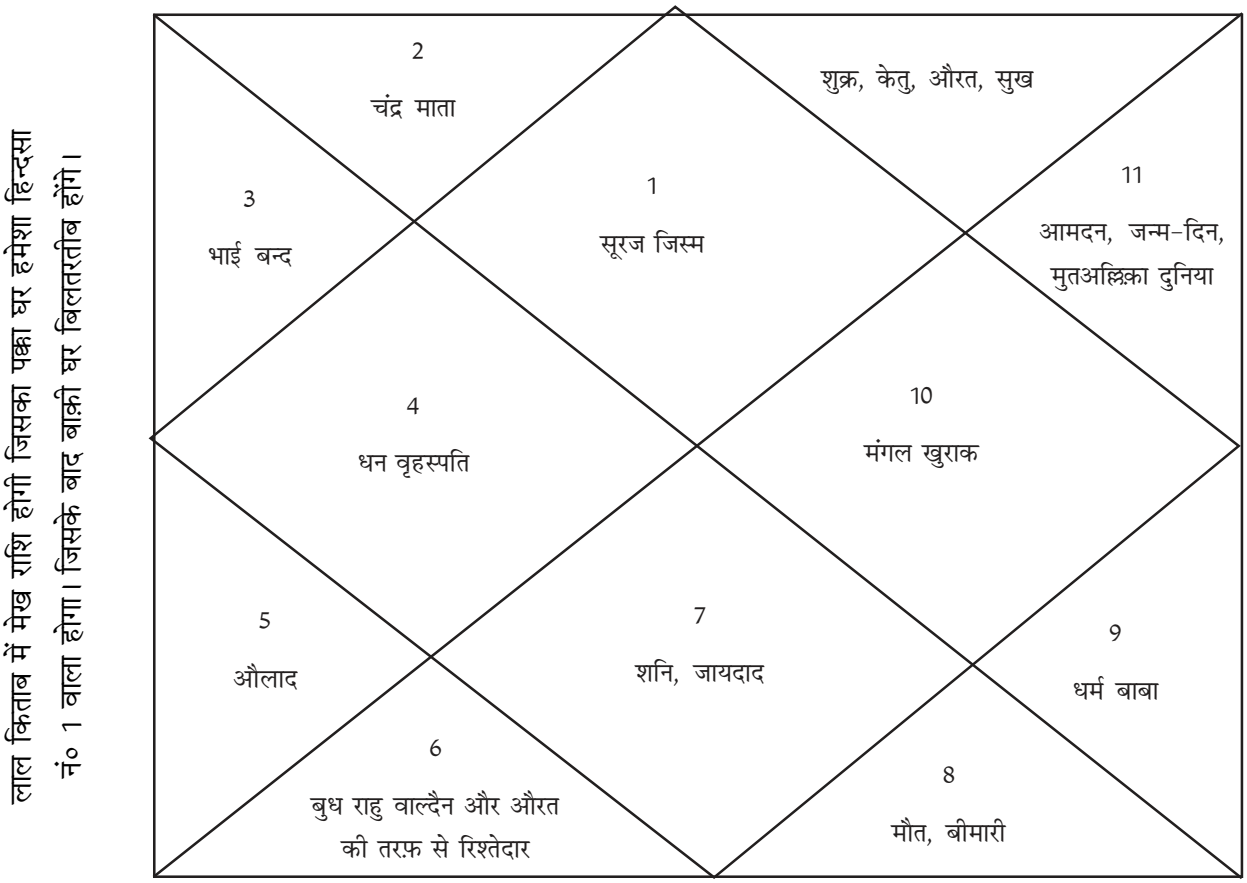

(ये कुण्डली तमाम ग्रहों के अपने-अपने ऊँच होने के ग्रहों की बुनियाद पर रखी गई है।)

कुण्डली के ख़ाने :- लाल किताब का आम उसूल

बंद मुट्ठी के अन्दर या बच्चा के साथ लाया हुआ अपनी क़िस्मत का ख़ज़ाना (तमाम ही नर ग्रह) जवानी } इल्मे-ज्योतिष की जन्म राशि (लग्न) लाल किताब : 1-7-4-10 होंगे

का हाल देखने के:

स्वयं अपना बचपन और जन्म से पहले वाल्दैन की हालज .....9 - 11-12 होंगे

औलाद के जन्म दिन से अपना बुढ़ापा मरने पर उसके बाकी रहे हुओं काकहाल } .....2-3-5-6 होंगे

मौत, बीमारी, मन्दा ज़माना .....8 – मारग स्थान होगा।

100 फ़ीसदी दृष्टि केख़ाने 1–7–4–10 होंगे साथ लाए हुए भरे ख़जाने

50 फ़ीसदी दृष्टि केख़ाने 3–11–5–9 होंगे दूसरों की मदद से पैदा करद: हालत

25 फ़ीसदी दृष्टि केख़ाने 2–6–12 होंगे रिश्तेदारों से ली हुई चीजें :

आगे की बजाए पिछे को देखने वाला खाना न० 8 मौत निमाणी का फंदा गिना है।

अरमान नं० 2

हस्त रेखा ज्योतिष के मजनूए या दोनों में से किसी एक के जरीए से दूसरे को पैदा कर लेने वाले मजमून को इल्म सामुद्रिक कहा है। जिससे हस्तीस से नेस्ती या नेस्ती से हस्ती का भेद खुलता है या खासियत से इसका मुतअल्लिका ठोस हाथ में आ जाने वाली चीज़ या ठोस चीज़ से उसका हवाई और ख्याली असर का पता चलता है और इस रूहबुत के हवाई व बदनी मैदान का अंदर–बाहर या इन्सानी व स्वयंाई का राज का बाहमी ताल्लुक़ चलता है।

अरमान नं० 3

रूह बुत के झगडे के मालिक इन्सान जिस्म के हिस्से और उनकी हर एक ताकत हस्त रेखा के तमाम जुज़ कुण्डली की 12 राशियों और 9 ग्रहों की चाल व बाहम लगाओ झुकाओ पैदा–करद: असर क़िस्मत का करिश्मा या स्वयंाई हुकम कहलाता है। जिसकी तामील से जन्म–मरण या शुरू व आखीर के मैदान की फतह व शिकस्त का नतीजा खुशी ग़मी की खुशबू व बदबू हुआ करती है।

अरमान नं० 4

हस्त रेखा या ज्योतिष की बुनियादी चीज़ों के मुकर्ररा मैदानों से हर व्यक्ति की किस्मत का मैदान मुकर्रर करके एक अक्स से असल चीज़ की हालत या नक़्ल से असल से नकल करके असल मकसद या बात का पूरा पता चल जाता है। (राहू केतु का ताल्लुक उन ग्रहों में जिक्र है।)

सफेद कागज (बुध) पर फटकड़ी (बुध) से लिखा हुआ चन्द्र की रोशनी या पानी में नज़र न पड़ा लेकिन जब सूरज का साथ या आग का ताल्लुक हुआ तो वही गुमनाम हर्फ़ सफ़ेदी से स्वयं–ब–स्वयं स्याह हो गए। हु बू–हू इसी तरह राहू–केतू (मस्नूई शुक्र गृहस्त दुनिया में) बुध के आकार में घुम रहे हैं और सूर्य चन्द्र के रास्ते में स्वयं–ब–स्वयं पैदा हो जाते है।

अरमान नं० 5

दुनियां की 12 तरफ़ें और हर एक तरफ़ का इलम सामुद्रिक में सम्बन्ध

राशि	कुण्डली का ख़ाना नं०	मालिक ग्रह	तरफ़	सम्बन्ध
मेश	1	मंगल	तख़्त नेक	जिस्म अजू और तमाम दुनियादारों का अलग-अलग वजूद होते हुए और फिर इकट्ठे एक हो एक काम करने की हिम्मत व ताक़त (मानिन्द राजा व रय्यत)
वृक्ष	2	शुक्र	मोह माया	तमाम चीज़ों की सिफ़तों का ऐज़न
मिथुन	3	बुध	आकाश	मुख़्तलिफ़ चीज़ों या ताक़तों का एक ही वजूद या एक ही जुज़ में इक्ट्ठे हो कर काम करना। मर्द औरत के जोड़े से बच्चा बनाना।
कर्क	4	चंद्र	शुमाल मशरिक़	धन दौलत, शान्ति, धरती माता, सब का सहारा।
सिंह	5	सूर्य	मशरिक	रोशनी रूह-आग-किस्मत की चमक
कन्या	6	बुध केतु	शुमाल पाताल	अन्दरूनी अक़्ल भाख्या भाओ अपार रिश्तेदार नकारा ख़ल्क़ नेकी-फलना फूलना।
तुला	7	शुक्र	जनूब मग़रिब	गृहस्त-उन्नति बढ़ना (नस्ल दर नस्ल)
वृश्चिक	8	मंगल बद	जनूब	मौत-मन्दे हाल-बदी हर एक का फन्दा
धन	9	वृहस्पति	दैवी दुनिया	हवा-माता का पेट-पिछला जन्म-बुजुर्गो की जगह
मकर	10	शनि	मग़रीब	अन्धेरा-शनि की स्वयं अपनी शक्ति (ज़ाती शक्ति)
कुंभ	11	शनि	जन्म	छुपे छुपाए अपने एजेण्ट राहु केतु से शनि का फैसला
मीन	12	वृहस्पति	शुमाल मग़रीब	दुनियावी धन दौलत का सुख
		राहु	जनूब मशरिक़	अचानक ख़याल भासरना-सराप व आशीर्वाद
		वृहस्पति राहु	आसमान	दोनों जहान की बजाए सिर्फ़ एक तरफ़ का वृहस्पति जिसे आसमान या राहु दो की बजाए एक शक्ति का कर देगा। यानि वृहस्पति राहु के साथ आसमान के ऊपर हवा तो दैवी शक्ति का मालिक अगर आसमान के नीचे दुनिया की तरफ हुआ तो गृहस्थी गुरू होगा।

ग़ंज़े कि राहु के साथ होने पर आसमान नीले रंग वाला वृहस्पति को सिर्फ़ एक तरफ मालिक कर देगा। दूसरे हिस्से के लिए वृहस्पति चुप होगा। खाना नं० 8–11 में शनि का राहु केतु का सम्बन्ध खाना नं० 8 में शनि का हैडक्वार्टर हैं जहां के राहु–केतु नेकी–बदी के कारनामें शनि को पहुंचाते हैं। उन कारनामों को साथ लेता हुआ ख़ाना नं० 11 में जाकर शनि दोनों जहान के गुरू (वृहस्पति का घर) के दरबार में स्वयं को हाज़िर–नाज़िर कह कर फैसला करेगा जिसमें वृहस्पति की रज़ामंदी ज़रूरी होगी।

कुण्डली के 12 खानें

मकान का सम्बन्ध (अरमान नं० 95) से सम्बन्धित	**ख़ाना नं०**	**व्यक्ति का सम्बन्ध (अरमान नं० 95) से सम्बन्धित**
चार दिवारी मय तै ज़मीनल के गोशे।	1	रूह–नामक
मकान का वास्ता यानी घर है या बैठक गुरूद्वारा है या ज़िहब ख़ाना इत्यादि	2	सुभाओ (नेकी) भूक
मकान के साज़ो समान वास्ते आराइश (अंदरुनी)	1	जिगर–खून–मीठा
मकान की तै ज़मीन (ख़ाली तै)	4	दिल–दूध–धन–दौलत
रोशनी व हवा	5	हवास–ख़मसा 3 इन्द्रियों की शक्ति
हमसाये यानी पड़ोसी, इर्द गिर्द वाले	6	पट्ठे–नाड़े–ज़ायका साग सब्जी फूल पत्तर
प्लस्तर सफ़ेदी	7	चेहरा–घी ज़र्द
छत	8	पित्त–बदहज़मी–कड़वाहट
कच्चा पक्का मय हर हिस्से की अन्दर की	9	सांस–मूल–जड़
पैमाइश लोहा, लकड़ (ईंट पत्थर)	10	बाल, कांटे
मकान की शान व शौकत (ज़ाहिरदारी)	11	पोस्त खाल छिलका–परवरिश
आबाद या वीराना	12	हड्डी खटाई

कुण्डली के 12 खानें

प्रभाव सम्बन्धित	ख़ाना नं०	हस्त रेखा के जूज़
स्त्री सम्बन्ध (माता, भुआ, मासी, फूफी वग़ैरह) (औरत, बेवा औरतें या मशूका) बदनामी या	2	उंगलियां (लम्बाई-छोटाई सीधी-टेढ़ी) परेशानी पर तिलक की ख़ास जगह
चालाकी की शौहरत व चमक मर्द औरत का बाहमी साथ अपनी ज़ाती	12	हथेली व उंगलियों का मय अंगूठा अंदर या बाहर को झुकाओ नाख़ून पांव के
ख़ासियतें (रूहानी-जिस्मानी-दिमाग़ी) मकानात के इर्द-गिर्द की चीज़ों का सम्बन्ध मकानात	6	चेहरा व परेशानी का हाल नाखून हाथ के व्यक्ति स्वयं किस ग्रह का है।
का बनना इत्यादि व पराई दौलत का मिलना, मर्दों का सम्बन्ध	7	जिस्म के बाल, हथेली की हर हालत का हाल,
दुनिया में नाम किस हैसियत का होगा।	1	हाथ पर ख़ास निशान
कुदरती तौर पर तबीयत का झुकाओ	4	चक्र, संख-सदफ़ उंगलियों पर जौ के निशान
क्या होगा सेहत व आम बरताओ	10	बड़ी तिकोन बड़ी मुस्ततील
आम खुशी व ग़मी की औसत हालत, चोरी, यारी, नुकसान, अय्यारी (ठगी)	3	मंगल के बुर्जों की चर्बी का भर जाना खुशी ग़मी की रेखा
आराम या हरामख़ोरी	9	उंगलियों पर सीधे खड़े या लेटे हुए ख़त
चालाकी की चमक, बदनामी की शौहरत	12	हथेली पर वृहस्पति के ख़त उंगलियों पर के वृहस्पति(बजुज़ ऊपर का ख़ाना नम्बर 2) के निशान
औलाद व अपने ख़ून का सम्बन्ध नेकी की मशहूरी	5	रफ़्तार तहरीर उंगलियों के दरमियान की खाली जगह
आमदन, आई-चलाई का ज़रिया	11	हाथों की क़िस्में हर अजू-मय-नाखूनों का हाल रंग वह किस-किस तरह के हैं।परेशानी सिवाय तिलक की ख़ास जगह का हाल
अपने वाल्दैन की तरफ से रिश्तेदार (नानके वग़ैरह)	6	क़द व क़ामत, हथेली व उंगलियों की तनासुब का असर
मौत निमाणी	8	सबकी ख़त्म कहानी

अरमान नं० 6

हाथ पांव की उंगली के नाखुन के सिरे से कलाई व टखने तक और नौ ग्रह व 12 राशी की कुण्डली से 12 तरफो के दरमियानी मैदान में नबातात, जमादात, इन्सानीयत, हैवानात मकान आमो व ख़ास व जा-ए-रिहाइश-ख़्वाब-शगुन-माल-मवेशी चरिन्द-परिन्द दरिंद, दोस्त दुश्मन, ज़हर व अमृत, दुनियावी दीग़र साथियों और इल्म क़ियाफ़ा वगैरह से जो सामुद्रिक के ज़रूरी हिस्से हैं, वक्त से पहले ही लिखे हुए नौ निधि बारह सिद्धि के ख़जाने की कमी बेशी से सम्बन्धित क़ुदरती और अनमेट (जो मिटाया न जा सके) लेख या हुक्मनामे को सिर्फ़ पढ़ा ही जा सकता है। मगर इसमें अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ अदली-बदली नहीं की जा सकती। भेद सिर्फ़ शकी बात को ठीक करके शक का लाभ उठा लेने की गुंजाइश है। जो ग्रह फल और राशि फल की मिलावट के समय हुआ करती है। यही एक बात इस विद्या का उचित मतलब है।

ग्रह फल व राशि फल

( ) जब कोई ग्रह अपनी निर्धारित राशि (यानी वो राशि जिसके कि वह घर का मालिक ग्रह गिना जाता है।) यह ऊँच-नीच फल की ठहरायी हुई राशि (फ़रमान नं० 113, पेज नं० 114) या अपने पक्के घर (फ़रमान नं० 103, पेज नं० 97) की बजाए किसी ग़ैर राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह (जड़ अदली-बदली कर लेने वाला वग़ैरह) बन जावे तो वह ग्रह ऐसी हालत में राशि फल या शकी हालत का ग्रह होगा जिसके बुरे असर से बचने के लिए इसके शक का फ़ायदा उठाया जा सकता है। इसके विरूद्ध यानी ऊपर कही हुई हालत के विरूद्ध हाल पर वह ग्रह 'ग्रह फल' या पक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर को तबदील करने की कोशिश करना बेमानी बल्कि मनुष्य शक्ति से बाहर होगा। केवल ख़ास-ख़ास स्वयं-रसीदा और महशूर हस्तियां की रेख में मेख (रेखा में मेखा, सूर्य मेख ख़ाना नं० 1 में कैद) लगा सकती हैं। वह भी आख़ीर में तबादला ही होगा। यानी एक जानदार या सांसारिक वस्तु या शक्ति को उसकी हस्ती से मिटा कर इसके ऐवज़ में दूसरी शक्तिशाली सांसारिक वस्तु या शक्ति पैदा कर देंगी। (बाबर हुमायूं के कारनामे) मगर नया ही दूसरा हिन्दसा फिर भी पैदा न होगा। सिवाय उस समय के जबकि ऐसी हस्तियां स्वयं अपनी शक्ति या अपने आप ही खत्म कर लेती हैं। और किसी दूसरे ऐवज़ तक नौबत नहीं आने देती। ये हालत भी उनकी स्वयंई शरीक होने की होगी। कोई न कोई तबादला दिया ही गया ग्रह फल फिर भी न टला।

(ii) ग्रह फल को अगर राजा कहें तो राशि फल उसका साथी वज़ीर होगा।

हर ग्रह कौन-कौन से घर (राशि नम्बर) में राशि फल का होगा

''वृहस्पति''

कुण्डली, के ख़ाना नं० ..... 6 ..... में ..... केतु का उपाओ नेक फल पैदा करेगा

कुण्डली के ख़ाना नं० ..... 7 ..... में ..... चंद्र के उपाओ से नेक फल पैदा होगा।

पापी ग्रहों मय बुध के साथ ..... सम्बन्धित ग्रह हर एक के अलग-अलग उपाओं से नेक हो।

''सूर्य''

i सूरज कभी राशि फल का नहीं होता।

ii सिवाय ख़ाना नं० 1 व पांच के। सूर्य जिस राशि में बैठा होवे उस राशि का मालिक ग्रह या उस राशि नं० के मालिक ग्रह का 'साथी ग्रह' राशि फल का हो जाएगा। ऐसी हालत में उस राशि फल में हो जाने वाले ग्रह के लिए उसके दुश्मन ग्रह से बचाने के लिए उपाओं करें। क्योंकि सूर्य स्वयं तो कभी नीच नहीं होता। बल्कि अपने दुश्मन ग्रह को नीचे दबाकर उस नीचे दब जाने वाले ग्रह का फल खराब कर दिया करता है।

iii ख़ाना नं० 1 व 5 में बैठा हुआ सूर्य हर दोस्त व दुश्मन ग्रह (केवल सूर्य के स्वयं अपने ही दोस्त या दुश्मन) को मदद पर कर दिया करता है। ऐसी स्थिति में राशि फल का सवाल या किसी उपाओ जी आवश्यकता नहीं होगी।

iv महांदशा के समय ख़राब हो चुके-नष्ट या बरबाद या ज़हरीले हुए ग्रहों के प्रभाव के लिये जो सूर्य के सम्बन्ध से राशि फल के हो गये हों स्वयं सूर्य का उपाए ही नेक असर पैदा करेगा। जिस पर वह बरबाद शुदा ग्रह मददगार हो जाएंगे। लेकिन अगर सूरज का स्वयं अपना ही असर दूसरों पर बुरा हो रहा होवे तो सूर्य के दुश्मन ग्रहों को नेक करने का उपाए करें। ये स्थिति केवल ख़ाना नं० 6 या 7 में सूर्य होने की होगी। जब कि बुध का किसी उपाए से नेक कर लेना मददगार होगा। ख़ाना नं० 7 में सूर्य हो और शनि का टकराओ आवे तो चंद्र को नष्ट करने से सूरज की मदद होगी।

''चंद्र''

चंद्र हमेशा ही राशि फल का होता है। ख़ासकर

ख़ाना नं० ..... 3 ..... में ..... चंद्र से पूरा नेक मंगल होगा। जो दुनिया के तमाम जंग व जदल और मैदाने जंग में पूरी फ़तह देगा।

ख़ाना नं० ..... 7 ..... में .....पूरे नेक असर का लक्ष्मी अवतार होगा।

ख़ाना नं०..... 8 ..... में ..... मौत के यम को मारने वाला यमराज लम्बी उम्र देने वाला होगा।

''शुक्र''

ख़ाना नं० ..... 4 ..... में ..... वृहस्पति का उपाओ नेक प्रभाव देगा।

ख़ाना नं० ..... 6 ..... में ..... शनि का उपाओ नेक फल पैदा कर देगा।

ख़ाना नं० ..... 4 ..... में (मंगलीक) ..... चंद्र का उपाओ मददगार होगा।

''बुध''

(i) ख़ाना नं० ... 9 ... में या ख़ाना नं० 9 के ग्रहों का साथी ग्रह हो जाने वाला बुध यानी बुध जिस घर में बैठा हो उस घर का मालिक ग्रह ख़ाना नं० 9 में बैठ जावे ख़ाना नं० 9 के तमाम ही ग्रहों को (ख़्वाह वा बुध) के दोस्त हों या दुश्मन या वह बुध से ज़बरदस्त हों या कमज़ोर) या ख़ाना नं० 9 के उस ग्रह को जिस का कि बुध ''साथी ग्रह'' बन रहा हो।

अपनी यानी बुध के खाली दायरे की तरह ही बेबुनियाद मुर्दा और निष्फल (यानी जो कोई भी काम न देवें या किसी भी काम ना आ सकें) कर देगा। ऐसी हालत में नर ग्रहों (सूर्य वृहस्पति मंगल) से उस नर ग्रह का उपाओ करें, जो नर ग्रह कि ख़ाना नं० 9 के ग्रह को या ख़ाना नं० 9 में बुध के साथी ग्रह हो जाने वाले ग्रह को या स्वयं बुध को ही बरबाद न करे। फिर यही शर्त मद्दे नज़र रखते हुए जबकि नर ग्रह काम न आ सके: स्त्री ग्रहों (चंद्र, शुक्र) का उपाओ करें। अगर इस तरह भी शर्त को मद्दे नज़र रखते हुए काम न बनें तो बाक़ी मुख़न्नस ग्रहों की मदद लेवें। मगर उपाओ से बरबाद हो जाने वाले ग्रह का ख़याल न भूल जावे।

(ii) ख़ाना नं० 10 ..... में .... शनि का उपाओ मदद करेगा।

ख़ाना नं० 12 ..... में .... केतु का उपाओ मदद करेगा।

ख़ाना नं० 9 में अगर अचानक सूर्य और मंगल मिले-जुले इकट्ठे ही आ जावें ख़्वाह बुध ख़ाना नं० 3 में हो ख़्वाह ख़ाना नं० 9 में तो बुनियाद ख़ाली तो न करेगा। मगर न खूद बोलेगा न इनको बोलने देगा। लसूड़े कि गिटक का हाल होगा। मन्दे माइने में दोनों ग्रहों को सुला देगा। और स्वयं भी सोया हुआ होगा। चमगादड़ के मेहमान जहां हम लटके वहां तुम लटको। उपाओ ख़ास-अरमान नं० 62 ता 94 ग्रह नष्ट में मदद के मुताबिक नाक में सूराख़ कर देना बुध की तमाम गड़बड़ से बचायेगा।

''शनि''

ख़ाना नं० ..... 3 ..... में .... केतु का उपाओ नेक फल देगा।

ख़ाना नं० ..... 6 ..... में .... राहु का उपाओ इच्छाधारी साँप (मददगार) कर देगा।

ख़ाना नं० ..... 9 ..... में .... वृहस्पति का उपाओ त्यागी गुरु की तरह मदद देगा।

राहु राशि फल का होगा ख़ाना नं० ..... 1 ..... में .... सूरज का उपाओ मदद करेगा।

ख़ाना नं० ..... 7 ..... में .... शनि का उपाओ मदद देगा।

केतु राशि फल का होगा ख़ाना नं० ..... 4 ..... में .... वृहस्पति का उपाओ नेक फल देगा।

ख़ाना नं० ..... 10 ..... में .... मंगल का उपाओ मदद देगा।

मन्दरजा बाला ख़ानें 1–7–4–10 बंद मुट्ठी के ख़ानें है। इन घरों में राहु या केतु के राशि फल में केवल उन घरों के ऊंच ग्रह ही मदद दे सकते हैं।

कौन ग्रह फल का राजा आदेश देने वाला होगा		**कौन इसका साथी वज़ीर राशि फल का होगा**
(1)	बालिग़ शुदा ग्रह	नाबालिग़ ग्रह
(2)	नौ ग्रह	12 राशियां
(3)	किस्मत का ग्रह	किस्मत को जगाने वाला ग्रह
(4)	एक दो तीन की तरतीब से पहले घरों के ग्रह जबकि वह अपनी–अपनी निश्चित जगह से हटे हुए हों।	बाद के घरों के ग्रह जबकि वह अपनी–अपनी निश्चित जगहों से चलकर किसी दूसरी जगह हों।

आमतौर पर वर्ष फल के हिसाब से तख़्त पर आ जाने वाला राजा बनता है और राशि नं० के हिसाब से बोलने वाला वज़ीर बनता है। लेकिन अगर ऐसे राजा और वज़ीर में कुण्डली के पहले घरों और बाद के घरों में होने का सवाल भी साथ झगड़ा खड़ा करे तो पहले घरों वाला बेशक आम उसूल पर वज़ीर बनता होवे। मगर अब वह राजा हो जाएगा। और बाद के घरों वाला उसका वज़ीर बनेगा बेशक वह राजा बनने का हक़दार है।

कौन ग्रह फल का राजा आदेश देने वाला होगा		**कौन राशि फल का इसका साथी वज़ीर होगा**
(5)	ख़ाना नं० 1 के ग्रह (या मकान स्वयं–साख़्ता)	ख़ाना नं० नौ के ग्रह या मकान जद्दी।
(6)	ग्रह का इसके अपने कायम होने की हालत का असर	ग्रहों की बाहम दृष्टि का असर
(7)	तख़्त का मालिक ग्रह अपने तख़्त के दौरा तक	राशि नं० के हिसाब से उम्र पर बोलने वाले ग्रह अपनी राशि नं० में अपने बोलने की मियाद तक यानी 3 साल
(8)	महादंशा में धोके का 12 साला का चक्र	तमाम उम्र पर धोके का 12 साला चक्कर।
(9)	महांदशा में हो जाने वाला ग्रह	महांदशा वाले ग्रह के दोस्त/बराबर के ग्रह।
(10)	जन्म समय का ग्रह	जन्म दिन का ग्रह विस्तारपूर्वक। अरमान नं० 9 में देखो।
(पक्की दोपहर मंगल, शाम पूरी राहु वग़ैरह)		(रविवार सूर्य, वीरवार वृहस्पति वग़ैरह)

हस्त रेखा में

कौन ग्रह फल का राजा आदेश देने वाला होगा	कौन इसका साथी वज़ीर राशि फल का होगा
(11) 21 वर्षीय आयु से रेखा	12 वर्षीय उम्र तक रेखा
(12) वह ग्रह जिसका कि वह मनुष्य हो।	वह ग्रह जिसका कि उसका मकान हो।
(13) मर्द का दायां हाि मर्द के स्वयं अपने लिए	मर्द का बायां हाथ मर्द के स्वयं अपने लिए
(14) औरत का बायां हाथ औरत के अपने लिए	औरत का बायां हाथ औरत के अपने लिए।
(15) मर्द का बायां हाथ उसकी औरत के लिए ग्रह फल का नेक दृश्य देने वाला	मर्द का दायां हाथ इसकी औरत के लिए नम्बर 16 ख़ाली है।
(17) औरत का बायां हाथ इसके पति के लिए ग्रह फल क नेक दृश्य देने वाला।	औरत का दाया हाथ उसके पति के लिए।

(18) बच्चा दोनों के लिए राशि फल देने वाला हुआ करता है।

(19) दाएं हाथ पर लिए हुए नर ग्रह प्रबल बाएं हाि पर से लिए हुए स्त्री ग्रह प्रबल

और प्रभावहीन ग्रह दोनों में से किसी भी हाथ पर से लिए हुए हर तरफ़ अपने-अपने घरों का जिस में कि वह पाए जावें असर करने वाले होंगे। औरत का यही हाल उलट हाथों से होगा।

(ii) ग्रहों का निशान हथेली पर और उंगली की पोरियों पर राशि का निशान पक्के असर का होता है। लेकिन इसके विरूद्ध

ग्रह फल का होगा	राशि फल का होगा
(20) उंगली की पोरियों पर जिस ग्रह का निशान हो उस ग्रह की वह राशि (चाहे एक निश्चित करद: राशि हो चाहे उसके लिए दो निश्चित हों) में जिस का कि वह घर का मालिक ग्रह कहलाता है। और उस राशि नं० के तमाम ग्रह जिस राशि नं० की पोरी पर कि वह ग्रह का निशान पाया जावे ग्रह फल का होगा।	हथेली पर जिस राशि का निशान हो उस राशि का का मालिक ग्रह और हथेली के उस राशि नं० में जिस नं० पर कि वह निशान पाया जावे होने वाले तमाम ग्रह राशि के फल के होंगे। ( ) उंगुली की पोरी पर अगर किसी नं० पर उस नं० की राशि के अलावा किसी ग़ैर राशि का निशान पाया जावे तो वह राशि जिसका कि वह निशान है और वह राशि नं० जिसमें कि वह निशान हो तमाम ही ग्रहों के लिए राशि का फल का होगा चाहे वह दोस्त हों या दुश्मन।

कौन ग्रह फल का राजा आदेश देने वाला होगा	कौन राशि फल का इसका साथी वज़ीर होगा
(21) मच्छ रेखा काग़ रेखा धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा आदि निश्चित रेखाओं से कोई भी या हथोली पर के खास निशान जिन का ज़िक्र लाल किताब पेज नं० 76 व 78 पर दर्ज है अपनी-अपनी निश्चित जगह और दाय हाथ पर वाकै हों तो ग्रह फल के और अगर अपनी जगह पर कि बजाये किसी और जगह मगर दाएं ही हाथ पर हो तो महांदशा जिसमें केतु का सम्बन्ध होगा प्रभाव देंगे।	मच्छ रेखा आदि मय खास़ निशान लाल किताब पेज नं० 76 व 78 पर निश्चित जगह मगर बाएं हाथ पर तो राशि फल के होंगे। और अगर बाएं ही हाथ पर मगर अपनी-अपनी निश्चित जगह कि बजाए किसी और जगह पर जगह पर पाए जावें तो महांदशा (जिसमें राहु का सम्बन्ध हो) का प्रज्ञाव देंगे।

अपनी निश्चित जगह की बजाए जब मच्छ रेखा काग़ रेखा आदि किसी और जगह वाक़ै हो तो जिस ग्रह की राशि या पक्के घर में बलिहाज़ बुर्ज व रेखा वह वाक़ै होवे उस ग्रह की पूजना से नेक फल होगा। मसलन मच्छ रेखा बुध की सिर रेखा पर वाक़ै हो तो शनि व बुध की चीज़ों की पालना यानि स्याह पक्षी व कौए की पालना करना मुबारक़ अगर शुक्र पर हो तो स्याह गाए आदि को पूजना, पालना मुबारक फल पैदा करेगा।

जुज़ 22

आमतौर पर जन्म कुण्डली ग्रह फल का असर	आमतौर पर चंद्र कुण्डली राशि फल का प्रभाव
(23) मर्द की जन्म कुण्डली स्वयं मर्द के लिए मर्द पर प्रभाव ग्रह फल का	मर्द की चंद्र कुण्डली स्वयं मर्द के लिए मर्द पर राशि फल का
(24) मर्द की चंद्र कुण्डली उसकी औरत पर ग्रह फल का नेक नज़ारा यानी महादशा के अर्सा में ख़ाली साल रखे हुओं में भाग्य का नेक और अचानक प्रभाव देगी।	करिश्मा यानी महादशा की हालत के विरूद्ध नेक और अचानक चमकारा। मर्द की जन्म कुण्डली उसकी औरत पर राशि फल (आम साधारण) का प्रभाव देगी।
(25) औरत की जन्म कुण्डली औरत के लिए औरत पर ग्रह फल का असर देगी।	औरत की जन्म कुण्डली इसके पति के लिए आम हालत की राशि फल का प्रभाव देगी।
(26) औरत की चंद्र कुण्डली उसके पति के लिए ग्रह फल का नेक दृश्य (महादंशा के) ख़ाली सालों में क़िस्मत की अचानक व नेक चमक होगी।	औरत की चंद्र कुण्डली औरत के लिए औरत पर राशि फल

अरमान नं० 7

ग्रहण

महांदशा से इच्छा सांसारिक विचार में ग्रहण का ज़माना होता है। सामुद्रिक में ग्रहण तमाम ही ग्रहों के लिए निश्चित है। जिसका विस्तारपूर्वक हाल महांदशा में दर्ज है।

अरमान नं० 8

दो चीज़ों के/को इक्ट्ठा होने/करने की हालत का नाम गांठ या ग्रह कहलाता है। या दूसरे शब्दों में वृहस्पति (हवा) बुध (आकाश) को इकट्ठे बांध देने वाली चीज़ की शक्ति या बच्चा के भाग्य की उलझन पैदा करने वाली चीज़ ग्रह है। जिसका असर वैसा ही जैसा ''रस्सी जल गयी मगर बट न गया'' की मिसाल से ज़ाहिर है। रस्सी को मोड़-तोड़ कर इधर-उधर पक्के तौर पर किए रखने वाली चीज़ का नाम ग्रह है। जो ''रस्सी का बट'' है उम्र खत्म हुई मगर भाग्य का सम्बन्ध चलता रहा।

अरमान नं० 9

अंग्रेजी हिसाब से रात के बारह बजे के बाद दूसरा दिन शुरु होता है। मगर इल्म-सामुद्रिक में सूर्य निकलने से नया दिन शुरु होता है यानी रात को गुज़रे हुए दिन का हिस्सा लेकर नए सूरज से दूसरा दिन शुरु गिनेंगे।

हफ़्ते में ग्रह का दिन	एक दिन में ग्रह का वक्त
वृहस्पति .....वीरवार	सूर्य निकलने से दिन का पहला हिस्सा।
सूर्य ..... रविवार	दिन के पहले हिस्से के बाद मगर पक्की दोपहर से पहले
चंद्र ..... सोमवार	चाँदनी रात
शुक्र ..... शुक्रवार	अंधेर पक्ष और चानन पक्ष की दरमियानी या अमावस की रात
मंगल (दोनों) ..... मंगलवार	पूरी दोपहर का हिस्सा
बुध ..... बुधवार	दोपहर के बाद मगर पूरी शाम से पहले
शनि ..... शनिवार	काली रात या घनघोर काले बादल का दिन
राहु ..... वीरवार की शाम पक्की	पूरी शाम मगर रात से पहले
केतु-रविवार की सुबह-सादिक़	सुबह-सादिक़ परन्तु सूर्य निकलने से पहले

एक दिन में हर ग्रह का पक्के तौर पर निश्चित वक़्त की यूनिट के लिए फ़ी यूनिट का समय 40 मिनट आदि लाल किताब 117 पेज पर दर्ज है।

नर ग्रहों (वृहस्पति-सूर्य-मंगल) का राज दिन स्त्री ग्रहों (चंद्र शुक्र) का राज रात। और प्रभावहीन (बुध मय पापी ग्रह) ग्रहों का राज दिन रात दोनों के मिलने का समय सुबह शाम होगा। जन्म दिन और समय जन्म का जब एक ही ग्रह हो जावे (यानि मंगलवार का दिन और मंगलवार की पक्की दोपहर के समय की पैदाइश) तो ऐसा ग्रह कुण्डली वाले का कभी बुरा न करेगा। और न ही कभी धोका देगा। बल्कि मौत भी उसी दिन और उसी दिन के उसी समय न होगी। बेशक चंद्रमा के हिसाब से (लाल किताब पेज नं० 320, जुज-9) मौत का वह दिन आवे। बशर्ते कि कुण्डली में भी वह ग्रह (वही मिसाल मंगल जो ऊपर कहा आदि) क़ायम होवे। कायम की तारीफ़ जुदी जगह लिखी है) बाक़ी हालतों में जबकि जन्म दिन तो किसी ग्रह का हो और जन्म समय किसी और ही ग्रह का हो तो ऐसी हालत में जन्म दिन और जन्म समय के ग्रहों की सब हालतें ग्रह फल राशि फल बराबर के ग्रह या बाहमी दोस्ती दुश्मनी के परिणाम का प्रभाव होगा।

( ) जन्म समय को गिनते है ..... भाग्य का ग्रह और ग्रह फल का।

( ) जन्म दिन को गिनते हैं ..... भाग्य के ग्रह को जगाने वाले ग्रह का पक्का घर।

उदाहरण, पैदाइश हो सोमवार समय पक्की शाम, अग राहु (जन्म समय का ग्रह होगा चंद्र जन्म दिन) के पक्के घर 4 में यानी कुण्डली वाले के लिए जब कभी और जो भी ख़ाना नं० 4 का प्रभाव होगा, राशि फल का होगा। जिसका चंद्र के उपाओ से नेक प्रभाव होगा। या राहु इस शख़्स के ख़ाना नं० 4 की चीज़ों पर बुरा असर करने के समय राशि फल का होगा। चाहे वह ग्रह (जन्म समय का) अरमान नं० 6 के अनुसार राशि फल का न भी हो लेकिन अगर जन्म समय का ग्रह (पैदाइश के हिसाब से जो भी होवे) ऊपर की मिसाल के अनुसार अरमान नं० 6 में हर ग्रह के अच्छे-अच्छे घर राशि फल वालों में आ जावें तो अरमान नं० 6 में दिया हुआ उपाओ मददगार होगा। जिसके लिए बदला जाने वाला या उपाओ के क़ाबिल जन्म दिन का ग्रह लेंगे। जन्म समय का नहीं। मसलन किसी की मंगलवार सुबह के बाद दिन का पहला हिस्सा (बवक़्त वृहस्पति) पैदाइश है। अब जन्म समय वृहस्पति का ग्रह मंगल के पक्के घर ख़ाना नं० 3 में होगा। उदाहरण के तौर पर अब वृहस्पति का ग्रह ख़ाना नं० 3 का होता हुआ (लाल किताब के पेज नं० 180 पहली स्तर ऊपर से) बीमारी ही बीमारी खड़ी करता जावे तो मंगल का ग्रह राशि फल का होगा। जो जन्म दिन का ग्रह गिना था। अब अरमान नं० 6 में देखा तो मालूम हुआ कि मंगल केवल ख़ाना नं० 4 और 6 में राशि फल का लिखा है। परन्तु ऊपर की मिसाल में मंगल ही उपाओ के क़ाबिल है। वृहस्पति का उपाओ तो कर नहीं सकते यानी जायज़ नहीं ऐसी हालत में मंगल का आम उपाओ बमुजिब लाल किताब के पेज नं० 118 जुज़ -5 करना मददगार होगा।

अरमान नं० 10

भाग्य - हर एक भाग्य के ग्रह को (अरमान 122 से सम्बन्धित) भाग्य रेखा कहते है, जिसके जागने का समय भाग्य के प्रभाव का समय होगा। भाग्य के ग्रह कई एक हो तो वज सब बाहम पूरे मददगार होंगे। सब से अच्छा भाग्य वृहस्पति का भाग्य का ग्रह होता है।

''**भाग्य का ग्रह**'' – सबसे उत्तम दर्जे पर वो ग्रह होगा जो राशि का ऊंच फल देने का (लाल किताब के पेज नं० 114, फरमान नं० 113) निश्चित है। जो हर तरह से ठीक साफ और उत्तम हो। और इसमें किसी तरह से भी ''साथी ग्रह'' होने बिलमुकाबिल के ग्रह या दुश्मन ग्रह का बुरा प्रभाव न मिला हुआ होवे। उसके बाद पक्के घर का ग्रह का मालिक ग्रह दोस्त ग्रहों का बना हुआ दोस्त ग्रह भाग्य का मालिक ग्रह होगा।

भाग्य के ग्रह की तलाश की तरतीब – सबसे पहले 12 राशियों के उच्च फल देने वाले ग्रहों को तलाश करें, फिर नौ ग्रहों से जो उत्तम हो, लेवें और बाद में बंद मुठ्ठी के ख़ानों (1–7–4–10) के ग्रहों से जो उत्तम हो, लेवें। उच्च फल देने वालों में से जो सबसे तसल्ली बख़्श और उच्च हो लेंवे। घर के मालिक ग्रहों से सबसे ज्यादा शक्ति (अरमान 27) वाले को लेंवे। यदि मुठ्ठी के चारों ख़ानें ख़ाली (शब्द ख़ाली इच्छा है कि वहां भी पूरी तरह का भाग्य का ग्रह न होवे) हो तो ख़ाना नं० 9 के ग्रहों को लेंगे। वह भी ख़ाली तो फिर ख़ाना नं० 3 के ग्रहों को लेंवे। यदि वह भी ख़ाली तो ख़ाना नं० 11 के ग्रह लेंगे। यदि वह भी ख़ाली तो ख़ाना नं० 5 को लेंगे। वह भी ख़ाली हो तो दूसरा दरवाज़ा या ख़ाना नं० 2 को लेंगे। अगर वह भी ख़ाली तो ख़ाना नं० 6 देखेंगे। वह भी ख़ाली तो ख़ाना नं० 12 में तलाश करेंगे। और यदि वह भी ख़ाली हो तो ख़ाना नं० 8 में बैठ कर देखेंगे कि आया भाग्य का ग्रह जिसमें ऊपर की तमाम शर्तें न हों, मर तो नहीं गया (विस्तारपूर्वक जुदी जगह) ये तलाश जन्म लग्न की कुण्डली और चंद्र कुण्डली दोनों से होगी। हस्त रेखा में दायां और बायां हाथ दोनों और हस्त रेखा के तमाम हिस्से शामिल होंगे।

भाग्य के ग्रह को जगाने वाला ग्रह – जब पहले घरों में कोई ग्रह न हो तो बाद के घरों के ग्रह सोये हुए माने जाते हैं। ऐसी हालत में भाग्य के ग्रह को जगाने वाले ग्रह की तलाश की आवश्यकता होगी। और यदि बाद के घर ख़ाली हों तो ख़ाना नं० को जगाने वाले ग्रह के उपाओ की आवश्यकता होगी जो कि ख़ाली है। (ग्रह का जागना और ख़ाना नं० का जागना दो जुदी–जुदी बातें हैं)

अगर किसी पितृ ऋण (ख़ानदानी पाप जिसका जुदा ज़िक्र है) महांदशा या दूसरे सबब से भाग्य का ग्रह सो जावे, नष्ट बरबाद या गुम हो जावे तो सब से पहले ऊपर भाग्य के ग्रह की तलाश से ख़ाली ख़ानों के घर के मालिक ग्रह को जगावें। यानी उसका उपाओ करें बशर्ते वह क़िस्मत के ग्रह का बराबर का ग्रह होवे या दोस्त होवे। इसके बाद महांदशा के समय में काम देने वाले ग्रह होवे। बाद–अज़ां दुश्मन ग्रहों की दुश्मनी हटावें या राशि फल की हालत का फ़ायदा उठावें। यदि ये भी काम न दे सके तो सूर्य को क़ायम करे। अगर ये भी मदद न देवे तो पापी ग्रहों और सबसे आख़ीर पर बुध का उपाओ करें।

ख़ाना नं० को जगाने वाले ग्रह

ग्रह	मंगल	चंद्र	बुध	चंद्र	सूर्य	राहु	शुक्र	चंद्र	वृहस्पति	शनि	वृहस्पति	केतु
नं०	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

भाग्य का प्रभाव – अरमान नं० 124 देखें।

भाग्य का फैसला – उम्र के लिहाज़ से धोके के ग्रह व वर्ष फल और राशि नं० के बोलने वाले ग्रह का मिला–जुला परिणाम भाग्य का फैसला करेगा।

मियाद उपाओ रिआयती चालीस दिन – चूंकि गिनती के लम्बे हिसाब को इस इल्म में उड़ाने के लिए 18 नछत्तर और 12 राशि को बाद में छोड़ ही दिया जाता है। इसलिए दोनों ही जमा (28+12) कुल 40 दिन रिआयती तक कम अज़ कम या ज़्यादा 43 दिन तक उपओ का प्रभाव पूरा होगा। जिसकी निशानी समय से पहले ही नेक ग्रह का प्रभाव हो जाने के समय दोस्त ग्रह की चीज़ों की कुदरती निशानियां और बुरे ग्रह की मियाद 40 दिन बाद तक रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानियां हुआ करती हैं। दौराने–उपाओ 40 दिन की आधा या चौथाई भाग में भी आधा या चौथाई प्रभाव मालूम होने लग जाया करता है।

अरमान नं० 11

किसी शक्ति के ग्रह की पहचान (1) बरुए हस्त-रेखा

जिस किसी मनुष्य में जिस ग्रह की शक्ति ज़्यादा होगी वह मनुष्य ज़्यादा शक्तिवाले ग्रह की चीज़ का ज़्यादा इस्तेमाल करने का आदी न होगा। मसलन सूर्य को नमक माना है और मंगल को मीठा अब सूर्य वाले की आम आदत होगी कि वह ज़्यादा नमक इस्तेमाल करने का आदी न होगा और अपनी कमी पूरी करने के लिए मिठा ज़्यादा इस्तेमाल करने का आदी होगा। इसी तरह मंगल कायम वाला मीठा ज्यादा इस्तेमाल न करेगा। नमक का ज़्यादा आदी या नमक ज़्यादा मिकदार में खाने वाला होगा।

(2) बरुए कुण्डली – बंद मुट्ठी के ख़ानों (1–7–4–10) के ग्रह चाहे भले हो चाहे बुरे कुण्डली वाले की तबीयत और भाग्य के बुनियादी पत्थर होंगे।

अरमान नं० 12

बड़ी रेखा – हर ग्रह की निश्चित रेखा या पक्का ग्रह।

शाखें – हर ग्रह की निश्चित शाख़ या ग्रह मस्नूई ग्रह अपने पक्के ग्रह की सम्बन्धित चीज़ों का प्रभाव देगा। लेकिन समय–मस्नूई ग्रह के हर दो ज़जु अपने मस्नूई हालत के दोनों जुज़ों के ग्रहों की सम्बन्धित चीज़ों का असर भी दे जाता है।

मसलन सूरज पक्का ग्रह है और शुक्र–बुध मस्नूई सूर्य। अब सूर्य हमेशा अपना प्रभाव सूर्य रेखा या सूर्य की सेहत या तरक्की रेखा ख़ाना नं० 1–5 का प्रभाव देगा लेकिन शुक्र, बुध मिले–जुले मस्नूई हालत में सूर्य का प्रभाव या

शुक्र की आम या शुक्र की शादी रेखा और बुध सर की रेखा का भी पर दो ग्रह ख़ाना नं० 7 में प्रभाव दे जायेगा। लेकिन वह भी उम्र के हर सातवें या आठवें साल (अल्प आयु)।

हस्त रेखा में 21 वर्ष उम्र से रेखा बलिग़ और 12 वर्ष उम्र तक नाबालिग़ गिनते हैं। लेकिन कुण्डली में वर्ष फल के हिसाब से उम्र में जिस दिन से (सबसे पहली बार) सूर्य का राज या दौरा शुरू हो जावे उस दिन से तमाम ग्रह बालिग़ गिने जाते हैं। चाहे, उम्र 21 वर्ष से कितनी ही कम या अधिक होवे।

( ) सूर्य अगर कुण्डली के ख़ाना नं० 1-5-11 (जन्म लग्न को ख़ाना नं० एक रखते हुए) में चाहे अकेला चाहे और ग्रहों के साथ होवे तो जन्म दिन से ही तमाम ग्रह बालिग़ गिने जायेंगे।

( ) सूर्य का दौरा शुरू होने से पहले मनुष्य पर उसके अपने पिछले कर्मों का फ़ैसला (अमूमन 7 या 8 वर्ष उम्र या हर सातवें या आठवें वर्ष) प्रभाव किया करता है। जो तबदीली का ज़माना हुआ करता है

अरमान नं० 13

नाबालिग़ बच्चा (12 साला उम्र तक) की रेखा का कोई ऐतबार नहीं होता। मुमकिन है कि ऐसी उम्र तक वह पक्के असर की रेखा होवें या तबदील हो जाने वाली हों।

इल्म ज्योतिष में- बच्चे की बंद मुट्ठी या कुण्डली के ख़ाना नं० 1-7-4-10 ख़ाली हों या इन ख़ानों में केवल पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह और बुध दोनों में से केवल एक) हो तो उसकी भाग्य का हाल 12 वर्ष उम्र तक शक्की होगा। ऐसी हालत में बच्चा (नाबालिग़) की किस्मत (जबकि सूर्य का सम्बन्ध अरमान नं० 12 न हुआ हो) पर मंदरजा ज़ैल असर होगा। उम्र के हिसाब से प्रभाव का ख़ाना नं० खाली ही आ जावे तो इस ख़ाली ख़ाना नं० की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस ख़ाने में हो वह ख़ाना लेवें।

उम्र का साल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
किस ख़ाने के ग्रहों का असर लेंगे	7	4	9	10	11	3	2	5	6	12	1	8
12 साला धोके	सूर्य	चंद्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहु	मौत	पितृ ग्रह	वृहस्पति	शुक्र	राशि खत्म

बालिग़ ग्रहों का बाक़ी आम उसूल होगा

इस बात का वहम न करें कि एक ही ख़ाना नं० के ग्रह कई बार क्यों बोले ऐसी हालत में ख़ास समय-पैदाइश के हिसाब का ग्रह, तख़्त का मालिक ग्रह लेंगे (अरमान नं० 9 की मदद लेवें) लेकिन अगर जन्म समय व जन्द दिन दोनों मालूम न हों तो किसी ख़ास वाक़या से लिया हुआ वर्ष फल बनाएंगे।

नाबालिग़ हालत में ''12 साला धोके का चक्र'' का चाहे जरूरी रखें (जिसका विस्तारपूर्वक ज़िक्र अरमान

नं० 113 ए में हुआ है)। 12 साला धोके के चक्र का ग्रह (साल नं० के हिसाब से) तख़्त का मालिक ग्रह होगा। और ग्रह फल का और ख़ाना नं० के ग्रह इसी राशि फल के होगे।

अरमान नं० 14-15

मर्द –औरत, मां–बाप, बहन–भाई, बड़ा–छोटा, दायां–बायां, बाप–बेटा, मां–धी, रात–दिन, जन्म–मरण, शुरू व आखीर, आकाश व हवा, नर ग्रह व स्त्री ग्रह, नेकी–बदी, सबको गांठ लगाने वाला बच्चा और इसकी लगाई हुई गांठ ग्रह शक अदल व रहम से मनुष्य, राहु–केतु मिला–जुला शुक्र तमाम गृहस्त की शादी ग़मी, हस्त रेखा व ज्योतिष के सामुद्रिक के फ़रमान व अरमान जन्म कुण्डली व चंद्र कुण्डली के दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति की हवा के आने–जाने के रास्ते, बुध के ख़ाली ख़ुलाओ के आकाश की अक़्ल, सूर्य की रोशनी, शनि के अन्धेरे की मिले–जुले जगह मौत निमाणी या उम्र का आख़ारी समय सबसे पहले देखा जावे। यदि किसी दूसरे को ज़ाहिर न किया जावे। ये भेद की शक्ति असल शक्ति होगी। जो ख़ाना नं० 6 (पाताल रहम) 8 (मौत अदल) और 12(आसमान मनुष्य) का नतीजा होगी। ख़ुलास्तन ये तीनों ख़ानें सबसे पहले पूरे तौर पर देख लिये जावें। वरना तमाम कहानी बेमाइनी होगी।

नोट : अरमान नं० 16 व 55 इक्ट्ठा ही पढ़ें

रेखा का ऊपर–नीचे को झुकाओ कुण्डली में ग्रहों की बाहम दृष्टि से मुराद होगा। रेखा का ऊपर को उठाओ या झुकाओ से मुराद होगी कि उसमें उस ग्रह का असर आकर मिल रहा है। जिस ग्रह के स्तम्ब की तरफ़ कि वह रेखा उठ रही है। कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरों में अपना प्रभाव मिलया करते हैं सिवाय ख़ाना नं० 8 जिसके ग्रह पीछे को देखते या अपने से पहले घरों में अपना प्रभाव मिला देते हैं। इस तरह जब तक पहले घरों का बुरा प्रभाव खत्म न हो, बाद के घरों के ग्रहों का नेक प्रभाव न होगा। ख़ाना नं० 8 की तासीर उल्ट गिनेंगे। **आगे देखेंगे (अरमान नं० 55 में)**

हस्त रेखा व ज्योतिष का सम्बन्ध

अरमान नं०

17 सब ही ग्रह नीच फल की राशि के (लाल किताब पेज नं० 114, फ़रमान 113) हों।

18 एक ही घर में बहुत ज्यादा मगर नाक़िस या नीच ग्रह हों।

19 चौड़ी रेखा, कई तरफ़ की दृष्टि से टकराए हुए दुश्मन ग्रह।

20 मद्धम रेखा, बहुत दुश्मन ग्रह सम्पूर्ण नहीं।

21 साफ़ रेखा, पक्के घरों के ग्रह या घर के ग्रह मगर क़ायम।

गहरी रेखा ऊंच घरों के ग्रह (ऊंच फल की राशि के ग्रह लाल किताब पेज नं० 114)।

22 शनि के बिलमुक़ाबिल इस के दुश्मन ग्रह (सूर्य, चंद्र, मंगल, लाल किताब के पेज नं० 105) शब्द बिलमुकाबिल इस्तिलाहात हाथ (शब्दों की तारीफ़) में ख़ोल कर लिखा है।

23 अपने से सातवें घर को देखने वाले ख़ानों के ग्रह यानी ख़ाना नं० 3 व 6 के ग्रह (तीसरा नौवें को देखता है मगर नौवां तीसरे को नहीं देखता। इसी तरह छठा बारहवें को देखता है मगर 12वां छठे में अपना असर नहीं डाल सकता बिना ख़ाना नं० 12 के बुध के क्योंकि बुध को आकाश माना है और ख़ाना नं० 6 पाताल और ख़ाना नं० 12 आसमान में भी ख़ाली आकाश होता है। हर सातवें साल तबदीली हालात कर सकते हैं। ख़ाना नं० 8 मौत पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल तबदीली हालात दे सकते हैं।)

24 ग्रहों का अपने दुश्मन ग्रहों को निश्चित राशियों में होना या उनको दुमन ग्रहों को देखना उनके असर में ख़राबी का सबब होगा। इसके बर अक्स ग्रहों का अपने दोस्त ग्रहों की राशियों में जाना या उनको दोस्त ग्रहों का देखना या उनका अपने दोस्त ग्रहों का साथी ग्रह हो जाना इनके प्रभाव को मुबारक़ करेगा।

25 राहु या केतु के साथ दोनों में से किसी एक के साथ बुध का हो जाना उन ग्रहों (राहु या केतु) के दौरे के समय अचानक आफ़त या मौत की निशानी होगी।

26 सिर्फ़ राशि फल या महांदशा में ग्रह के नेक दृश्य (जो चंद्र कुण्डली आदि का परिणाम हो सकता है) पर ऐतबार कर लेना वहम और धौके में रख लेने वाला प्रभाव हुआ करता है।

27 दौरे वाला ग्रह अपने दौरे के समय सब से पहले उस घर पर अपना प्रभाव डालेगा जहां कि वह कुण्डली में बैठा होवे। उसके बाद अपने दुश्मन ग्रहों पर (चाहे वह दुश्मन ग्रह उस घर में हों जहां कि वह स्वयं बैठा था) बाद अजां दोस्तों पर और फिर अपने बराबर के ग्रहों पर। यदि किसी घर में एक से ज़्यादा ग्रह बैठें हो तो दौरा वाला ग्रह हर एक ग्रह से ऊपर की तरबीब से बारी-बारी टकरायेगा (दुश्मनों से) और दोस्ताना बरताओ करेगा (दोस्तों से)। अगर एक ही घर में दौरा वाले ग्रह के कई दोस्त ही या कई दुश्मन ग्रह ही बैठे हों तो ग्रह चाल की तरतीब से (वृहस्पति के बाद सूर्य के बाद चंद्र आदि) प्रभाव करेगा। मगर कुण्डली के ख़ानों में दोस्त ग्रह जुदे और दुश्मन ग्रह जुदे घरों में ही होवें तो ख़ानों की तरतीब से (नं० 1 के बाद नं० 2 के बाद नं० 3 आदि) बरताओ करेगा।

सूर्य 9/9	चंद्र 8/9	शुक्र 7/9	वृहस्पति 6/9	मंगल 5/9
बुध 4/9	शनि 3/9	राहु 2/9	केतु 1/9	

दौरा के समय ग्रहों के बाहमी टकराओ से उनके बाहमी प्रभाव में कमी-पेशी होने के अलावा किसी ग्रह के उपाओ के लिए दूसरे ग्रह का उपाओ करते समय भी ये शक्ति का पैमाना मददगार होगा। विसर्ग : चंद्र शनि मिले-जुले (हथियार तेज़)

28 **मस्नूई ग्रह हैवानात पर**

नर ग्रह नों पर वृहस्पति ..... रूह के सम्बन्धियों पर प्रभाव देगा।
सूर्य ..... जिस्म के सम्बन्धियों पर प्रभाव देगा।
मंगल ..... खून के सम्बन्धियों पर प्रभाव देगा।

स्त्री ग्रह मादीनो पर चंद्र ..... माता की हैसियत वाली पर प्रभाव देगा।
शुक्र ..... औरत के दर्जा वालियों पर प्रभाव देगा।

29 **बेजानों पर**

मुख़न्नस ग्रह – शनि धाती जमादात पर – बुध नबातात पर – राहु हरकात दिमाग़ पर – केतु हरक़ात पावों पर।

''साथी ग्रह'' – जब कोई ग्रह आपस में अपनी–अपनी निश्चित राशि ऊंच नीच घर की राशि या अपने–अपने पक्के घरों में अदल–बदल कर बैठ जावें या अपनी जड़ों के लिहाज़ से इकट्ठे हो जावें तो साथी ग्रह कहलाते हैं। मसलन सूर्य का पक्का घर ख़ाना नं० 5 है और शनि का पक्का घर ख़ाना नं० 10 अब अगर शनि हो ख़ाना नं० 5 में और सूर्य होवे ख़ाना नं० 10 में तो दोनों बाहम साथी ग्रह होंगे।

बिलमुकाबिल – जो ग्रह आपस में दोस्त हों और ऐसी हालत में बैठे हों कि स्वयं तो वह दोस्त ग्रह ही रहें मगर उन में से एक या किसी एक की जड़ पर आगे दुश्मन ग्रह हो जावे चाहे वह स्वयं दोस्त ही है शब्द बिलमुक़ाबिल से याद होंगे, क्योंकि अब उन में किसी न किसी तरह से दुश्मनी भाओ हो गया है।

दोस्ती / दुश्मनी करता है–देखता है दृष्टि के समय कुण्डली के ख़ानों में 1,2,3 आदि की तरतीव से पहले

घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से/की (दोस्ती–दुश्मनी) करता/देखता हुआ कहलाता है सिवाय ख़ाना नं० 8 के जो ख़ाना नं० 2 को (पीछे की तरफ़) देखता है।

कुण्डली में पहले घरों के या बाद के घरों के ग्रह – दृष्टि और एक दो तीन हद बारह की तरतीब से जो घर या ख़ाने पहले आ जावें उन में बैठे हुए ग्रह पहले घरों के होंगे। यानी जो ग्रह दूसरे ग्रहों को दखते हों और हों भी गिनती की तरतीब में पहले नं० के अब सूर्य को कहेंगे कि वह शनि से पहले घरों का है।

मसलन ग्रह वाक़या हों

ख़ाना में	1	7	4	10	2	6	8	12	3	9	11	5
ग्रह	सूर्य	शनि	वृहस्पति	मंगल	चंद्र	बुध	–	शुक्र	राहु	केतु	–	–

वृहस्पति को मंगल से पहले घरों का कहेंगे। अब मंगल से सूर्य वृहस्पति शनि हर एक या तीनों ही गिनती में तो अवश्य पहले नं० पर हैं मगर मंगल से पहले घरों के ग्रह से मुराद सिर्फ़ वृहस्पति से होगी। या मंगल अब वृहस्पति के बाद के घरों का ग्रह है। एक ही घर का ग्रह जब दो और घरों को देखे मसलन ख़ाना नं० 3 देखता है ख़ाना नं० 9 और ख़ाना नं० 11 को अब ख़ाना नं० 9-11 दोनों ही घरों के ग्रह ख़ाना नं० 3 में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के ग्रह होंगे (बे) पहले घरों वाले ग्रह अपने बाद के घरों में अपना फल मिलाया करते हैं। जब बोलें कि चंद्र दुश्मनी करता है शुक्र से तो मुराद होगी कि चंद्र है पहले घरों में शुक्र से।

कायम ग्रह

जो ग्रह हर तरह से दुरुस्त और अपना प्रभाव बिना किसी दुश्मन ग्रह के प्रभाव की मिलावट के साफ़-साफ़ और क़ायम रख रहा हो यानी राशि नं० पक्के घर या दृष्टि आदि किसी तरह से भी इस में दुश्मन का असर न हो और न ही वह किसी दुश्मन ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो। ग्रह का घर ग्रह की अपनी निश्चित राशि (लाल किताब पेज नं० 114 घर का मालिक होने की ऊंच या नीच फल की राशि) इस ग्रह के लिए इस ग्रह का घर कहलाता है।

मसलन ख़ाना नं० 3-6 बुध के लिए।

घर का ग्रह - ग्रह का पक्का घर (लाल किताब पेज नं० 97, फ़रमान नं० 103) इस ग्रह का घर कहलाएगा। मसलन ख़ाना नं० 7 बुध के लिए।

दोस्त ग्रह लाल किताब पेज नं० 114 किसी ग्रह के सामने ख़ाना दोस्त/ दुश्मन में लिखे हुए

दुश्मन ग्रह ग्रह उस ग्रह के दोस्त/दुश्मन ग्रह कहलाएंगे। किसी दूसरे की मारफ़त दोस्त/दुश्मन न गिनेंगे।

पापी ग्रह- हमेशा राहु केतु और शनि से मुराद होगी।

ऊंच नीच ग्रह जब कोई ग्रह ऐसी राशि में हो जो इस के लिए ऊंच फल/नीच फल की निश्चित की है। (लाल किताब के पेज नं० 114)

बराबर का ग्रह लाल किताब के पेज नं० 105 के ख़ाना वास्ते ''बराबर की शक्ति के'' में लिखे हुए ग्रह। मसलन नं० 1 वृहस्पति के ग्रह के ''बराबर की शक्ति'' के।

पापी ग्रह - शनिचर राहु केतु तीनों मिले-जुले (पापी ग्रह) लिखे जाते हैं। वह वृहस्पति के बराबर के ग्रह कलाएंगे सिर्फ़ राहु केतु मिले-जुले (पाप) के लिखे जाते हैं। वह शुक्र के बराबर के ग्रह कहलाएंगे (अरमान नं० 113ए) में मस्नूई ग्रहों के हाल में कंगाल पापियों का हाल दर्ज है।

अरमान नं०

30 रेखा की दुरुस्त हालत के प्रभाव से मुराद ग्रह के कायम होने की हालत का प्रभाव और टूटी-फूटी रेखा का प्रभाव से मुराद ग्रह के क़ायम न होने यानी दुश्मनी भाव वाली हालत या मन्दी हालत का होने की हालत से

मुराद होगी। दुरुस्त हालत में ग्रह की ऊंच हालत और टूटी-फूटी हालत में ग्रह की नीच हालत भी शामिल होगी। आगे दिए हुए अरमान नं० 31 ता 56 की दृष्टि के सब घर ख़ाली माने गये हैं।

31 वृहस्पति होवे अपने पक्के घर ख़ाना नं० 2 में और ख़ाना नं० 6 में हो शनि या सूर्य या चंद्र।

32 सूर्य होवे अपने पक्के घर ख़ाना नं० 1 में और ख़ाना नं० 7 में हो बुध।

33 चंद्र होवे अपने पक्के घर ख़ाना नं० 4 में और ख़ाना नं० 7 में हो शुक्र।

चंद्र, शुक्र मिले-जुले ख़ाना नं० 4 या ख़ाना नं० 7 में और दृष्टि के नं० 10 व 1 ख़ानें ख़ाली हों।

34 चंद्र, शुक मिले-जुले ख़ाना नं० 4 में और ख़ाना नं० 10 में शनि मां का नेक प्रभाव मिला होगा।

चंद्र, शुक्र मिले-जुले ख़ाना नं० 7 में और ख़ाना नं० 1 में सूर्य बाप का नेक प्रभाव मिला होगा।

35 चंद्र और बुध- बुध पहले घरों में चंद्र बाद के घरों की दृष्टि के हिसाब से या दोनों बुध के किसी एक ही घर में इक्ट्ठे हो जावें तो मंदे नतीजे होंगे। चंद्र, वृहस्पति मय बुध-इक्ट्ठे हो जावें तो वृहस्पति और चंद्र दोनों मिलकर बुध को दबा लेंगे और कोई बुरा प्रभाव न होगा। अकेले चंद्र या अकेले वृहस्पति को बुध मार लेता है और बुरा प्रभाव कर देता है।

36 चंद्र वृहस्पति - दोनों इक्ट्ठें होवें तो दोनों का मिला हुआ प्रभाव बिल्कुल ठीक होगा।

37 चन्द्र के - साथी /बिलमुकाबिल पापी ग्रह हो जावें तो चंद्र का अपना फल तो कुण्डली वाले के लिए उत्तम ही रहेगा। लेकिन वह दूसरों की मुसीबत पर मुसीबत देखता हुआ बेचैन ही रहता रहेगा।

38 चंद्र व चंद्र का पक्का घर - अगर चंद्र स्वयं को अपने घर से बाहर किसी और जगह जा कर ख़राब नीच या नष्ट हो जावे लेकिन चंद्र के पक्के घर (ख़ाना नं० 4) में कोई भी ग्रह सिर्फ़ अकेला ही चाहे वह चंद्र का दोस्त हो या दुश्मन आ बैठे तो चंद्र का घर ही इस ख़ाना नं० 4 में आ बैठने वाले ग्रह को नेक फल का कर देगा चाहे चंद्र इस ग्रह का साथी ग्रह हो या न हो। लेकिन अगर चंद्र अपने घर से बाहर मगर क़ायम या दुरुस्त होवे लेकिन इस ग्रह का साथी ग्रह न होवे तो वह दोस्ती या दुश्मनी का अपना असर जैसा भी कि इसका अपने घर से बाहर के घर में हो कायम रखेगा। ख़ाना नं० 4 ख़ाली और इधर-उधर हर तरह से ख़ाली हो* अगर चंद्र के घर बैठने वाला ग्रह चंद्र का साथी ग्रह बन रहा हो तो चंद्र हमेशा नेक फल देगा। चाहे वह ग्रह चंद्र का दुश्मन ही हो। चंद्र से कोई दुश्मनी नहीं करता। चंद्र स्वयं ही अपना फल बन्द कर दिया करता है। लेकिन ऐसी हालत में चंद्र अपना नेक फल देना बदस्तूर क़ायम रखेगा।

---

* तो तमाम ही ग्रह रद्दी होते हुए भी अकेला चंद्र का घर ही (चंद्र की भी परवाह नहीं कि चाहे कैसा ही मन्दा होवे मगर होवे ख़ाना नं० 4-10 से बाहर) मुकाबला करेगा और उत्तम फल देगा।

39 **चंद्र बुध** (i) चंद्र पहले घरों में और बुध बाद के घरों की दृष्टि के हिसाब से या दोनों चंद्र के घर (खाना नं० 4/7) में इक्ट्ठें हो जावें तो दैवी हाल अच्छा परन्तु दुनियावी हालत में दोनों ग्रहों का मंदा फल होगा। अगर पापी ग्रह यह दोनों में से किसी एक या दोनों के दुश्मन ग्रह का सम्बन्ध हो जावे तो दोनों ग्रहों का अंदरुनी दैवी और दिखाई देने वाला दुनियावी दोनों की तरह फल मंदा होगा।

(ii) दोनों ही जुदा-जुदा होने की हालत में दोनों में से कोई भी जब दूसरे घर हर तरह से अकेला हो नेक फल देगा। मगर जब दोनों मिले-जुले हों तो वह दोनों के किसी एक के घर भी होने पर नेक फल न देंगे।

40 व **चंद्र मंगल** -दोनों ग्रह इक्ट्ठे साथी ग्रह की हैसियत के या दोनों ही इक्ट्ठे

41 **धन रेखा या धन श्रेष्ठ रेखा** - दोनों में से किसी एक के पक्के घर में बैठ जावें और हर हालत में दृष्टि के घर खाली हो तो मंगल बद को भी मंगल नेक कर लेंगे या मंगल बद का तुख़्म बद भी उड़ा देंगे और जंग व जदल-दुनियावी गृहस्त (चंद्र या मंगल के सम्बन्ध) में हर तरह का नेक फल होगा।

42 **चंद्र शनि**- अगर दोनों मिले-जुले चंद्र के घर ख़ाना नं० 4 में या दोनों साथी ग्रह हो जावें पितृ रेखा का प्रभाव होगा। शनि ऐसी हालत में कुण्डली वाले के लिए इच्छाधारी मददगार सांप मगर ग़ैरों के लिए खूनी सांप होगा। चंद्र खूनी कुआं होगा दूसरों के लिए। कुण्डली वाले के लिए मान सरोवर इज्जत वाला होगा।

43 शुक्र-शनि - (i) शुक्र पहले घरों में होता हुआ शनि को देखता होवे तो शनि की तरह इसके दूसरे साथी इसका धन खते जावें या वह दूसरों को खिलावे।

(ii) दोनों ही शुक्र के पक्के घर मिले-जुले हों निहायत करीबी रिश्तेदार उस का धन खा जाने वाले होंगे।

(iii) दोनों ही शनि के पक्के और शनि के जाती घर ख़ाना नं० 10 में शनि के काले कीड़ों के भौण की तरह बेशुमार गृहस्ती इसके साथी होंगे। खाने वाले और खिलाने वालों की किस्मत का धन खाने पीने के लिए हर तरह से काफी होगा। मकानात बहुत बनेंगे। चाहे अपने चाहे दूसरों का बना देवे।

(iv) दोनों मिले-जुले शनि के घर नं० 10 में और मुक़ाबले पर सूर्य ख़ाना नं० 4 पर तो शनि का बुरा प्रभाव होगा। मगर उम्र लम्बी होगी

(v) दोनों मिले-जुले चंद्र के घर ख़ाना नं० 4 में और सूरज मुकाबले पर शनि के अपने घर ख़ाना नं० 10 में निहायत पुरदर्द मौत होगी।

44 **शुक्कर सूरज** - दोनों मिले-जुले बाद के घरों में और वृहस्पति इनसे पहले घरों में देखता हो। शुक्र दोनों ही सूर्य वृहस्पति के उत्तम प्रभाव का होगा। हालांकि वह दोनों अकेले-अकेले का दुश्मन है।

45 शुक्कर देखता हो सूर्य को ख़ास कर जब शुक्र ही नं० 1 सूर्य नं० 7 हो तो निहायत बुरा प्रभाव सम्बन्धित सेहत व जिस्म होगा। तपदिक़ आदि।

46 **शुक्कर बुध** – दोनों ग्रह मिला–जुला या बाहम इक्ट्ठे हो रहे हों बलिहाज़ दृष्टि मगर सूर्य का सम्बन्ध न हो तो दोनों का उत्तम प्रभाव खास कर बुध का बहुत उत्तम या मस्नूई सूर्य होगा।

47 शुक्कर मंगल – दोनों मिले–जुले वृहस्पति के पक्के घर (ख़ाना नं० 2) में तो ससुराल ख़ानदान से मीठी खाण्ड की तरह का उम्दा प्रभाव व दौलत का फ़ायदा होवे।

48 बुध अकेला – वृहस्पति के पक्के घर ख़ाना नं० 2 में या अपनी ऊंच राशि के फल के ख़ाना नं० 6 में अकेला मगर हर दो हालत में दृष्टि के सब घर ख़ाली और बुध हर तरह से अकेला ही तो बुध का अपना असर उत्तम और ''राजयोग'' होगा।

49 बुध सूरज – ( ) बुध जब सूर्य को या सूर्य बुध को देखता तो या दोनों बुध के पक्के घर ख़ाना (नं० 7) या दोनों साथी ग्रह या दोनों सूर्य के ऊंच घर (ख़ाना नं० 1) में हो तो उम्दा प्रभाव होगा।

( ) दोनों वृहस्पति के पक्के घर (ख़ाना नं० 2) में मिले–जुले या इक्ट्ठे हो रहे हों यानी सूर्य नं० 8 और बुध 2 में (असर जिस्मानी, दिमाग़ी उम्दा मगर माली हल्का)

बुध शनि – ( ) दोनों मिले–जुले या दोनों बाहम दृष्टि से मिल रहे हों या साथी ग्रह हो जावें तो परिन्दा होता हुआ उड़ने वाला बाज़ की नज़र व ताक़त का और सांप होता हुआ उड़ने वाला सांप हर दो हालत में कुण्डली वाले के लिए उम्दा असर के।

( ) दोनों मिले–जुले या ऊपर की हालत में होने पर चंद्र का साथ हो जावे या दोनों मिले–जुले ख़ाना नं० 4 चंद्र के पक्के घर में ही हो जावें तो दोनों दूसरों के लिए ख़ूनी होगें और साथ ही कुण्डली वाले के लिए चंद्र का फल मन्दा होगा।

50 ( ) ऊपर की शर्त मज़्कूर : नं० ( ) यानी चंद्र का साथ या चंद्र का प्रभाव बज़रिया दृष्टि साथ होते हुए दोनों बुध के पक्के घर सूरज की ऊंच फल की राश या पक्का घर (ख़ाना नं० 1) या शनि के पक्के घर (ख़ाना नं० 10) या वृहस्पति के पक्के घर (ख़ाना नं० 2) में हों तो दोनों का नेक असर होगा। अपने पक्के घर का बुध (ख़ाना नं० 7 का) कभी भी किसी दूसरे साथी ग्रह दृष्टि के असर से मिलने वाले का या मिले–जुले ही साथ होने वाले का चाहे दोस्त हो चाहे दुश्मन बुरा प्रभाव न होने देगा।

51 मंगल नेक वृहस्पति – दोनों किसी तरह से भी वृहस्पति के पक्के घर ख़ाना नं० 2 इक्ट्ठे हो रहे हों तो औरत ख़ानदान या ससुराल का सम्बन्ध होगा। लेकिन ख़ाना नं० 8 में इन दोनों के इक्ट्ठा होने से (दृष्टि आदि या मिले–जुले ही) कुण्डली वाले के अपने ही ख़ानदान वालों के हालत पर प्रभाव होगा।

52 मंगल बद व सूर्य – अकेले मंगल को सूर्य का सम्बन्ध मंगल नेक करता है। लेकिन मंगल बद (विस्तारपूर्वक

जुदी जगह लिखा है कि किन-किन हालतों में मंगल को मंगल बद लेंगे) को सूर्य की मदद या मंगल बद से सूर्य का ताल्लुक मन्दे हाल और करीबी रिश्तेदारों की मौतें आदि होगा।

53 दो ग्रह मिले-जुले चाहे वह बाहम दोस्त हों या दुश्मन

बंद मुट्ठी के अन्दर के ग्रह हवाला अरमान नं० 1 (सूर्य वृहस्पति मंगल शनि) मय बुध अपने पक्के घर का हवाला अरमान नं० 50 में से कोई ख़ाना नं० 1-7-4-10 (बंद मुट्ठी के ख़ाने) और ख़ाना नं० 2 (गुरुद्वारा धर्म मंदिर के अन्दर) जानों पर (यानी सम्बन्धित आयु) कभी बुरा असर न देंगे। जब तक के स्त्री ग्रहों (चंद्र शुक्र) का सम्बन्ध या साथ न हो जावे। स्त्री ग्रहों के साथ या सम्बन्ध हो जाने पर शनि का असर (अगर शनि शामिल हो) अपने एजेंट राहु केतु का बुरा असर देगा। क्योंकि राहु-केतु को शनि की बुनियाद गिना जाता है।

54 तीसरे घर का असर - कुण्डली के ख़ानों में पहले व तीसरे या हर तीसरे घर (दोनों के दरमियान सिर्फ़ एक ख़ाना नं० छोड़ कर मसलन 1-3-5-7 में पहला व तीसरा, तीसरा व पांचवा, पांचवा व सातवां) का असर कभी पहले घर में नहीं आ सकता। पहले व तीसरे को इस तीसरे घर की शर्त में लेंगे। पहले व पांचवें को इस तीसरे घर की शर्त में न लेंगे। लेकिन अगर बुध की नाली के वक़्त (जिसका मुफ़स्सल जिक्र बुध में है) तीसरे घर का असर पहले घर में आ जावे तो ऐसी हालत में पहला घर ख़राब असर का या गला सड़ा हुआ या पहले घर के ग्रहों का असर बुरा ही लेंगे। चाहे वह सब मिलने वाले ग्रह बाहम या बुध या शुक्र या दोनों के दोस्त या दुश्मन भी हों। बुध की नाली के समय पहले घर के ग्रहों का असर तीसरे घर के ग्रहों में भी मिल सकता है। ऐसी हालत में तीसरे में इक्ट्ठे होने वाले ग्रहों का मन्दा ही असर न लेंगे। हो सकता है कि वह मौके के अनुसार नेक फल के होवें। तीसरा रलया ते घर गलया (तीसरा घर मिला तो पहला बरबाद या ख़राब हुआ) मगर पहला रलया तो तीसरा गलया न लेंगे।

55 55 जो नम्बर 16 से मिला है - पहले घरों का असर बाद के घरों में मिलने का नतीजा ये होगा कि जब तक पीछे से बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बन्द न हो जावे या पहले घरों के बुरे ग्रह की मियाद तक बाद के घरों के ग्रहों का नेक असर न होगा। यही उसूल ख़ाना नं० 8 के ग्रहों का नं० 2 के ग्रहों के लिए होगा। लेकिन अगर ख़ाना नं० 8 में सूरज वृहस्पति या चंद्र में से कोई भी अकेला-अकेला या कोई दो या तीनों मिले-जुले बैठ जावें तो ख़ाना नं० 8 ने आगे को ख़ाना नं० 12 को और न ही पीछे को ख़ाना नं० 2 को देखेगा। बल्कि ख़ाना नं० 8 का ऐसा असर केवल ख़ाना नं० 8 में ही बन्द हुआ ही गिना जायेगा। गोया मौत के घर को (सूर्य वृहस्पति चंद्र मिला-जुला) योगी जंगी जीत लेगा।

56 दो से ज़्यादा ग्रह मिला-जुला :- (लाल किताब पेज नं० 266 नोट के नीचे जुज़ 9 से सम्बन्धित अरमान नं० 159 का नोट) जब दो से ज़्यादा ग्रह एक ही घर में (दृष्टि से मिले हुए दो से ज़्यादा से मुराद नहीं बल्कि एक ही घर में मिला-जुला और दो से ज़्यादा) बैठ जावें तो वह अपनी दृष्टि के ज़रिये अपना असर अपने बैठे हुए

घर के बाहर किसी दूसरे घर पर नहीं कर सकते जब तक कि उस घर में जहां कि इन की दृष्टि हो सकती है कोई और ग्रह न बैठा होवे अगर इनकी दृष्टि पहुंचने के घर का ग्रह (अगर बहुत ग्रह हों तो एक को अलग-अलग गिन कर देखेंगे) उन ग्रहों का दोस्त ग्रह हो (किसी एक का या सब का ही) तो बाद के घर का ग्रह जो उनका दोस्त है स्वयं ख़राब न होगा। यानी इसका असर अपना ख़राब न होगा। बल्कि बाद के धर की चीज़ों पर उन पहले घर के मिले हुए ग्रहों का असर उस बाद के धर में अच्छा या बुरा जैसा भी होगा। यानी वह ग्रह उन ग्रहों की रोशनी को ख़ाली नाली की तरह उस घर में आ जाने देगा। लेकिन अगर वह ग्रह इनका दुश्मन हो तो वह स्वयं भी बरबाद होगा और उन ग्रहों के असर को अपने बैठने वाले घर की चीज़ों पर न फैलने देगा (दो से ज्यादा ग्रहों का उस घर के अन्दर-अन्दर का बाहमी सम्बन्धित दूसरी जगह दर्ज है अरमान नं० 159 के आख़िर नोट में)

57 बाप बेटे का मिला-जुला भाग्य- दोनों के भाग्य का अलग-अलग असर 100 फ़ीसदी दृष्टि से मिला हुआ असर गिना जाता है। दोनों के वर्ष फल के हिसाब से तख़्त के मालिक ग्रहों से जो ग्रह (वृहस्पति के बाद सूर्य के बाद चंद्र के बाद शुक्र के बाद मंगल आदि) असर की तरतीब से पहली तरफ़ का हो वह दोनों मिले-जुले भाग्य का असर लेने के समय अब तख़्त का मालिक ग्रह और ग्रह फल का होगा। दोनों की अलग-अलग आयु के सालों के हिसाब से राशि नं० के बोलने के ग्रहों को अलग-अलग दोनों के लिए राशि फल के लेंगे। यानी दोनों की मिला-जुला भाग्य का हाल देखने के लिए तख़्त का मालिक ग्रह तो दोनों के लिए एक ही ऊपर के ढंग से लिया हुआ होगा। मगर उम्र के लिहाज़ से राशि नं० के बोलने वाले ग्रह दोनों के अपने-अपने और अलग-अलग होंगे। ऐसा मिला-जुला भाग्य की तबदीली की साल जो हर शख़्स के लिए अकेले के हाल के लिए गिना जाता है - लाल किताब पेज नं० 25 पर बाप-बेटे की औसत भाग्य के लिए दिये हुए नक्शे के अनुसार होगा। यानी बेटे की एक साल आयु बाप की 70 वर्ष आयु पर असर करेगी। और बेटे की 7 वर्ष की आयु के भाग्य का असर बाप की 63 वर्ष आयु के भाग्य पर असर देगा। ऊपर का असर देखने के लिए दोनों के ग्रहों का बालिग़ या नाबालिग़ होने का तरीका जो अलग-अलग है भूल न जावें ऊपर का उसूल दोनों के बालिग़ होने की हालत का है। दोनों में से ग्रह चाल में (आयु के लिहाज़ से नहीं) जो नाबालिग़ होवे उसका हाल छोड़ ही देंगे और बालिग़ ग्रहों वाले का आम अकेले आदमी का हाल देखने के उसूल पर देख लें। अब बालिग़ ग्रहों वाले की क़िस्मत का असर नाबालिग़ ग्रहों वाले की किस्मत पर प्रबल होगा।

58 (यह अरमान दरअसल अरमान नं० 97 व 98 का जुज़ है)

अंगूठा - राहू केतु मिले-जुले का मस्नूई शुक्र (दुनियावी मुहब्बत का सम्बन्धित) लाल किताब पेज नं० 31 की जुज़ (अंगूठे की पोरियां)

(अलिफ़) नाख़ून वाली पोरी ..... केतु से सम्बन्धित (बे) बचपन फैलना मर्ज़ी दरमियानी नाख़ून वाली

पोरी... राहु से सम्बन्धित जवानी सिकुड़ना–दलील निचली पोरी– नाख़ून वाली पोरी..... शुक्र पक्का ग्रह.... बुढ़ापा–टूट–फूट कर रेत

(बुध का पैदा हो जाना) इश्क़

अंगूठे की नाखून वाली पोरी केतु का घर ख़ाना नं० 6

(सीन) (मोटा हिस्सा) केतु होवे दुश्मन ग्रहों की राशि में ..... विस्तारपूर्वक देगा ग़रीब करेगा।

(छोटा हिस्सा) केतु होवे दुश्मनों के साथ या उनके पक्के घरों में वहशी हैवानी ताक़त–कम–दौलत।

(बाहर को झुकाओ) – दुश्मनों के ख़ाना नं० 12 में ..... रिश्तेदारों को तारे।

(सीधा रहे) – दुश्मनों के ख़ाना नं० 6 में ..... अपने दुश्मनों को मारे।

9 में ..... वाल्दैन को तारे यानी नेक असर देवे।

(अन्दर को झुके) दुश्मनों के ख़ाना नं० 3 में ..... भाईयों से तंग करावे।

दरमियानी गांठ राहु का घर ख़ाना नं० 12

राहु – राहु का गृहस्त से सम्बन्धित नहीं। फ़र्जी सोच–विचार अपने ही आप पर या दुश्मनों पर छुपा–छुपाया असर–रूहानी ख़ासियतें और उनका या उन पर असर जिस्मानी या बदनी असर न होगा।

पिछली पोरी राहु केतु मिले–जुले का ख़ाना नं० 2 दोनों की बैठक

जिस कदर ख़ाना नं० 8 में राहु केतु मिले–जुले के उनके अपने दुश्मन ग्रहों का ज़ोर बढ़ता जावे इसी क़दर ही ऐसा शख़्स ज़नमुरीदी और जादू मन्तर की ख़ासियतों की तरफ़ बढ़ने वाला होवे।

अंगूठे की पोरियों पर जौ के निशान को चन्द्र का निशान माना गया है।

अंगूठे की ( ) नाख़ून वाली पोरी की जड़ पर हो जौ का निशान यानी चंद्र होवे केतु के घर की जड़ पर यानी ख़ाना नं० 6 को ख़ाना नं० 2 से देखता हो (मगर केतु के साथ नहीं अकेला चन्द्र) तो बचपन का ज़माना चन्द्र की ठंडी और साफ़ रोशनी की तरह उम्दा असर का होगा। जन्म भी उसका चानन पक्ष का होगा।

( ) अंगूठे की दरमियानी पोरी की जड़ पर हो जौ का निशान यानी चन्द्र होवे राहु के घर ख़ाना नं० 12 की जड़ या ख़ाना नं० 6 में (मगर राहु के साथ नहीं सिर्फ़ अकेला ही चन्द्र वहां हो) तो जवानी का ज़माना उम्दा असर का होगा। जन्म उसका अमावस का होगा।

( ) अंगूठे की निचली पोरी की जड़ पर हो जौ का निशान यानी चंद्र होवे राहु केतु दोनों के मिले–जुले काम करने के मैदान यानी ख़ाना नम्बर 8 की जड़ ख़ाना नम्बर 4 नाभी (अरमान नम्बर 59) में (मगर दोनों ग्रहों का

साथ न हो वहां ख़ाना नम्बर 4 में और सिर्फ़ चंद्र अकेला ही ख़ाना नम्बर 4 में हो) तो उस शख़्त की उम्र लम्बी और बुढ़ापा उम्दा असर का होगा। और उसका जन्म शुक्ल पक्ष का होगा।

(1) राहु केतु मिले जुले – हवाई ताक़तों (बेजान चीज़ों पर) के कारोबार करने के मैदान ख़ाना नम्बर 2 को मस्नूई मानते हैं। मगर राहु केतु मय शनि मिले जुले या तीनों के इकट्ठे सांस (जानदार चीज़ों पर) के काम करने के मैदान ख़ाना नम्बर 8 को मस्नूई शुक्र का मैदान नहीं मान लेते। राहु–केतु सिर्फ़ दोनो के लिए ख़ाना नम्बर 2 अंगूठे की निचली पोरी पर उनका बैठकख़ाना है।

शनि का हेडकवार्टर शनि के साथ या तीनों का बैठक ख़ाना नम्बर 8 माना गया है। ख़ाना नम्बर 8 में वृहस्पति या सूरज या चंद्र की हालत का असर जुदा दर्ज हैं।

(2) हर एक पोरी की जड़ पर चंद्र का असर सिर्फ़ उम्र के एक ही हिस्से में ज़िक्र किया हैँ। हर पोरी के लिए उम्र के बाक़ी दो हिस्सों के ऊपर लिखे हुए हाल के लिए सूरज का सम्बन्ध देखकर फैसला करें।

अरमान नम्बर 59

कुण्डली व दिमाग़ का सम्बन्ध

ग्रह अकेले–अकेले या मुश्तरका हो कर जो हाल मनुष्य की दिमाग़ी हालत का कर सकते हैं हू–ब–हू वही हालत इंसानी क़िस्मत की वह ग्रह कुण्डली में करेंगें। या जो हालत ग्रहों के हिसाब से इसकी भाग्य की होगी। वही हालत इसके दिमाग़ की होगी।

दिमाग़ के ख़ाने

कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताक़त	कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताकत
1	1	शुक्र (गृहस्ती) शनि से मुश्तरका। शुक्र का पतंग इश्क़ (जवानी) 16–36 वर्षीय उम्र तक	1	1	शनि इश्क़ ज़वानी शुक्र से मिला–जुला चारों तरफ़ की स्वयंगर्जी हमदर्दी
2	2	वृहस्पति से मिला–जुला की ख़्वाहिश–इश्क़ के बाद का ग़लब–बूढ़ी औरत–100 जूहे खा के बिल्ली हज को जावे। 37 ता 70/72 वर्षीय आयु तक	2	7	शुक्र से मिला–जुला ज़िन्दगी बढ़ने
3	3	मंगल से मिला–जुला इश्क से पहली उल्फ़त–वालदैनी–मुहब्बत, 1 ता 15 वर्षीय उम्र तक।	3	10	बुध से मिला–जुला जायका

कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताक़त	कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताकत
4	4	चंद्र से मिला-जुला दोस्ती-मुलाक़ात-उल्फ़त-इश्क और गलबा इश्क का मजमुआ।	4	4	चंद्र से मिला-जुला-दोस्ती मुलाकात उल्फ़त-इश्क़ और गलबा इश्क के मिला-जुला मज्मुआ का असर
5	5	वृहस्पति से मिला-जुला वतन की मुहब्बत।	5	15	वृहस्पति से मिला-जुला-खुद्दारी
6	6	केतु से मिला-जुला दिलचस्पी पक्की मुहब्बत-औलाद नर का फल नदारद होगा।	6 7	16 7	केतु से मिला-जुला स्वावलम्बन शुक्र से मिला-जुला-ज़िन्दगी बढ़ने की ख्वाहिश (उरूज उम्र लम्बी नहीं)
7	7	बुध से मिला-जुला-जिन्दगी बढ़ने की ताकत (उरूज उम्र नहीं)	8	14	मंगल बद से मुश्तरका तक़ब्बुर या स्वयं पंसन्दी
		मंगल (बुज़ुर्गाना)	9	9	जाति बदला लेने की शक्ति
1	8	सूरज से मिला-जुला-हमले रोकने की हिम्मत	10 11	13 11	जाती होशियारी की शक्ति जाती-ज़खीरा जमा करने की शक्ति
3	17	वृहस्पति का मिला-जुला अदल-मुन्सिफ मिज़ाजी	12	12	राहु से मिला-जुला -राज़दारी
8	14	शनि से मिला-जुला तक़ब्बुर या स्वयंपसन्दी	4	4	मंगल बद मंगलीक-मुहब्बत के तीनों हिस्सों को तबाह करने वाला गृहस्त खराब हर तरह की तबाही।
		वृहस्पति (शरीफाना)			वृहस्पति जारी
2	2	शुक्र से मिला-जुला-शादी की ख़्वाहिश - इश्क़ के बाद का	11	35	चंद्र से मिला-जुला-वाक़िआत गुज़रते हुए की याद
		का ग़लबा-गुरु घण्टाल-100 चूहे खाकर बिल्ली हज	12	12	राहु से मुश्तरका-राज़दारी सूरज (दिमाग़ी)
		को चली 37 ता 70/72 वर्षीय उम्र तक	5	20	वृहस्पति से मिला-जुला-इज्जत बुजुगों जाती अक़्ल
			6	23	केतु से मिला-जुला -पसंदीदी
3	17	मंगल से मिला-जुला- अंदल	7	24	बुध से मिला-जुला हौसला।
		या मुन्सिफ़ मिज़ाजी	8	25	पापी ग्रहों से मिला-जुला नक़्ल करने
4	21	चंद्र से मिला-जुला हमदर्दी या रहम मिज़ाजी			की ताकत-बहुरूपियापन का सूर्य-झगड़ा फ़साद

कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताक़त	कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताकत
5	20	सूर्य से मिला-जुला - इज्जत इज़्जत या बुजुर्गी-लीद में माणिक पत्थर में मोती की ताकत	9	26	बृहस्पति से मिला-जुला-मसखरगी बुध से मुश्तरका-हद से ज़्यादा मसख़रगी-बेवकूफी-बहुत ही भोलापन-बुद्धु।
6	18	बुध से मिला-जुला फोकी उम्मीद बाईसे -तबाही गणेश जी गरुड की सवारी			चंद्र (दैवी या महसूस करने का)
			3	27	मंगल से मिला-जुला-गौर-ओ-ख़ोस्त की ताकत
			4	28	(जाती) पुरानी यादाश्त
		केतु से मिला-जुला भरोसा सिर्फ़ फोकी उम्मीद नहीं कुछ हौंसला की उम्मीद या आस होगी। गणेश जी चूहे की सवारी	5	29	सूर्य से मिला-जुला कद व कामत व औसत तनासब की ताकत चिड़ियों से बाज़ लड़ाने की ताकत
			6	30	केतु से मुश्तरका-दबाब-बोझ मुसावीपन की ताकत यानी जैसा मुंह वैसी चपेड़ अच्छे से अच्छा बुरे से बुरा
9	19	ज़ाती-मजहब या रुहानी चंद्र जारी	7	31	शुक्र से मिला-जुला रंग रूप में फर्क दुध से दही और दोनों की शकल और रंग में फ़र्क का मालिक यानी अगर बुध माता खानदान को उजाड़े तो चंद्र पिता के ख़ानदान को मारे।
1	37	शनि से मिला-जुला- राग			
2	38	वृहस्पति से मिला-जुला जबानदानी।	8	32	शनि से मिला-जुला-सफाई-शाइस्त़गी धुलापन-ज़ाहिरा मानसरोवर तो अन्दर से कपट की कान।
3	39	मंगल से मुश्तरका-वजह सबब दरयाफ़्त करने की ताकत	9	33	बुध से मिला-जुला-इल्म रियाजी में उसूल
			10	34	मंगल बद से मिला-जुला-जगह मुकाम की याद-पूरा धोकेबाज़ और तैरते को डुबा लेने वाला।
4	40	सूर्य से मिला-जुला मुकाबिला एक चीज़ का दूसरी से			
5	41	सूर्य से मिला-जुला इन्सानी ख़सलत	11	35	वृहस्पति से मिला-जुला पेशानी वाकियात गुज़रते हुए की याद
6	42	ज़ाती-रज़ामन्दी ख़रबूजे को देख कर ख़रबूज़ा रंग बदलने वाली हिम्मत	12	36	राहु से मिला-जुला समय गुज़रे मर्द पछताए( ) आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना ( ) कभी हम भी बाइक़बाल थे ( ) पिदरम सुल्तान बोद।

राहु-केतु - को कोई पक्की जगह नहीं दी गयी लहरों के मालिक हैं। एक ने इन्सान को सिर से पकड़ा दूसरे ने पावों से तो स्वयं-ब-स्वयं ही इन को जगह मिल गयी।

चंद्र का घर व चंद्र

नाभि - दिमाग़ के ख़ानों में राहु या केतु को अलग जगह नहीं मिली हथेली पर भी ये नहीं गिने थे। और बाहर कलाई पर माने थे। कुण्डली में भी जुदी जुदी जगह न पा सके थे। तमाम जिस्म की दरमियानी जगह नाभि (धुनी) को मंगल माना है। नाभि से ऊपर सर की तरफ़ का हिस्सा राहु की राजधानी और नाभि से नीचे पांव की तरफ़ का हिस्सा केतु की राजधानी माना गया है। लाल किताब के पेज नं० 201 दोनों पार्टियां मंगल की नाभि मंगल बद की जगह या मंगल का मुंह है। मंगल की दोनों राशियां नं० 1 8 को मिलाने वाली कुण्डली की नाभि ख़ाना नं० 4 निश्चित है जो राशियों के हिसाब से और ग्रहों के पक्के घरों के लिहाज़ से सिर्फ़ चंद्र को ही दे दिया गया हैँ। चंद्र कभी ग्रह फल का नहीं माना गया हमेशा ही राशि फल का होता है। और ख़ाना नं० 4 शनि के जाती असर के घर ख़ाना नम्बर 10 का सेहन या मैदान गिना है जिस में शनि का फ़ैसला यानी के वह (शनि) कुण्डली में जैसा भी होवे होगा। सब से आख़री फ़ैसला वृहस्पति का होगा। यानी कुण्डली में वृहस्पति जिस हैसियत का होगा वैसा ही ख़ाना नं० 4 का आख़िरी फ़ैसला होगा। इस घर से चंद्र का सम्बन्ध जुदी जगह लिखा है (यानि चंद्र के ख़राब होने पर इस का अपना घर ही चंद्र की दयालुता मेहरबानी की पूरी ताक़त का होता है। कुण्डली में मौत के ख़ाना नं० 8 का भेद का रास्ता चंद्र का दैवी ताक़त का चंद्रमा ख़ाना नं० 4 या कुण्डली की नाभि का सम्बन्ध मौत से होने या करने वाले रास्ते में राहु केतु का असर नहीं माना गया। चंद्र के पानी की नदियां कुदरत के अक्स को दिमाग़ के रास्ते हाथ की हथेली की रेखाओं से राशियों व ग्रहों के ज़रिये सब की दरमियानी जगह या जिस्म के दरमियानी निशान नाभि से जाहिर कर देते हैं। यही नाभि का रास्ता माता के पेट में बच्चे को खुराक देता रहता है। या कुण्डली में ख़ाना नं० 4 सब की मदद और दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति को ऊंच करता है। मौत ने सब को मारा मगर चंद्र ख़ाना नं० 8 में मौत को मार लेता है।

आँख :- अगर पेट के दरमियान से पेट के अन्दर का हाल बताने वाली चीज़ बताने वाली चीज़ नाभि को चंद्र का घर ख़ाना नं० 4 माना गया तो चेहरे पर ऐसी ताक़त वाली चीज़ औख को भी ख़ाना नम्बर 4 माना है। जो ख़ाना नं० 10 शनि के घर को देखता है। शनि का ख़ाना नं० 10 कनपटी (पुड़पुड़ी) माना है। पापी ग्रहों की जगह हलक़ का कौआ व तालु है। मुफस्सल अरमान नं० 180 चार ग्रह मिले जुले में लिखा है।

दो लफ़्ज़ों में

ख़ाना नम्बर 4 हालात दैवी और ख़ाना नं० 2 इस दुनिया की बैरूनी हालत को ज़ाहिर कर देते है।

अरमान नम्बर 60

ग्रहों की आम मियाद के वर्षों का महमूआ 35 वर्ष होता है। ये 35 वर्षीय मियाद 35 वर्षीय चक्कर कहलाता है। ग्रहों का 35 वर्षीय चक्कर और उम्र का 35 वर्षीय चक्कर (या मनुष्य का 35 वर्षीय चक्कर) दो अलग-अलग बातें हैं। फर्ज़न एक मनुष्य के जन्म दिन से ही वृहस्पति का दौरा शुरू हुआ। बाक़ी ग्रह एक के बाद दूसरा यानी वृहस्पत (6 वर्ष) सूर्य (2 वर्ष) चंद्र (1 वर्ष) शुक्कर (3 वर्ष) मंगल (6 वर्ष) बुध (2 वर्ष) शनि (6 वर्ष) राहु (6 वर्ष) केतु (3 वर्ष) कुल 35 वर्ष का दौरा तमाम ग्रहों ने इसकी 35 वर्ष उम्र तक ही पूरा कर दिया। लेकिन हो सकता है कि इसका पहला ग्रह वृहस्पत की बजाए शनि शुक्र होवे और जन्म दिन की बजाएं सातवें साल शुरू हों। अब तमाम ग्रह तो 35 साल में ही दौरा पूरा कर लेंगे। जब आख़री ग्रह का आख़री दिन होगा इस समय मनुष्य को उम्र 35 वर्ष ग्रहों का दौरा जमा 6 वर्ष जब अभी शनि या उम्र का पहला ग्रह शुरू भी न हुआ था यानि कुल उम्र 41 वर्ष हो चुकी होगी। जो 35 वर्ष के हिसाब से मनुष्य का दूसरा 35 वर्ष दौरा होगा। अब जिस दिन से ग्रहों का दूसरा दौरा शुरू हुआ यानि जिस दिन जन्म दिन से शुरू होने वाला ग्रह दूसरी दफ़ा शुरू हुआ उस दिन से जिन ग्रहों ने पहले बुरा असर दिय था वह अब अपनी दूसरी चाल में बुरा असर न देंगे। यह ज़रूरी नहीं के वह बुरा फल देने वाला अच्छा फल ही देवे मगर अब बुरा फल न देगा।

तोते की 35 - (बुध के ग्रह का भेद) तोते की 35 के कुण्डली के ख़ानों का गौर से मिलाख़त करें तो ..... कुण्डली का ख़ाना नं० 9 कहीं नहीं मिलेगा। बुध का यह ख़ाना नं० 9 वह स्वयं ख़ाना नं० 9 एक अजीब हालत का है। जिसका ज़िक्र जुदी जगह दर्ज है। यही ख़ाना नं० 9 एक चीज़ है जो मनुष्य व शैतान में अन्तर कर देता है और तमाम ग्रहों की बुनियाद हैँ। या दोनों ज़हान की हवा वृहस्पति असल है। इस 35 के 11 ख़ाने दरअसल बुध के 12 ख़ानों की हालत बताते है। यानी ख़ाना नं० 10 के बुध को शनि 2 के बुध को वृहस्पति आदि जिस तरह के इस तोते की 35 की कुण्डली में लिखे हैं लेगें। यानी असर के लिए बुध के अपने असर की बजाए दिए हुए ग्रहों की हालत का असर लेंगे।

अरमान नम्बर 61

सिर - (दिमाग़ी ताकतें राहु की-ढ़ांचा बुध का) कुण्डली का ख़ाना नं० 12

माथा - कुण्डली का ख़ाना नं० 2 (हवाई ख़याल में तमाम ताक़तों का राहु केतु की बैठक का मैदान मस्नूई शुक्र की जगह)

चेहरा - (आकरार बुध का चेहरे की पसन्दीदगी-ख़ूबसूरती केतु) ख़ाना नं० 6 यानी चेहरा ख़ाना नं० 6 और सिर ख़ाना नं० 12 दोनों का दरमियानी माथा ख़ाना नम्बर 2 होगा।

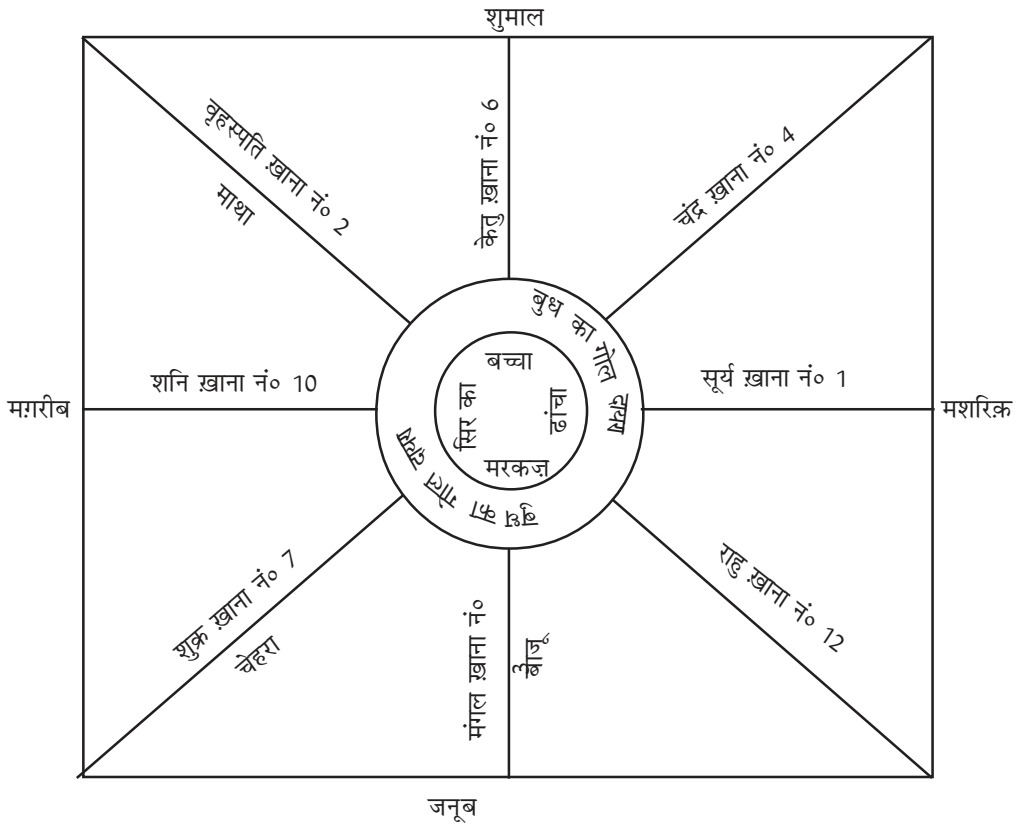

ख़ाना नं० 5 ..... भविष्यत्काल ख़ाना नं० 9 ..... माज़ी 11..... दुनिया का अन्दर 8 ..... दुनिया से बाहर

चौड़ाई - केतु की ताक़त लम्बाई-वृहस्पति की ताक़त (सूरज-शनि दोनों का मालिक गुरू)

गोलाई - बाहर को उभार बुलन्दी- बुध की ताक़त

पिस्ती-गहराई-नीचे-अन्दर को दुनिया - राहु की ताक़त ऊपर की ताक़तों का घटना बढ़ना ग्रहों की दृष्टि के दरजे की ताक़त के घटते या बढ़ने से मुराद होगी।

100 फ़ीसदी दृष्टि की हालत में दो ग्रह एक दूसरे के ज़्यादा नज़दीक या एक ही हो जाते या मिल जाते है।

50 फ़ीसदी- पर इन का दरमियानी फ़ासला निस्फ़ रह जाता है। या दोनों की ताकतें आधी आधी बाहम मिल जाती है।

25 फ़ीसदी पर सिर्फ़ एक चौथाई मिलते है। यानी तीन चौथाई वह एक दूसरे से दूर रह जाते हैं।

(लाल किताब पेज नं० 43) ख़ाना नं० 2 को पेशानी माना है पेशानी पर तिलक लगाने की जगह (दोनों भवों

का दरमियान व नाक का आख़िरी हिस्से का मरकज़) असल पेशानी या ख़ाना नं० 2 की असली जगह है। इस तिलक के निशान की जगह को छोड़ कर बाक़ी तमाम पेशानी की ख़ाना 2 का बाक़ी मैदान है। इस बाक़ी मैदान क्में राहु-केतु की बैठक या ख़ाना नं० 8 का असर भी आना माना है। ख़ाना नं० 2 का यह मैदान ख़ाना नं० 6 को भी देखता है। खुलास्तन तिलक की ख़ास जगह (वृहस्पति का ख़ाना नं० 2) राहु-केतु मिले जुलेकी बैठक की जगह (मस्लूई शुक्र की राशि भी है) का दरवाज़ा है। दूसरे लफ़्ज़ों में ख़ाना नं० 8 को राहु-केतु की शनि के साथ होने की बैठक गिनें तो इस बैठक या यमों के दिवानख़ाना का दरवाज़ा ख़ाना नं० 2 राहु केतु दोनों की मिले जुले (मगर शनि की बहैसियत मौत का मय) बैठक होगी। जिस में शनि की मौत का सम्बन्ध न होगा।

सिर्फ़ राहु-केतु की अपनी नेकी-बदी का मैदान गुरूद्वारा-मंदिर होगा। इस ध्रम स्थान का दरवाज़ा दोनों भवों की ऐन दरमियानी जगह होंगी। जिसका मालिक वृहस्पति है। जो दोनों जहानों का मालिक है जिसके रास्ते की लम्बाई के दोनों सिरों पर सूरज और शनि (दिन-रात) गिनते हैं। यानी दुनिया से बाहर खाना नं० 8 और दुनिया का अन्दर ख़ाना नं० 11 के साथ वृहस्पत की दूसरी ताक़त ख़ाना नम्बर 5 भविष्यत्काल और ख़ाना नं० 9 माज़ी का दरमियान ज़माना हाल (या बंद मुट्ठी के ख़ाने 1-7-4-10) होगा। थोड़े लफ़्ज़ों में जिस तरह ख़ाना नं० 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी इसी तरह ही ख़ाना नं० 2 ने कुल दुनिया से सम्बन्ध न छोड़ा अगर नाभी तमाम जिस्म का दरमियान था और बंद मुट्ठी के ख़ानों में ख़ाना नं० 4 बच्चे के साथ लाये हुए ख़जाने का भेदी ख़ाना नं० 2 हुआ। इन दोनों ख़ानों, यानी ख़ाना नम्बर 4 और नं० 2 का मिले जुले असर क़िस्मत का करिश्मा हुआ जो ग्रह फल व राशि फल दोनों का लुब्बे लुबाब भी कहा जा सकता है।

ख़ाना नं० 4 बढ़ाता है चंद्र को - ख़ाना नं० 2 बढ़ाता है वृहस्पति को दोनों मिले मिलाये (माता-पिता) वाल्दैन या अकेला वृहस्पति जो दोनों जहानों का मालिक है, होगा, जो बच्चे को मदद देने के लिए ख़ाना नं० 5 में सूरज के साथ और ख़ाना नं० 22 में शनि के साथ जा मिलता है। वृहस्पति की इस लम्बाई को सब की लम्बाई गिनते हैं। चाहे चेहरे की कहो चाहे माथा की।

लाल किताब पेज नं० 43 की जुज़ नं० (1) चेहरे की चौड़ाई: ख़ाना नम्बर 6 के केतु से या ख़ाना नं० 6 से जिस त्रह वृहस्पत का साथ होवे उसी क़दर चेहरा लम्बा होगा। जिस क़दर कम असर या सम्बन्ध वृहस्पति का ख़ाना नं० 6 से होवे उसी तरह चेहरा चौड़ा होगा। जिस तरह चेहरे की लम्बाई की लम्बाई ज़्यादा उसी क़दर नेक असर ज़्यादा होवे। साथ लायी हुई जाती क़िस्मत का (पेज नं० 43 की जुज़ 3) पेशानी की चौड़ाई :- ख़ाना नं० 2 से जिस तरह केतु का साथ होवे उसी तरह माथा चोड़ी हागी। जिस तरह कम असर या सम्बन्ध केतु का ख़ाना केतु का ख़ाना नं० 2 से होवे उसी तरह माथा लम्बी होगी।

जिस तरह माथा की चौड़ाई बढ़े उसी क़दर नेक असर ज़्यादा होवे। तमाम सम्बधिंत दुया का संक्षिप्त केतु जब वृहस्पति के साथ वृहस्पति के घरों में हो तो माथा फैला हुआ होगी।

वृहस्पति- जब केतु के साथ या केतु के घरों में हो तो चेहरा लम्बा होगा।

जब इकट्ठे ही दोनों (वृहस्पति व केतु) ख़ाना नं० 2 में हो लम्बा चेहरा, फैला माथा (हमदर्द व बुलन्द मरतबा) होगा। बशर्ते कि ख़ाना नं० 8 ख़ाली हो। लेकिन अगर दोनों ख़ाना नं० 6 में इकट्ठे हों और ख़ाना नं० 2 ख़ाली हो तो लम्बा चेहरा होगा।

लाल किताब (पेज नं० 43) जुज़ नं० (3) ख़ाना नं० 2 का असर ख़ाना नं० 6 के रास्ते ख़ाना नं० 12 में जने से माथे का ऊपर का हिस्सा मुराद होगी।

जुज़ नं० (4) ख़ाना नं० 8 का असर ख़ाना नं० 2 में जावें।

जुज़ नं०(5) ख़ाना नं० 8 का असर ख़ाना नं० 2 की मारफ़त ख़ाना नं० 6 में जावे।

जुज़ नं० (6) तिलक की जगह छोड़ कर माथा पर निशान-जब ख़ाना नम्बर 2 हर तरह से और हर तरफ़ से (ख़ाना नं० 8 की दृष्टि आदि) ख़ाली हो तो ख़ाना नं० 2 को तिलक की जगह गिनते हैं। ख़ाना नं० 2 में ग्रहों का असर मय ख़ाना नं० 8 के

जुज़ नं० (7) पेशानी पर कौवे के पांव का निशान-ख़ाना नम्बर 2 में ख़ाना नं० 8 के मन्दे ग्रहों का असर मंगल बद वग़ैरह का-

जुज़ नं० (8)पेशानी पर टूटी-फूटी लकीरें - ख़ाना नं० 2 में वृहस्पत या केतु के दुश्मन ग्रह लाल किताब पेज नं० 43 की जुज़ नं०(9) ख़ाना नं० 2 व ख़ाना नं० 6 का फ़ैसला ख़ाना नं० 8 को साथ लेकर होगा।

जुज़ नं० (10) पेशानी पर तिलक की जगह केतु का निशान-ख़ाना नं० 2 में हर तरह से अकेला केतु जुज़ नं० (11) चौड़े चेहरा में वृहस्पति के बजाए राहु के साथ शनि की ख़ुदगर्ज़ाना

ताक़तें (लाल किताब के पेज नं० 35 दिमाग़ के ख़ाने नं० 5 ता 12) होंगी।

लम्बा चेहरा वृहस्पति के साथ व सम्बन्ध से केतु में शनि की हमदर्दाना

ताक़तें (लाल किताब के पेज नं० 36 दिमाग़ के ख़ाने 13 ता 16) होंगी

जुज़ नं० (12 ता 15) मर्द के लिये पेशानी व चेहरा जिन-जिन हालतों में अच्छे गिने हैं। वही हालतें औरत के हाल के लिये उलट मायनों की होगी।

हालतें औरत के हाल के लिये उलट मायनों की होंगी।

जुज़ नं० (16) माथे पर सुर्ख़ नं० 2 में मंगल बुध या सूरज बुध हो माथे पर सब्ज़ रंग ख़ाना नं० 2 अकेला बुध या राहु वृहस्पति मिले जुले हों

चेहरा पर तमाम ग्रह

वृहस्पति – नाक व माथा

बुध – दांत–नाक का अगला सिरा गांठ

सूर्य – दायं आँख का डेला

शनि – बाल (भवों व पलकों के ख़ासकर)

चंद्र – बाएं आँख का डेला

राहु – ठोडी

शुक्र – रुख़्सारा

केतु– कान

मंगल –दोनों होंठ ऊपर का मंगल नेक और नीचे का मंगल बद

अरमान नं० 62/94 बजुज़ - 92

दुरुस्ती किताब में दर्ज किया गया है। और इल्म क़ियाफ़ : के ख़ास–ख़ास जुज़ दूसरे हिस्सों में मिलाए गए हैं।

''हर इन्सान किसी ग्रह का है (बरूए क़ियाफ़ः)''

वृहस्पति – के ग्रह के प्रबल होने का – इस मनुष्य का माथा चूहे के माथे की तरह तंग सा न होगा। न ही वह दमा की बीमारी वाला ना नाक कटा हुआ का होगा। उसका बोलना–चलना–बैठना आदि गुरु की तरह शाहाना–गम्भीर और नेक होगा। साथ की पहलीया तर्जनी लम्बी होगी। मगर कटी हुई या रद्दी हो चुकी न होगी। तबीयत में सुथरे (लापरवाह जिसमें किसी से भी मुहब्बत की बू न हो) की तरह का रूख़ापन न होगा। और न ही जानवरों की ज़िबह करने वाले कसाई की तबीयत का होगा। रंग जिस्म व चेहरा का सोने की तरह दमकने वाला होगा। मगर धक्के या धड़के की मर्ज़ वाले की तरह ज़र्द रंग हो चुका न होगा। आँखें मस्त शेर की तरह रौशन मगर डरावनी न होंगी। मन्दरजा जैल में से वृहस्पति की उत्तम निशानियां साथ होंगी।

रुहानी हाथ ..... लाल किताब पेज नं० 47 फरमान 67 जुज़ नं० 4

नाक ..... लाल किताब पेज नं० 112 ए व 112 बी

कद .....लाल किताब पेज नं० 69 फ़रमान 78

सूरज– के प्रबल ग्रह वाला अंग हीन (जिस्म का कोई अज़ू या हिस्सा कटे हुवे वाला) न होगा। इसका रंग गन्दुमी–आखें शेर नर की तरह रोशन मगर डरावनी न होंगी। कद उसका लम्बा–जिस्म पतला (इकहरा वाला मगर दुबला सा मरियल नहीं) हर तरह की मुसीबत बर्दाश्त करने वाला और मज़बूत होगा। लम्बा चेहरा कुशादा परेशानी वाला होगा। रफ्तार में दायां हिस्सा जिस्म का पहले चलाने वाला होगा। शक़्ल व शबाहत में ज़ाहिरा तो भोला–भाला सा होगा मगर अन्दर से दबी हुई आग की तरह गर्म होगा। चाल चलन (काम देव) का पूरा नेक होगा। शराब से दूर रहने वाला और शरारत का माक़ूल जवाब देने वाला होगा। हर बात में पहला हिस्सा लेने वाला होगा। मन्दरजा ज़ैल बातों का साथ होगा।

स्पाट हाथ ..... लाल किताब के पेज नं० 47 फ़रमान नं० 67 जुज़ नं० 1 चंद्र प्रबल वाला सफ़ेद रंग (दूध की झलक वाला दही के रंग की सफ़ेदी नहीं।) शान्ति सुभाओ चौड़ाई वाला चेहरा - चकोर या घोड़े की आँखों की तरह की आँखों वाला। दूसरे की बात में हां से हां मिला कर फिर उस दूसरे को नर्म सा जवाब दे कर और उसके दिल को मना कर अपनी तरफ कर लेने वाला लिबास में सफ़ेदी पसन्द। जिस्म का निचला हिस्सा (नाभि या साफ़ से नीचे पांव की तरफ का हिस्सा पले हुए हाथी की तरह भारी-भद्दा सा और बेडौल न होगा। मन्दरजा ज़ैल बातों का साथ होगा।

मुतफ़र्का हाथ ..... लाल किताब पेज नं० 48 फ़रमान नं० 67 जुज़ नं० 6

स्वयं दस्ती तहरीर ..... लाल किताब पेज नं० 71 फ़रमान नं० 83

अंग फरकना ..... लाल किताब पेज नं० 74 फ़रमान नं० 89

शुक्र - के प्रबल गह वाला रंग में सफ़ेद (दीह के सफ़ेद रंग की झलक दूध के सफ़ेद रंग की नहीं) चेहरा गोल-मोल सा खूबसूरत आँखें बैल की आँखों की तरह की मगर मस्ताना और आशिकाना ढंग की - रुख़्सारे बुलन्द व पुरगोश्त व गोल। तबीयत में ऐश पसन्द (कोई रोए कोई हंसे मगर वो स्वयं अपने आप में खुश) और हर दम अपने आप को औरतों की तरह संवारता रहे। मन्दरजा ज़ैल बातों का साथ होगा।

मशलशी हाथ ..... लाल किताब पेज नं० 47 फरमान नं० 67 जुज़ नं० 3

मंगल नेक - के प्रबल ग्रह वाला एक तरफ़ा तबीयत दहाना (मुंह का) कुशादा दोनों होंठ यकसां व सुर्ख़ रंग - आँखें सुर्ख़ और शेर की तरह डरावनी और ख़ूंखार सी वृहस्पति व सूर्य चंद्र की निशानियां भी साथ मिलती सी मालूम होंगी। गुम्मद (मीनान) की तरह ऊपर से उभरा हुआ और भारी मगर नीचे पांव की तरफ़ से हल्का होगा। मन्दरजा ज़ैल का साथ होगा।

मुरब्बा हाथ..... लाल किताब पेज नं० 47 फ़रमान नं० 67 जुज़ नं० 2

मुंह का दहाना ..... लाल किताब पेज नं० 68 फ़रमान नं० 73

बाजू लम्बे ..... लाल किताब पेज नं० 70 फ़रमान नं० 79

मंगल बद - जल्लाद कसाई और हाथ पर आग और छुरी साथ लिए फिरता सा मैदान।

जंग का मतलाशी (ढूंढ कर पाने वाला स्वयं कोशिश कर के लड़ पड़ने वाला)आँखे खूंख्वारी में शेर की तरह और सुर्ख़, मगर हिरण की तरह की भी यानी दोनों हालतों में से पता न चले कि किस से मिलती है। कद-काठ का उम्दा-लम्बा उम्र वाला स्वयं न जले मगर ''हरजा के रोद करदम शरीफ़ा न फ़सल रबीह शुद न ख़रीफा'' की तासीर वाला आवाज़ में दहाउड़ने की गूंज व भारीपन और अपने आप में ही मौत का यम हो कर चलने वाला होगा। मन्दरजा जैल बातों का साथ होगा।

पेट पर शिकन या बल.....लाल किताब पेज नं० 45 फ़रमान नं० 65

छाती .....लाल किताब पेज नं० 70 फ़रमान नं० 80

बुध - के ग्रह के प्रबल वाला कबूतर की आँख से मिलती हुई आँखों वाला मगर डरपोक-चाल में मस्कीन बिल्ली की तरह-ज़बान मासूम लड़कियों की तरह की मगर जादू की ताक़त की। दांत शानदार-बहरूपियापन (नक़्ल करने क्या स्वांग उतारने की ताक़त) दर्जा कमाल-ज़बान को होठों पर फ़ेरने की आम आदत बात-चीत में तेज़ रवानी-बातों-बातों में फ़र्ज़ी व क़ियासी महल बना देवे। मगर बकवासी व गप्पी न होगा। हर एक को अपना कायल और साथी बना लेगा। मगर स्वयं रहनुमा बनने वाला न होगा। ज़बान का चस्का ज़्यादा मगर ख़ुराक कम-ख़ूबसूरती पसन्द मगर ज़्यादा चीजों की परवाह नहीं। मन्दरजा ज़ैल बातों का साथ होगा।

दांत ..... लाल किताब पेज नं० 46 फ़रमान नं० 66

रगाएं (नाड़े).....लाल किताब पेज नं० 69 फ़रमान नं० 76

नाक की गाँठ (अगला हिस्सा) लाल किताब सफ़्हः नं० 112

मनतक़ी हाथ .....लाल किताब पेज नं० 48 फ़रमान नं० 67, जुज़ नं०-5

सर का ढांचा ..... लाल किताब पेज नं० 44 फ़रमान नं० 62

शनि - के प्रबल ग्रह वाला सांप सुभाओ-आँखें सांप की आँखों से मिलती हुई। गहरी व गोल। रंगत में सफ़ेद या सुर्ख़ न होगा बल्कि स्याही पर या स्याह रंग ही होगा। भवें लेटी लक़ीर की तरह सीधी या भवों पर बाल कम आवाज़ में सांप की तरह टिक-टिक वाला-आंखें बहुत देर-देर बाद झपकने वाला होगा। बात में पता न लगने देगा कि उसका अपना असली असली मतलब क्या है दोनों पहलू चारों तरफ़ घूम जाने वाला होगा। अगर मदद पर हुआ तो दूसरे की मदद को पूरा करने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर देगा। पक्का हट-ध्रम होगा अगर बर-ख़िलाफ़ी पर हो तो मुक़ाबिल वाले का सब कुछ बरबाद व ज़हरीला कर देगा। और सिर्फ़ दुनियावी तमाशा दिखला देगा ख़्वाह दुश्मन का और अपना दोनों का ही कुछ न बने। सुनने की बजाए आंखों से ही काम लेगा। दूसरों पर सांप आ निकलने की तरह का डर पैदा कर देगा। कान छोटे-अलाहदा बैठने का आदी होगा। मन्दरजा ज़ैल का साथ होगा।

जिस्म पर बाल.....लाल किताब पेज नं० 45 फ़रमान नं० 66

अबरू .....लाल किताब पेज नं० 68 फ़रमान नं० 74

हाथों की रूनमाई ..... लाल किताब पेज नं० 49 फ़रमान नं० 68

छींक .....लाल किताब पेज नं० 74 फ़रमान नं० 88

तालू (हलक का कौआ) लाल किताब पेज नं० 72 (10) फ़रमान नं० 84

पापी ग्रह मिले जुले - हलक का कौआ ख़ाना नं० 8 जिसमें दाएं तरफ़ राहु और बाएं तरहफ़ केतु और दरमियान में शनि होगा।

राहु - राहु के प्रबल ग्रह वाला बुलन्द ठोडी - रंग पूरा स्याह (अगर राहु ऊंच हो तो रंग स्याह न होगा। मगर बाक़ी सब राहु में उस जगह लिखी हुई बातें ज़रूर होंगी)

अमूमन काला - आँख से काना - या औलाद की तरफ़ से लावल्द होगा। टेढ़ा चलने वाला - हाथी का जिस्म रंग व हाथी की ही आँखों से मिलती हुई आँखें होंगी। तबीयत में कच्चे धुंए की तरह की बेआरामी सी होगी। जिस तरफ़ मिल गया वही तरफ़ दूसरी तरफ़ का नाश करने वाली हो गई। दिमाग़ी ताक़त हमेशा शरारत और बराबरी का ढंग खड़ा कर देगी। खुराक ज़्यादा मगर चस्का कम--चीज़ों की ज़्यादती का शौकीन मगर उनकी खूबरसूरती की परवाह नहीं। मस्कीन बिल्ली की तरह अगर उसे उड़ने के पर मिल जावें चिड़ियों का बीज नाश करना शुरू कर देगा। बिल्ली की तरह मकान से मुहब्बत होगी मालिक की जान से मुहब्बत न होगी। मन्दरजा ज़ैल का साथ होगा।

सीना की हड्डियां ..... लाल किताब पेज नं० 44 फ़रमान नं० 63

झगड़ालू हाथ..... लाल किताब पेज नं० 48 फ़रमान नं० 67 जुज़ नं० 8

ख़्वाब..... लाल किताब पेज नं० 75 फ़रमान नं० 91

हाथों के नाख़ून..... लाल किताब पेज नं० 68 फ़रमान नं० 72

छीक ..... लाल किताब पेज नं० 74 फ़रमान नं० 88

हथेली की गहराई ..... लाल किताब पेज नं० 49 फ़रमान नं० 68

केतु - प्रबल वाले के कान बड़े-बड़े-भवों का दरमियाना हिस्सा बुलन्द बल्कि ऊपर बाहर को उभरा हुआ सा-जिस्म खूब मज़बूत-ख़ासकर टांगों का हिस्सा भारी तबीयत नेक व दरवेश (कुत्ता-सुअर या साधु) की होगी। मन्दरजा ज़ैल का साथ होगा।

गर्दन पर शिकन या बल ..... लाल किताब पेज नं० 45 फ़रमान नं० 64

अंगूठा व उंगलियां (छोटे-छोटे) लाल किताब पेज नं० 48 फ़रमान नं० 67 जुज़ नं० 8

उंगलियां लम्बी .....लाल किताब पेज नं० 49 फ़रमान नं० 68 जुज़ नं० 10

कान ..... लाल किताब पेज नं० 68 फ़रमान नं० 75

पीठ ..... लाल किताब पेज नं० 70 फ़रमान नं० 81

पावं के नाखून ..... लाल किताब पेज नं० 68 फ़रमान नं० 72

हाथ का अंगूठा ..... लाल किताब पेज नं० 27 ता 33 फ़रमान नं० 58

मन्दरजा बाला 9 ग्रहों का असर - जब किसी का वृहस्पत प्रबल मालूम हो तो जिस घर में वृहस्पत बैठा हुआ होवे तो उस शख़्स के उस ख़ाना नं० के ताल्लूक़दार जिस में कि वृहस्पत हो। वृहस्पत की ऊपर लिखी हुई सिफ़्त के होंगे। अगर वृहस्पत हो ही अपने घरों में या घर का तो उसके बाबे या बाप की वही हालत होगी जो ऊपर वृहस्पत की कही गयी है। इसी तरह ही और ग्रह लेंगे-मसलन ऊपर के सबूत से किसी का सूरज प्रबल साबित होगा। मगर सूरज पड़ा है कुण्डली में केतु के घर ख़ाना नं० 6 में तो उस शख़्स का लड़का(केतु) सूरज की ऊपर लिखी सिफ़्तों का ( ) अगर केतु पड़ा होवे मंगल के पक्के घर ख़ाना नं० 3 में तो उसके भाई में केतु की ऊपर लिखी बातें पाई जाएंगी। इन्सान जिस ग्रह का साबित हो वह ग्रह उस ख़ाना नं० 9 का काम देगा। वह कुण्डली में कहीं ही हों।

इन्सान का कोई ग्रह ख़त्म हो गया-नष्ट हो गया या मर ही तो नहीं गया

वृहस्पति - सिर पर चोटी या बोदी की जगह के बाल स्वयं-ब-ख़ुद ही (किसी बिमारी या टटरी से नहीं) ख़त्म हो जावें। यानी उड़ जावें और जिल्द सिर की नंगी सी रह जावे या वह अपने गले में हरदम माला या तस्बीर (पूजा पाठ के लिए गांठे दे-देकर या मनके वग़ैरह इकट्ठे कर के कण्ठी सी बना लेते है) डाले रखने का आदी हो जावे तो समझ लो उसका वृहस्पत (स्वयं उसकी ज़ाती क़िसम्त में दुनिया के ताल्लुक़ के लिए) ख़त्म हुआ

सूर्य - ऐज़न जिस्मानी (जिस्म के अंग या हिस्से) को हरक़त करने या कराने की ताक़त (खींचना या फैला देना) जाती रहे। या उसके मुंह से हरदम थूक जारी होता रहे तो सूरज़ ख़त्म की निशानी होगी।

चंद्र - महसूस करने की ताक़त ख़त्म (पता न लगे कि उसके जिस्म से कोई चीज़ छू गई या लग गई है) तो चंद्र ख़त्म गिनेंगे।

शुक्र - अंगूठा ख़राब ख़त्म या नाकारा और निकम्मा हो जावे (बीमारी से कट कर नहीं) तो शुक्र बरबाद हुआ।

मंगल - जिस्म का जोड़ चलने से रह जावें। जिस्म के ख़ून का रंग जिल्द को देखने से मर गया मालूम होवे यानी इसके ख़ून का रंग जिल्द को देखने से मर गया मालूम होवे यानी इसके ख़ून का रंग बरबाद हो जावे। कुव्वते-ए-बाह तो हो मगर बच्चा पैदा करने की ताक़त करने की ताक़त क़ायम न रहे। (यह दो जुदा चीजें हैं) मंगल ख़त्म लेंगे।

बुध - ऊपर के ज़बाड़े के सामने के और पहले ही तीन दांत ख़त्म। ख़ुशबू बदबू का फ़र्क ख़त्म। कुव्वते-ए-बाह ख़त्म तो बुध मर गया ही गिना जावेगा।

शनि - जिस्म पर से बाल उतर जावें ख़ासकर पलकों और भवों के (बीमारी का ताल्लुक़ न लेंगे) तो शनि बरबाद कहेंगे।

राहु - हाथ के नाख़ून झड़ दिमाग़ी ख़राबियां दुश्मनों के ताल्लुक़ के दुख।

केतु - पांवों के नाख़ून झड़ जावें-पेशाब की बीमारियां या औलाद के दु:ख मन्दे असर का।

नष्ट ग्रह वाले की मदद

ऊंच घर के ग्रह अपना नेक फल देंगे और नेक फल न छोड़ेंगे। मगर दुश्मन ग्रह के साथ वह नेकी छोड़ देंगे मगर बदी न करेंगे।

वृहस्पत – ख़राब शुदा वाले को माथे/पगड़ी पर वृहस्पत के ज़र्द रंग का तिलक नाक का पानी खुश्क करने के बाद यानी नाक सफ़ा करने के बाद काम करना मदद देगा। अगर उम्र छोटी में ही वृहस्पत क़ायम होगा या नाक का पानी खुश्क रहने की उम्र तक ऊपर का ज़िक्र मददगार होगा।

सूर्य – की मदद के लिए मुंह में मीठा डालकर पानी के चन्द घूंट पी कर काम शुरू करना मुबारक़ होगा। अगर बचपन से ही पता चल जावे तो शुरू उम्र से ही ये बात मदद देगी।

चंद्र – की मदद के लिए दूसरों की आशीर्वाद बज़रिया पैरी पौना वग़ैरह कह कर काम करें। ख़बर पहले ही मिलने पर बुढ़ापे तक यह बात काम देगी।

शुक्र – नष्ट वाले को पोशाक का ख़याल रखना, बात क़ायम रहने तक मददगार होगा।

मंगल – बरबाद वाले को सुरमा सफ़ेद का इस्तेमाल ऐन शबाब तक मददगार होगा।

बुध – बरबाद वाले को नाक छेद देना या सुराख़ कर देना–दांत सफ़ा रखना ढलती जवानी तक मददगार होगा।

शनि – बरबाद वाले को मिस्वाक या दातुन का इस्तेमाल आंख का पानी खुश्क होने तक या बालों के सफ़ेद होने तक मददगार होगा।

राहु – बरबाद वाले को सिर पर चोटी या बोदी का कायम करना ख़ानदान से अलाहदा होकर स्वयंमख़्तियारी न करना या ससुराल से ताल्लुक न तोड़ना मुबारक होगा।

केतु – बरबाद वाले को कान में सुराख़ करना उम्र औलाद और सफ़र में मदद देगा।

अरमान नं० 92

1. पानी का भरा घड़ा–शनि ख़ाना नं० 11 में दृष्टि ख़ाली।

   दूध..... चन्द्र ख़ाना नं० 4 में दृष्टि ख़ाली।

   कन्या (लड़की) फूल बुध ख़ाना नं० 6 में दृष्टि ख़ाली।

   ब्याहशादी ..... शुक्र ख़ाना नं० 7 में दृष्टि ख़ाली।

2. लकड़ी ..... शनि ख़ाना नं० 3 में दृष्टि ख़ाली।

   हथियार शनि चन्द्र मुश्तरका 3– कुत्ता = केतु बुलन्द आवाज़

   आगे से उलट छींक राहु नीच असर का बिल्ली = राहु बुध का साथ

जानवर मंडलाने लगें ख़ासकर बुध होवे नं० 12 का (यानी राहु केतु का भी साथ ख़ाना नं० 12/6) में होवे।

4–नेक जानवर = काला कुत्ता (पूरा काला) ऊंच राहु–गाय–शुक्र ख़ाना नं० 12 हिरण मंगल ख़ाना नं० 10 में।

अरमान नं० 95

हर मकान किस ग्रह का है (अरमान नं० 5 से संबधित)

वृहस्पत – सेहन मकान का मकान के किसी एक सिरे पर होगा। ख़्वाह मकान के शुरू में ही हो ख़्वाह बिल्कुल आख़ीर पर ख़्वाह दाएं बाएं तरफ़ मकान के एक तरफ़ मगर दरमियान में न होगा। मकान का दावाज़ा शुमालन–जनूबन न होगा। हो सकता है कि पीपल का दरख़्त या कोई धर्मस्थान मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारे वग़ैरह मकान में या मकान के बिल्कुल साथ ही होवे। **(हवा के रास्ते से सम्बन्धित होगा)**

सूरज – मकान का दरवाज़ा निकलते सूरज मशरिक़ की तरफ़ होगा और सेहन मकान के दरमियान में होगा। आग का ताल्लुक सेहन में होगा। और हो सकता है कि पानी की सम्बन्ध भी निकलते वक़्त (मकान से बाहर निकलते हुए) दाएं हाथ पर सेहन में ही हो इधर–उधर किसी और जगह न होगा। औलाद का फल उत्तम और क़िस्मत ख़ुद अपनी का असर चढ़ते सूरज की तरह उम्दा होगा। **(रोशनी के रास्ते बताएगा)**

चंद्र – यह ग्रह सूरज से मिलता है। मकान के अव्वल तो अन्दर ही वरना मकान के बाहर की चारदीवारी के ऐन साथ लगा या लगता हुआ। और आख़ीर अगर दूर भी कहो तो कुण्डली वाले की अपनी 24 कदम तक उस मकान वग़ैरह चलता हुआ पानी ज़रूर होगा। ज़मीन के अंदर से क़ुदरती पानी को चंद्र लेंगे। मस्नूई नलका चंद्र न होगा। आबशार चश्मा वग़ैरह चंद्र गिने जाते है। **(ते ज़मीन और धन दौलत का मालिक है)**

शुक्रं – यह सूरज के प्रतिकूल होगा। ड्योढ़ी का शहतीर शुमालन जनूबन होगा। मकान में कच्चा हिस्सा ज़रूर होगा। दरवाज़ा मकान भी शुमालन जनूबन होगा। **(सफ़ेदी प्लस्तर)**

मंगल नेक – यह ग्रह वृहस्पत सूरज और चंद्र के साथ चलता है। मगर इनके दाएं या बाएं मानिन्द चौकीदार (पहरेवाला) होगा। मकान का दरवाज़ा शुमालन जनूबन होगा। कच्चे या पक्के होने की कोई ख़ास शर्त नहीं। **(मर्द और औरत जानदारों की आमदो रफ़्त)**

मंगल बद – मकान का दरवाज़ा सिर्फ़ जनूब में होगा। मकान के साथ या ऊपर मकान के दरख़्त का साया आग हलवाई की हट्टी का साथ होगा। मकान में या मकान के साथ क़ब्रिस्तान या शमशान भूमि होगी।

सन्तानहीनों का साथ होगा और हो सकता है स्वयं वह इन्सान भी काला काना या नि:सन्तान हो। अगर क़िसम्त भली होगी तो उसे उस में रहने का इत्तेफाक़ ही नहीं होगा। **(मर्द और औरत की आमदो रफ़्त)**

बुध - मकान चारों तरफ़ दायरे में हर तरह से ख़ाली या ख़ला हुआ होगा। या अकेला ही मकान होवे। मकान के साथ चौड़े पत्तों के दरख़्त का साथ होगा। (पीपल का दरख़्त गढ़ चंद्र शहतूत या लसूड़ा बुध होता है। इसलिए वृहस्पत या चंद्र के दरख़्तों का साथ न होगा। और अगर होगा तो वह घर बुध की दुश्मनी का पूरा सबूत देगा) **(इर्द-गिर्द के हमसाए बताएगा)**

शनि - यह ग्रह सूरज के उलट चलता है। मकान का शारए आम का बड़ा दरवाज़ा (अन्दर के दरवाज़े किसी भी ग्रह में नहीं माने गए) मग़रिब में होगा। मकान की सबसे आख़री कोठड़ी जो बाहर से मकान में अन्दर दाख़िल होते वक़्त दाएं हाथ की तरफ की होगी। पूरी अन्धेर कोठड़ी होगी। जिस दिन तक उसमें रोशनी का बन्दोबस्त न होगा। शनि का उत्तम फल होगा। जिस दिन ज़रा भी रोशनी या सूरज के आने का बन्दोबस्त हुआ सूरज शनि का झगड़ा या वह घर बरबाद हालत का हो जायेगा। मकान में पत्थर गढ़ा हुआ होगा। मकान के सबसे पहले दरवाज़े की दहलीज़ पुरानी लकड़ी की (शीशम या कीकर-बेरी फ़लाही वग़ैरह की होगी। हर हालत नए ज़माने की लकड़ी दयार-चीड़ वग़ैरह न होगी) होगी। छत पर भी पुरानी लक्कड़ का साथ आम होगा। हो सकता है कि उस मकान में स्तून मीनार या थम्म का साथ होवे। **(चारदीवारी से सम्बन्धित होगा)**

राहु - बाहर से अन्दर जाते वक़्त उस मकान में दाएं हाथ पर कोई गुमनाम गड्ढा बना होगा। बड़े दरवाज़े की दहलीज़ के ऐन नीचे से मकान का पानी बाहर निकलता होगा। मकान के सामने का हमसाया नि:सन्तान होगा। या ग़ैर आबाद ही होगा। हो सकता है कि मकान की दीवारें तो तबदील न होवें। मगर छत कई बार बदली जावे। मकान के साथ लगती हुई भड़भूंजे की भट्ठी कोई कच्चा धुंआ-ग़र्की (गन्दे पानी को जमा करने का गड्ढा) वग़ैरह का साथ होगा। **(बालिग़ों से सम्बन्धित बीमारी झगड़े राहु छत बलाए बद)**

केतु - कोने का मकान होगा। तीन तरफ़ मकान एक तरफ खुला या तीन तरफ़ खुला और एक तरफ़ कोई साथी मकान या स्वयं उस मकान की तीन तरफ़ें खुली हेागी। केतु के मकान में नर औलाद ख़्वाह लड़के ख़्वाह पोने तीन से ज़्यादा न होगे। अगर एक लड़का तो तीन पोते। अगर तीन लड़के तो एक पोता। या एक ही लड़का एक ही पोता। क़ायम होगा। इस मकान के दो तरफ़ काटता हुआ रास्ता मकान होगा। साथ का हमसाया मकान काई न कोई ज़रूर गिरा हुआ बरबाद या कुत्तों के आने जाने का ख़ाली मैदान बरबाद सा होगा। **(बच्चों से सम्बन्धित)**

मकान की शक्ल जिस ग्रह की निश्चित शक्ल से मिलती होवे वह मकान उस ग्रह का होगा (लाल किताब पेज नं० 124 अरमान नं० 117)

मकान में हर गोशे के दिए हुए ग्रह अपने-अपने मकान में अपना-अपना असर ज़ाहिर कर दिया करते है। जैसा कि वह कुण्डली में बैठे हों।

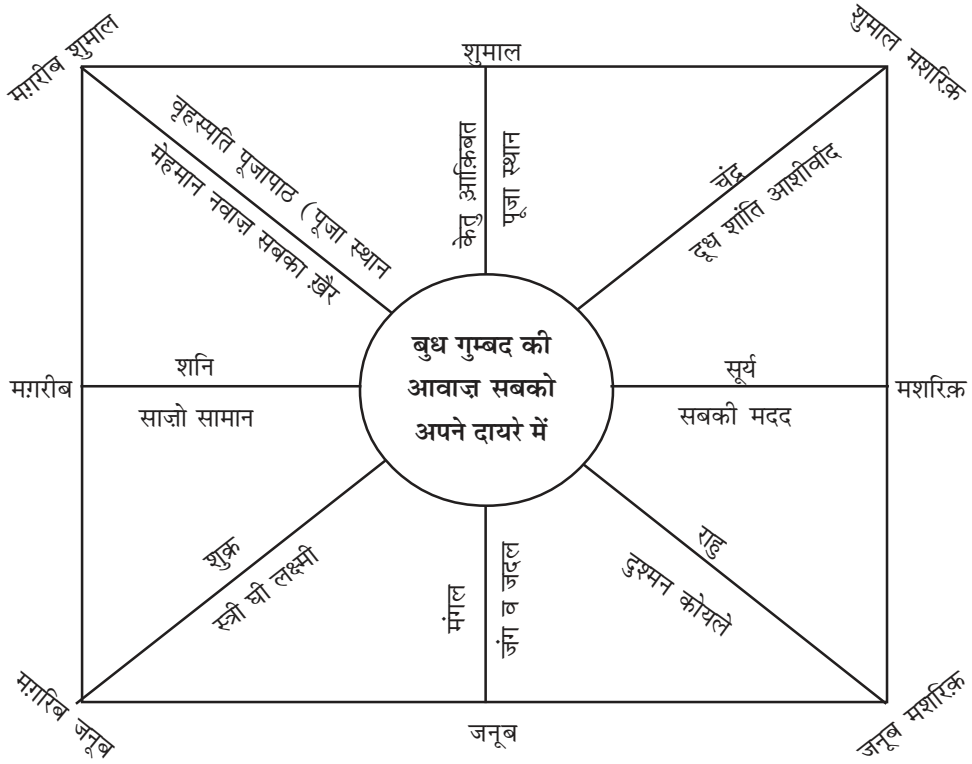

मकान के गोशे

आठ कोना - शनि ख़ाना नं० 8 का असर देगा। यानी मातम के वाक़यात व बीमारी आम होगी।

अठारह कोना - (वृहस्पत (सोना चांदी) का फल ख़राब होगा।

तेरह कोना - मंगल बद का असर होगा। भाईबन्दों की आफ़तों में तबाह होगा। मौतें और आग के नुक़सन बहुत होंगे। फांसी का वाक़या भी हो सकता है।

बिच्चों चूक - (दरमियान से बाहर को मछली के पेट की तरह उठा हुआ) काग़ रेखा का असर देगा। ख़ानदानी नस्ल घटनी जावे। आख़ीर पर स्वयं भी नि:सन्तान होगा। यानी अगर बाबे तीन भाई हो तो बाप दो और आख़ीर पर स्वयं अकेला और आइन्दा नि:सन्तान होगा।

भुजा बल हीन – (बाज़ू के बग़ैर या बाजू कटे हुए मुर्दे की शक़्ल का) मौतें ही मौतें मुर्दा पर मुर्दा दिखलावे। अगर कोई शादी भी उस मकान में रंडवा और बेवा होवे।

पांच कोन – 5 गोशावाला औलाद का दु:ख और उनकी बरबादी की कारवाइया दिखलावे। मन्दरजा बाला गोशे, मकान की दीवारें बनने से पहले क़ाबिले ग़ौर होंगे।

ग्रह कुण्डली की मकान के हिसाब से दुरूस्ती की जांच

कुण्डली के ख़ाना नं० 9 वाले ग्रह का संबधित मकान उस कुंडली वाले का जद्दी मकान होगा। और ख़ाना नं०–1 के ग्रह की ऊपर लिखी तमाम शर्ते उसके अपने बनाए हुए मकान में मौजूद होंगी। अगर ये ख़ाने ख़ाली हों तो दूसरे मकानों से ग्रह कुण्डली की दुरूस्ती देखेंगे।

कुण्डली के ख़ाना नं० 1 से चलकर अगर नौवें को जावें या मकान से बाहर को निकलें तो जिस तरफ़ दायां हाथ होगा उस तरफ़ मकान के तमाम ग्रह जो ख़ाना नं० 1 से 8 तक हों अपना सबूत देंगे। इसी तरह अगर 12 नं० ख़ाने से अपने आपको ख़ाना नं० 6 की तरफ़ आते हुए गिनें या मकान में बाहर से आकर दाखिल होने लगे तो ख़ाना नं० 12 से 12 11 10 के घरों के ग्रह दाएं तरफ़ मकान के सबूत देंगे।

क़िस्मत का ग्रह जिस घर में मिले उसी ख़ाना नं० के संबधित मकान से तमाम कुण्डली की ग्रह की दुरूस्ती मालूम होगी।

कुण्डली का ख़ाना नं०	किस मकान को ज़ाहिर करेगा।	कुण्डली का ख़ाना नं०	किस मकान को ज़ाहिर करेगा
1.	स्वयं साख़्ता अपना बनाया हुआ मकान	8.	उस शख़्स के जद्दी घर का सम्बन्धित क़ब्रस्तान या श्मशान भूमि की जगह
2.	ससुराल का मकान		
3.	भाई का घर–ताये चचे का मकान	9.	जद्दी मकान बुजुर्गों के बनाए हुए
4.	माता ख़ानदान मासी फ़फी का मकान	10.	वह मकान जिसमें कम अज़ कम 3 साल लगातार रहा हो
5.	औलाद के बनाए हुए मकान		
6.	नानका घर नानी–नाने का मकान	11.	ख़रीद करदा मगर स्वयं न बनाए हों
7.	स्त्री घर व लड़कियों की तरफ़ के रिश्तेदारों के घर के मकान	12.	हमसायों के मकानात

मकान से ग्रह दुरूस्ती देखते वक़्त जिस तरह से क़िस्मत का ग्रह ढूंढते हैं इसी तरह ही तरतीबवार हर ख़ाने में से ग्रह ढूंढगे। मकान की शक्ल जिस ग्रह से मिल जावे वह ग्रह कुण्डली में जिस जगह हो वह दुरूस्त गिना जाएगा।

जिस ग्रह का असर उस मकान के संबधित मकान में देखना हो उसे बुध की ख़ाली जगह (मकान के दरमियान ख़ाली जगह समझकर) रखकर उस ग्रह के दाएं बाएं की चीजों का असर देखेगे।

मकान की हैसियत - लाल किताब पेज नं० 80 पर दीये हुए कायदे से जवाब में अगर बाक़ी बचता होवे

एक-वृहस्पत सूरज होगा ख़ाना नं० 1 का
दो बाक़ी-वृहस्पत शुक्र मिले जुले ख़ाना नं० 2 में
तीन बाक़ी-वृहस्पत मंगल मिले जुले ख़ाना नं० 3 के
चार बाकी-वृहस्पत शनि-चंद्र ख़ाना नं० 4 में
पांच बाक़ी-सूरज वृहस्पत ख़ाना नं० 5 में
छः बाक़ी सूरज शनि मिले जुले ख़ाना नं० 6 में
सात बाक़ी चंद्र शुक्र मिले जुले ख़ाना 7 में
आठ बाक़ी मंगल शनि मिले जुले ख़ाना 8 में होंगे।

अरमान नं० 96

ख़ुशी - बन्द मुट्ठी में साथ लाए हुए खज़ाना के ग्रह यानी ख़ाना नं० 1-7-4-10 के ग्रह खुशी का सबब होंगे यानी जो ग्रह इन चारों ख़ानों में हो वह हमेशा ख़ुशी दिखलाते रहेंगे।

ग़मी - ऊपर कहे हुए चार ख़ानों को छोड़कर कुण्डली के बाक़ी ख़ानों के ग्रह यानी ख़ाना नं० 2-3-5-6-8-9-11-12 ग़मी का सबब करने वाले हो सकते हैं।

सूरज दिन का मालिक तो शनि रात का। अगर दिन का मालिक सूरज हुआ तो रात का मालिक चंद्र भी है। गोया राहत व आराम में चंद्र व शनि का झगड़ा हुआ। सूरज ज़ाहिर तो चंद्र ग़ैबी ताक़त का मालिक है। सूरज ज़ाहिरा मदद करता है। और शनि नीचे से अन्दर-अन्दर मदद देता है। मगर बुरा करने के वक़्त दोनों का उसूल उलट है गर्ज़े कि चंद्र शनि दोनों में से जो दोनों ही पोशीदा चलते है मदद देते है। चंद्र ख़ाना नं० 4 का मालिक है। ख़ुशी का और शनि ख़ाना नं० 10 मालिक है ग़मी का ज़ाती खुशी का ख़ाना नं० 4 और ग़मी का ख़ाना नं० 10 संबधित होगा। मुट्ठी का अन्दर और बाहर तमाम संबधित दुनिया से सम्बन्ध होगा। ख़ाना नं० 10 शनि का है जो चारों तरफ़ ही चलता है। उस

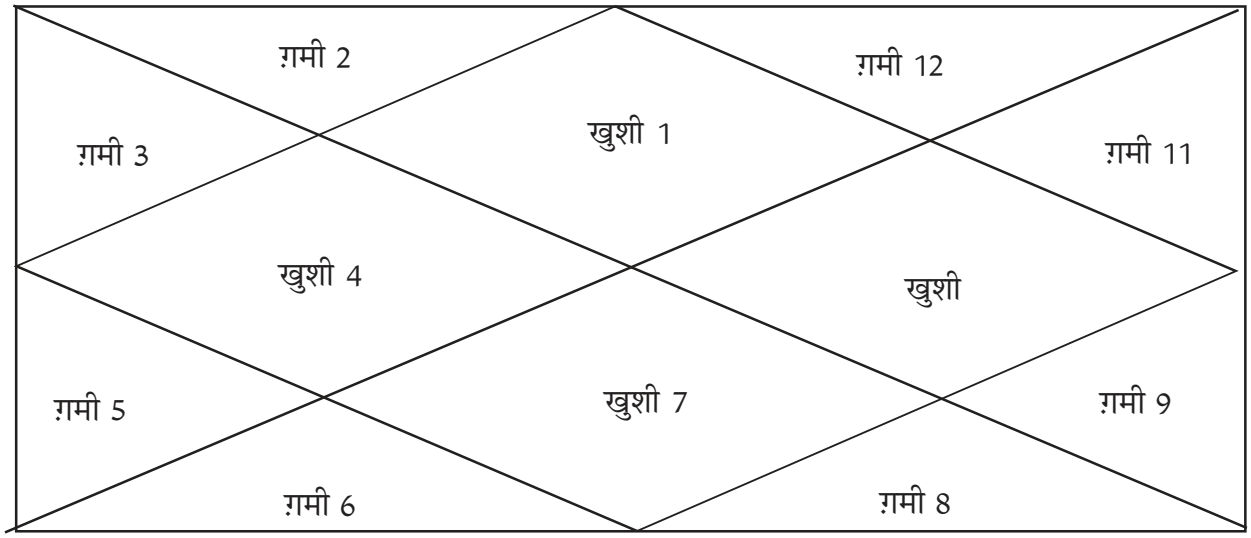

ख़ाना से ज़ाती मगर पिता के सम्बन्ध की ख़ुशी जब यह ख़ाना मुट्ठी के अन्दर का हुआ और जब ग़मी में लिया तो दुनियादारों से संबधित होगा। इसलिए उंगली की पोरियों पर की लकीरों चंद्र के निशान 32 ख़ुशी के होंगे। जिनके मुकाबला पर शनि भी उसी ताक़त का होगा यानी कुल जितने निशान हों (सिर्फ़ एक ही हाथ पर) उन से बारह का हिन्दसा (चंद्र की बारह राशियाँ की ख़ुशी) तफ़रीक करें तो बाक़ी के हिन्दसे वाले राशि के घर का शनि का असर होगा। सिफ़र बाक़ी बचने की हालत में शनि अपने पक्के घर ख़ाना नं० 10 का ही होगा। मसलन

ख़ाना नं जिसका कि शनि फल देगा	10	1	2	3	4	5	6	7	8	9	आगे कोई साधु फ़कीर हो तो	10	11	12
निशान हों तादाद में	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21		22	23	24

अरमान नं० 97

लाल किताब के फ़रमान 58 पेज 32 जुज़ 3 और फ़रमान नं० 97 को इकट्ठा ही देखें तो एक ही मालूम होंगे। फ़र्क सिर्फ़ ये है कि पेज 32 जुज़ 3 पर जौ के निशान के लिये लिखा है कि ''पोरी की जड़'' पर हो और फ़रमान नं० 97 में लिखा है कि ''हिस्सा पर'' निशान होवे पोरी की जड़ पर निशान से मुराद है कि उस पोरी के लिए जो घर कुण्डली में निश्चित किया है चंद्र उस घर को देखता है। मसलन नाख़ून वाली पोरी को केतु का घर ख़ाना नं० 6 माना है। अब चंद्र उसे देखता है से मुराद होगी कि चंद्र ख़ाना नं० 2 में है। पोरी पर निशान से मुराद यह है कि चंद्र है ही उस घर में जो घर कि उस पोरी के लिए निश्चित है।

जायदादी सुख (वाल्दैनी सुख सागर का सम्बन्ध नहीं)

यह अरमान नं० 58 व 98 का हिस्सा है

किस हिस्से पर जौ का निशान हो या किस ख़ाना नं० में चंद्र होवे	निशान दुरुस्त हो या चंद्र क़ायम हो	निशान टूटा-फूटा हुआ हो या चंद्र दुश्मनों में ख़राब हो रहा हो।
नाख़ून वाले हिस्से पर निशान हो ख़ाना नं० 6 में चंद्र हो	सारी उम्र आराम व दौलतमन्द हो	चंद्र की जायदाद का सिर्फ़ बुढ़ापे में सुखी नसीब होगा।
दरमियानी हिस्से पर निशान हो ख़ाना नं० 12 में चंद्र हो	चंद्र के वक्त़ से जायदाद का फल मद्धम बाक़ी हालत उम्दा	चंद्र का जायदाद का सिर्फ़ बचपन उम्दा होगा
निचली पोरी पर निशान हो ख़ाना नं० 2 में चंद्र हो	हर तरह से उम्दा	चंद्र की जायदाद का बचपन व जवानी उम्दा

पोरी की जड़ और पोरी पर – निशान की पहचान यह निशान चंद्र के आधे आकार के दो निशानों से मिलकर बनता है। जिस तरफ़ का हिस्सा बड़ा होवे वह तरफ़ चन्द्र के ख़त्म होने की होगी। यानी इस बड़े निशान की हद के बाद चंद्र न होगा। या चंद्र इस बड़े निशान की हदबन्दी से पहली पोरी में (उस पोरी की पहली पोरी जिसमें कि या जिस के सिरे पर कि वह बड़ा निशान होवे) होगा। ख़त A - A फर्जन..... बड़ा ख़त है। और लकीर A C A छोटी लकीर अब हिस्सा नं० 1 में (नाख़ून वाले हिस्से पर) लकीर A Aबड़ी है या दूसरी लकीर A C A नाख़ून वाले हिस्से में ही रह गई है। इस हालत में जौ का निशान नाख़ून वाली पोरी में गिना जाएगा और नाख़ून वाली पोरी की जड़ पर न होगा।

अरमान नं० 98

ज़ाती गृहस्ती सुख = खवाल्दैनी सुख सागर व जायदाद के सुख के अलावा

यह अरमान नं० 97 व 58 का हिस्सा है

उंगलियों की जड़ों में सूराख़ न हाने से मुराद ग्रहों के बाहम अपनी नेक हालत दोस्त हालत या ''साथी ग्रह'' हो जाने से है। सूराख़ होने से मुराद यही है कि उंगलि के सम्बधित ग्रह बुरे या पापी फल के हैं।

कौन-कौन ग्रह ''साथ ग्रह''	**कौन-कौन सी उंगली की जड़ मिली हुई गिनी जाएगी**	**दोनों उंगलियों से सम्बन्धित ग्रह बुरे फल के हों।**
वृहस्पत शनि	तर्जनी व मद्धमा	बुढ़ापे में तकलीफ़ हो
शनि सूर्य	मद्धमा व अनामिका	जवानी में तकलीफ़ हो
सूर्य बुध	अनामिका व कनिष्का	बचपन में तकलीफ़ हो
शुक्र वृहस्पति	तर्जनी व अंगूठा	जन्म लेते समय

अरमान नं० 99

आम बरताओ सम्बधित दुनिया व ख़ुद साहुकारा कुण्डली के ख़ाना नं० 6 से देखा जाएगा ख़ाना नं० 6 के मालिक ग्रहों का इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं। इस घर में दोस्त ग्रह कुण्डली वाले के मददगार और दुश्मन ग्रह इसके प्रतिकूल होंगे।

अरमान नं० 100 A

ख़र्च बचत – चन्द्र धन शनि ख़ज़ानची होता है। दोनों को हालत जेब की हालत बताएगी।

आमदनी का हाल देखा जाएगा ख़ाना नं०..... 11 से

खर्च का हाल देखा जाएगा। ख़ाना नं० .....12 से

बचत का हाल देखा जाएगा। ख़ाना नं० ..... 9 से (बुजुर्गों की तरफ़ का सम्बन्ध)

बचत अज़ ज़ाती कमाई जाएगा। ख़ाना नं०..... 2 से

बचत अज़ औलाद की जाएगा। ख़ाना नं०.....5 से

ख़र्चा पर काबू पाना - (i) वृहस्पत सूरज मिले जुले मगर नेक घर के या दोनों साथी ग्रह या दोनों जुदा-जुदा क़ायम या दोनों जुदा-जुदा अपने-अपने दोस्तों के साथ होवें। — बचत स्वयं-ब-स्वयं होती चली जावे या ज़रुर होवे।

(ii) ऐसे ही सूरज बुध (iii) वृहस्पत शनि (iv) बुध शनि

(i) बुध वृहस्पत (ii) शुक्र वृहस्पत — ख़र्चा ख़्वाहमख़्वाह होता जावे

(iii) शनि सूरज मिले जुले हों मगर साथी वग़ैरह न हों। — आमदन ख़्वाह हो या न हो

अगर वृहस्पत का साथ सूरज या शनि में से किसी को भी न मिले यानी सूरज या शनि दोनों में से कोई एक भी वृहस्पत की राशि या दोस्ती वग़ैरह के सम्बन्ध में न होवे। — ख़र्च व आमदन महदूद होंगे अगर ख़र्च घटावे तो आमदन स्वयं-ब-स्वयं वही रहे जो मुकर्रर है।

शनि और मंगल जायदाद के मालिक हैं। चंद्र वृहस्पत सोने चांदी की दौलत के मालिक है।

अरमान नं० 100 B

कर्ज़ा व जायदाद जद्दी में इजाफा-औसत ज़िन्दगी

ख़ाना नं० 11 व नं० 12 की तफ़रीक का नतीजा होगा। कुण्डली में 9 ग्रहों से जितने ग्रह उम्दा (क़ायम या दोस्त वग़ैरह) हों इतने हिस्से नेक और जितने ग्रह मन्दे उतना हिस्सा बुरा होगा। दोनों की तफ़रीक व आख़री औसत का नतीजा होगा। मसलन 9 ग्रहों से 5 अच्छे और 4 मन्दे हों तो आमदन ख़र्च के लिहाज़ से एक बाक़ी दे जाएगा।

9 जमा 5 अच्छे ग्रह = 14 — 14 जमा 5 तक़सीम 2 वास्ते औसत दो की के

9 मनफ़ी 4 बुरे ग्रह = 5 — 19/2 की 9=1/2 स्वयं

बचत आख़री 12 राशि की औसत के लिए 19/2 को 9= 1/2 पर तक़सीम

किया तो..... ... .. 19/2 × 1/12 = 19/24

जायदाद जद्दी का नतीजा उम्र के हर 35 साला चक्कर में कर देगा। यानी 24 के लिए 19 पैदा करके 5 की कमी या बेशी कर देगा। अगर किसी भी पितृ थण को अदा न कर ले पितृ थण बज़ाते स्वयं राहु केतु की मन्दी हालत या ख़ाना नं० 6 केतु 12 राहु-ख़ाना नं० 2 दोनों की बैठक और 8 पापी ग्रहों की बैठक में कोई भी मददगार ग्रह न हो तो पितृ थण का बोझ होगा। लेकिन अगर कोई पितृ थण उसके ज़िम्मे न हो तो यही 5 की बचत उम्र के हर 35 साला चक्कर में कर जाएगा। यह औसत ज़िन्दगी होगी। माहवारी आमदन न होगी (पितृ थण से मुराद महांदशा का ग्रह भी होता है। यानी अगर कोई ग्रह महांदशा का होवे तो कमी होगी। वरना बचत होगी। अगर महांदशा के मुक़ाबले में कोई भी बन्द मुट्ठी के अन्दर के ख़ानों में ग्रह या मुट्ठी से बाहर कोई भी ऊंच घर का ग्रह मिल जावे या सिर्फ़ ख़ाना नं० 4 या चंद्र अकेला ही अच्छे हों तो महांदशा की शर्त मन्सूख़ हो जाएगी।

नेकी बदी की औसत -

ख़ाना नं० 9 के ग्रह 'तोहफा' जो दूसरों के लिए जन्म पर साथ लाएगा और

ख़ाना नं० 2 के ग्रह 'ताशा'जो आख़री दम अपने साथ ले जाएगा।

औसत आमदन माहवार (स्वयं ज़ाती)

ऊंच घर के ग्रह-क़ायम ग्रह या क़िस्मत के ग्रह के हिसाब से यानी जो भी सब से प्रबल होवे उसके लिहाज़ से-

नाम ग्रह	रुपये	कैफ़ियत
वृहस्पति	11	अगर कोई दो ग्रह इकट्ठे हो और उम्दा तो इन इकट्ठे शुदा की
सूर्य	10	रक़म का मजमूआ होगा। मसलन सूर्य वृहस्पति मिले-जुले = 21 रुपए
चंद्र	9	मंगल शनि मिले-जुले 18 रुपए
शुक्र	6	वृहस्पति शनि मिले-जुले 21 =1/2 रुपए
मंगल	7=1/2	वृहस्पति चंद्र मिले-जुले 21 रुपए
बुध	3	चंद्र सूर्य मिले-जुले = 20 रुपए
शनि	10=1/2	बुध सूर्य मिले-जुले = 13 रुपए
राहु	8	मंगल चंद्र मिले-जुले 16=1/2 रुपए
केतु	5	शुक्र बुध मिले-जुले 9 रुपए
कुल	70	राहु केतु और शनि शुक्र मिले-जुले नहीं गिनते क्योंकि शनि शुक्र एय्याशी

और राहु केतु ख़ाली-शुक्र मस्नूई-शुक्र या हवाई वृहस्पत या सिर्फ़ कागज़ी हिसाब किताब जिस की वसूली न होवे होगा। बुध मंगल को मंगल बद लेंगे और बुध शनि जायदाद में गिने जाते है।

तरीका:- जिस दिन से काई आदमी ज़ाती कमाई (खुद अपनी रोटी कमाना) शुरू करे उस दिन से जितने साल के बाद उसकी औसत आमदन माहवार देखनी हो ऊपर के रूपए के हिन्दसा को कमाते हुए अर्सा के सालों से ज़रब दें जबाव का हिन्दसा माहवारी औसत आमदन होगा। फ़र्जन किसी के मंगल शनि मिले जुले हैं और उसने 19 साल कमाई करते हुए होने के बाद देखना चाहा तो 18 × 19 = 342 रूपए माहवार 19 साल पूरे करने पर होगी।

ऊपर लिखी आमदन व ख़र्च ज़ाती कमाई से होगी या कर्ज़ा लाकर या किसी और ढंग से रूपया लेकर उस कर्ज़ा से ख़र्चा करके बाक़ी कुछ बचा जाएगा।

बंद मुट्ठी के अन्दर के ख़ानों के ग्रहों वाला या ख़ाना नं० 11 में कोई भी नर ग्रह वाला अपनी ज़ाती कमाई से सब कुछ आमदन ख़र्च व बचत करेगा। बाक़ियों के लिए ये शर्त न होगी। आरज़ी उधार को कर्ज़ा नहीं गिनते। कर्ज़ा वह होगा जो बाबे ने लिया पोते तक मार करता चला जावे। मंगल शनि डाकू हैं जब इकट्ठे हों और सिर्फ़ दोनों ही हों जब इनके साथ साधु ग्रह वृहस्पत का साथ हो जावे सिवाय ख़ाना नं०2 के वृहस्पत के तो माक़ूल आमदन होते हुए भी कर्ज़ाई होगा। ख़ासकर बाप की या तमाम जद्दी चीज़ों के ख़त्म होने तक।

मंगल शनि के घर नं० 10 में राजा होगा। जब तक कोई और ग्रह साथी न हो। मगर शनि मंगल के पक्के घर ख़ाना नं० 3 में निर्धन कंगाल होगा जायदाद हो सकती है मगर नक़द माल न होगा।

धन दौलत के नाम - (लाल किताब पेज नं० 298/5 ता 305/20)

(1) चंद्र मंगल मिले जुले श्रेष्ठ धन होगा। (ख़ासकर ख़ाना नं० 3 का) और दान कल्याण से बढ़ने वाला धन होगा। अगर यह दोनों ग्रह ख़ाना नं 10/11 में या शनि के सम्बन्ध में हो जावें तो लालची होगा।

(2) चंद्र वृहस्पत दबा हुआ धन जो फिर चल पड़े और काम आवे। सोना चांदी छत्तरधारी बढ़ के दरख़्त का साया का दूसरों को भी बड़ा भारी सहारा।

(3) चंद्र शनि वृहस्पत के घरों में और वृहस्पत के साथ से उम्दा वरना स्याह मुंह माया-स्वयं स्याह मुंह बन्दर की तरह छलांग लगाकर चली जाने वाली और मुंह काला सुनाने वाली।

(4) मंगल शुक्र स्त्री की तरफ़ (ससुराल) और स्त्री की क़िस्मत पर चले।

(5) शनि वृहस्पत = फ़कीरी व तालीकी सम्बन्ध की माया-सन्यासी का धन शादी के दिन से बढ़ेगा।

(6) मंगल वृहस्पत = श्रेष्ठ गृहस्ती धन अपने मर्द के कबीला से सम्बधित।

(7) मंगल शनि = शनि डाकू का धन दौलत।

(8) मंगल सूर्य = जागीरदारी हकूमत का धन तालीमी रूहानी सम्बन्ध।

(9) शुक्र वृहस्पत = बूर के लड्डू–झाग के पताशे।

(10) सूरज वृहस्पत = सब से ऊपर शाही धन–हर एक धन रेखा का संक्षिप्त हाल जुदी जगह लिखा है।

ख़ाना नं० 3 के दुश्मन ग्रह या दुश्मन ग्रहों का तख़्त की मालक़ियत का ज़माना धन हानि–चोरी–बिलावजह फालतू ख़र्चा और नुक़सान का सबब होता है। और ख़ाना नं० 11 धन रेखा की आमदन का होगा। या धन रेखा ख़ाना नं० 11 के रास्ते आती और ख़ाना नं० 3 के रास्ते चली जाती है। या तीसरी पुश्त पर धन रेखा का रास्ता बदला हुआ होता है।

माया तेरे तीन नाम–परसू–परसा–परसराम।

ख़ाना नं० 3 में धन रेखा का नाम होगा परसू

ख़ाना नं० 11 में धन रेखा का नाम होगा परसा

ख़ाना नं० 1–9–5 (ख़ुद–बुजुर्ग–औलाद) परसराम

ख़ुलासतन बन्द मुट्ठी के अन्दर के घरों में कोई ग्रह न हो तो अपने साथ कुछ न लाया। सब ही ग्रह बन्द मुट्ठी के अन्दर ही सब ग्रह होवें तो मर्द की माया–दरख़्त का साया उसके साथ ही उठ गया।

अरमान नं० 1 ता 108

ग्रहों और राशियों का बाहम सम्बन्ध

नम्बर्	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि का	मेश	वृक्ष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मालिक	मंगल नेक	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध केतु	शुक्र	मंगल बद	वृहस्पति	शनि	शनि	वृहस्पति राहु
ऊंच	सूर्य	चंद्र	राहु	वृहस्पति	सूर्य	बुध केतु	शनि	मंगल बद	केतु	मंगल	–	शुक्र केतु
नीच	शनि	चंद्र	केतु	मंगल	सूर्य	केतु	सूर्य	चंद्र	राहु	वृहस्पति	–	बुध–राहु
पक्का घर	सूर्य	वृहस्पति	मंगल	चंद्र	वृहस्पति	केतु	शुक्र बुध	मंगलबद शनि	वृहस्पति	शनि	वृहस्पति	बुध–राहु
क़िस्मत को जगाने वाला	मंगल	चंद्र	बुध	चंद्र	सूर्य	राहु	शुक्र	चंद्र	वृहस्पति	शनि	वृहस्पति	केतु
ग्रह फल का	मंगल नेक	राहु केतु	शनि	चंद्र	सूर्य वृहस्पति	बुध केतु	शुक्र	मंगल बद	वृहस्पति	शनि	शनि वृहस्पति	राहु
राशि फल	राहु	राहु केतु	शनि	शुक्र मंगल केतु	सूर्य वृहस्पति	सूर्य वृहस्पति शनि मंगल	सूर्य वृहस्पति राहु	मंगल बद	शनि	बुध केतु	–	बुध

ख़ाना नं० 2 का नीच नहीं होता और यह ख़ाना राहु व केतु (सिर्फ़ दोनों) की मिले जुले बैठक है जिसके राशि फल का ग्रह नहीं है। यानी कि इस ख़ाना के ग्रह अपना ग्रह अपना-अपना या अपने-अपने कर्मों (पुन पाप का बज़ाते स्वयं अपनी जान से सम्बधित)के करने कराने का ख़ुद आख़्तियारी है।

ख़ाना नं० 5 का ऊंच नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते अपनी स्वयं ज़ाती जिस्मानी की /औलाद ख़ुद क़िस्मत का ग्रह है।

ख़ाना नं० 11 का ऊंच नीच या आम दुनिया मिले जुले से क़िस्मत का लेन देन है। ख़ाना नं० 8 का ऊंच नीच नहीं होता। कोई मौत को नहीं मार सकता सिवाय चन्द्र के जो दिल की शांति व गैंबी मदद वग़ैरह है। (दुनिया को माता तो इंसान को बच्चा माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला)

ख़ाना नं० 3 का शनि ग्रह फल में माया धन दौलत नक़द से दूर होगा। मगर जायदाद के लिए मन्दा न होगा। अगर जायदाद के लिए मन्दा हो भी तो क़ाबिले उपाओ है।

अरमान नं० 108

ग्रहों की बाहम दृष्टि व राशियों (कुण्डली/के ख़ानों) से सम्बन्ध

बात को समझने के लिए राशि को स्त्री और ग्रह को मर्द कहें। दोनों का मिलाप ग्रह व राशि या मर्द औरत का जोड़ा मिथुन राशि बुध को ख़ाली आकाश में शुक्र की गृहस्ती मुहब्बत (हक़ीक़ी व ग़ैर हक़ीक़ी में कुल सृष्टि दुनिया) की त्रैलोकी (तीनों ज़माने या ख़ाना नं० 3 में) मंगल के पक्के घर भाईबन्दी से चल रहा है। इस जोड़े की नियत तीन हिस्सों में बटी हुई समझें। (i) घर की मालक़ियत या साधारण जैसी कि हर मर्द व औरत की गिनी जा सकती है। (ii) ऊंच हालत की यानी जो हर एक या बाहम एक के लिए दूसरे की नेक हो सकती है। (iii) नीचया मन्दी और दुश्मनी भरी बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली होगी। हर एक राशि के असर के लिए उसके घर का मालिक ग्रह साधारण या आम हालत का (न भला न बुरा) ऊंच फल की राशि से मुराद नेक फल देने का सम्बन्ध चाहे राशि को ग्रह के लिए या ग्रह को राशि के लिए मानो और नीच फल की राशि का ग्रह बुरे असर से संबधित होगा। या जिसकी (चाहे राशि की उस संबधित ग्रह के लिए कहो चाहे ग्रह के लिए उस राशि के सम्बन्ध से समझो) नियत बद गिनी जाएगी। हर एक राशि किसी ख़ास ग्रह के लिए ख़ास ख़ास सम्बन्ध (बुरा या भला) की और हर एक ग्रह किसी ख़ास राशि के लिए ख़ास-ख़ास सम्बन्ध का निश्चित किया गया है। इस तरह पर निश्चित किए हुए जोड़े में से जब कोई ग्रह अपनी निश्चित राशि की बजाए किसी और ग्रह की संबंधी राशि में जा बैठे तो वह ग्रह जो चल कर दूसरी जगह जा बैठा है कुण्डली वाले की क़िस्मत पर वैसा ही असर करेगा जैसा कि वह दूसरी जगह जाकर हो गया है।

ग्रह की दृष्टि (i) हस्त रेखा में रेखा की शाख़ों या रेखा के उतार झुकाओं को इल्म ज्योतिष में ग्रह दृष्टि गिनते है।

(ii) कुण्डली के बारह ख़ानों को एक बड़े मकान की बारह कोठड़ियां फ़र्ज करें। हर एक ख़ाना की लकीर

को उस कोठड़ी की दीवार समझें। तो ख़याल आएगा कि कुण्डली के अन्दर के चार ख़ाने चार-चार दीवारों वाले चार ख़ाने है। जिस में साथ लाया हुआ ख़ज़ाना गिना गया है। बाक़ी 8 ख़ाने सिर्फ़ तीन तीन दीवारों से बने हुए आधे मकानों की तरह के 8 मशलशें है जिन में कुण्डली वाले का आधा आधा हिस्सा गिन कर कुल आठों से आधा या चार पूरे घर और है। गोया बच्चे के कुल आठ घर हो गए। या पहला घर अपना जन्म का जन्म व आठवां ख़ाना नं० 8 मौत है। ग्रहों को लैम्प मानें। सब कोठरियों के दरवाज़े किसी न किसी तरफ़ ख़ुलते हुए माने गये है। या एक घर में चमकते या जलते हुए लैम्प की रोशनी इस के दरवाज़े से दूसरे के अन्दर जाती हुई मानी गयी है। रोशनी के इस तरह दूसरे घर में पहुंच जाने के ढंग को ग्रह की दृष्टि (देखना) कहलाती है। लाल किताब पेज नं० 103 की सब से पहली और ऊपरी की सतर के हर ग्रह अपने से सातवें (इसी तरह फ़लाने घर के ग्रह फ़लाने घर को 100 फ़ीसदी-50 फ़ीसदी या 25 फ़ीसदी की नज़र से) देखता है से मुराद है कि वह अपने उस घर से बाद के घर को देखता है। या उस का अपने बैठ हुए घर का असर वह अपने बाद वाले में भी पंहुच रहा है।

मगर यह मतलब नहीं है कि वह अपने से बाद वाले सातवें घर के ग्रह के असर को अपनी तरफ़ अपने बैठे हुए ख़ाना नं० में ख़ींच कर ला रहा है। ख़ाना नं० 8 मौत का घर उलटा देखता है। यानी कि वह अपना असर ख़ाना नं० 2 की तरफ़ भेजता है। यह ख़ाना नं० 2 गो सब के लिए राहु केतु की मिले जुले बैठक के असर (पाप पुन का लक्ष्य)का निश्चित है। मगर इस ख़ाना नं० 2 में ख़ाना नं० 8 से आने वाले असर में तमाम पापी ग्रहों (राहु केतु के अलावा शनि) का जुज़ भी शामिल है।

राशियों के बग़ेर सिर्फ़ ग्रहों से ही हर ख़ाना का असर देखने का ढंग

देख लो कि हर एक ग्रह कैसा चाहे वह कुण्डली के किसी भी ख़ाने में हो। जैसा उस बैठे हुए ग्रह का कुण्डली के हिसाब से होगा वैसा ही उसका असर (इस जगह दिए हुए ख़ाना नं० पर होगा। उदाहरण शुक्र में रद्दी हैं तो इस नक्शे के मुताबिक़ ख़ाना नं० 2 पर भी उनका रद्दी असर होगा।

नंबर 1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कैफ़ियत
बुध	वृहस्पति	बुध	वृहस्पति	वृहस्पति	बुध	शुक्र	मंगल	वृहस्पति	शनि	शनि	राहु	हर खाना नं० में उस जगह दिए हुए ग्रहों का जुदा-जुदा असर देखेंगेँ जैसा भी वह असर होवे वैसा ही उस ग्रह का दिए हुए खाने पर का होगा।
सूर्य मंगल शनि	शुक्र	शनि मंगल	सूर्य काचंद्र से सम्बन्ध	सूर्य राहु व केतु का सम्बन्ध	केतु शुक्र	बुध	शनि चंद्र का सम्बन्ध	बज़ाते ख़ुद	का राहु केतु के दाएं बाएं से सम्बन्ध	वृहस्पति का साथ	वृहस्पति से शनि का सम्बन्ध	

इधर उधर राशियों व ग्रहों के मिले जुले हिसाब से लिखे हुए उसूलों के मुताबिक़ लिया हुआ असर उस ग्रह का अपना और उस घर पर जहां वह बैठा हा होगा। मगर उपर लिखे ढंग का असर उस ग्रह का अपने बैठे हुए घर के अलावा ऊपर लिखे संबंधित ख़ाना नं० पर होगा।

दृष्टि–लाल किताब पेज नं० 103 पर 100 फ़ीसदी 50 फ़ीसदी 25 फ़ीसदी के घर तो लिखे हैं मगर अपने से बाद के सातवें को देखने वाले घर दर्ज नहीं है वह यह है।

देखता है ख़ाना नं० 3–9 को	बुध के ग्रह की अलाहदा ही कहानी है जो जुदी लिखी है।
देखता है ख़ाना नं० 6–12 को	संक्षेप से नं० 3 से नं० 9 को देखता हुआ बुध या
देखता है ख़ाना नं० 8–12 को	नं० 9 में बैठा हुआ बुध नं० 12 से नं० 6 को देखता

हुआ बुध सब ही ग्रह का फल बेमानी कर देता है। चाहे वह तमाम एक तरफ और बुध अकेला ही मुकाबला पर चाहे वह इस के दोस्त हो ंया दुश्मन। चाहे वह इसके साथ ही हों या उस से लक्ष्य मुकाबला पर।

ख़ाना नं० 8 पीछे को देखता है। इस उसूल पर नं० 8 ने नं० 2 को देखा और नं० 2 ने नं० 6 को तो नं० 8 का असर नं० 6 में 25 फ़ीसदी होगा। ओर नं० 6 ने नं० 12 को देखा तो नं० 8 का असर नं०12 में चला गया या नं० 8 अपना असर नं० 12 में 25 फ़ीसदी डालता है। अब नं० 2 में 100 फ़ीसदी नं० 8 का असर मिला है और नं० 12 में 2 6 की मारफ़त 25 फीसदी नं० 8 का असर मिला होता है। गोया नं० 2 देखता है 25 फ़ीसदी नं० 12 को

100 फ़ीसदी और अपने से बाद के सातवें को देखने का फ़र्क़

100 फ़ीसदी वाला ख़ाना अपने से बाद के ख़ाना में दूध में खाण्ड की तरह अपना असर ऐसे का वैसा ही मिला देता है। मगर अपने से सातवें वाला अपने से बाद के घर के असर को उलटा देता है। गोया दूध का बरतन ही ज़हरीला कर देता है। दोनों हालतों में दृष्टि का असर तो 100 फ़ीसदी ही होता है। फ़र्क़ थोड़ा सा यह है कि

(i) 100 फ़ीसदी के असर के ख़ाने सिर्फ़ बन्द मुट्ठी के अन्दर, अन्दर के निश्चित है। (यानी 1–7–4–10) मगर अपने से बाद के ख़ाने बाहर की तिकोनों के घरों से निश्चित हैं। मुट्ठी के अन्दर अपने से सातवें का उसूल न होगा और न ही बाहर वालों पर 100 फ़ीसदी का उसूल चल सकेगा।

(ii) जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 100 फ़ीसदी नज़र से देखता है तो वह देखने वाला ग्रह अपने बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना असर ऐसा मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला ही न होगा। जैसे दूध में खाण्ड (ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते हैं) और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर रहेगा कि वह पहले घर में था। मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ़ देखने वाले ग्रह का असर उस घर में (ग्रह में नहीं) ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टाग कटे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गई (दो चीज़ों का इकट्ठे होकर काम करना। मगर अपने–अपने वजूद को न छोड़ना यह मिलावट मंगल की कहलाती है)। बल्कि इस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के लिए बिल्कुल उलटा होगा। यानी अगर पहले घर वाले का पहले

घर में नेक असर था तो बाद के घर में मिलने के समय वह पहला असर अगर नेक था तो बाद वाले के लिए बुरा ही होगा। मगर पहले का स्वयं अपने लिए जैसा कि वह होवे वैसा ही रहेगा।

ग्रह का असर ग्रह में और ग्रह का असर दूसरे ग्रह के घर में - और उनका फ़र्क़

(1) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने से मतलब ये होगा कि पहले घर के बाद के घर के ग्रहों का असर एक ही होगा या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रह का असर ऐसा मिला कि जुदा न गिना गया। लेकिन इस मिलावट ने बाद के घर में यानी बाद के ख़ाना नं० में अपना कोई असर न डाला। हो सकता है कि उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों। पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के सब ग्रहों (जितने भी हों) में जब मिला तो हो सकता है कि अगर वह पहले सब के सब जो बाद के घर में थे दोस्त हों तो जब (अलिफ़) उन में पहले घर के ग्रह की ज़हर मिली तो वह सब के सब या इन में से चंद्र बाहम या चंद्र दूसरों के दुश्मन हो जावें। (बे) उन में दोस्ती पैदा कर देने की ताक़त का असर मिल जावे तो जो पहले दुश्मनी भाव के थे अब बाहम या चंद्र दूसरों से दोस्ती का सम्बन्ध कर लेवें।

(2) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जाने (ग्रह में नहीं) से मुराद होगी कि बाद के घर के ग्रह अलाहदा-अलाहदा ही लेंगे। मगर वह मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग-अलग होते हुए भी इस आ मिलने वाले ग्रह के असर का सबूत देंगे क्योंकि उस घर का ही असर आ मिलने वाले ग्रह के असर ने सब के लिए बदल दिया। या बाद के घर के लिए वह ख़ाना नं० ही किसी और असर का हो गया। इन ग्रहों ने अपना-अपना पहला असर इस घर की तमाम चीज़ों पर बदल कर दिया जब ग्रह से ग्रह मिला था तो अमली तौर पर यह फ़र्क़ हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था यानि बाद के घर का असर जिसमें कि वह ग्रह जिस का असर कि बदल गया बैठा था। सिर्फ़ अपना ही बदला हुआ असर उस ख़ाना की सिर्फ़ उन चीजों पर किया जो चीज़े कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह की और उस घर की जिसमें बैठा हुआ कि वह असर में बदला गया अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ़ उन ही चीज़ों पर दिया जो चीज़े कि उस ख़ाने की उन ग्रहों से संबधित हों। मसलन बुध व शुक्र दोनों का ही पक्का घर नं० 7 है। जिसमें ऊपर से ख़ाना नं० 1 का असर मिल सकता है। फ़र्ज़ करें कि ख़ाना नं० 1 में है सूरज और नं० 7 में हों शुक्र बुध अब सूरज का असर दोनों में मिल गया। शनि शुक्र व बुध दोनों ही सूरज की तरह चमकने लगे और सूरज का असर नं० 7 वालों के लिए अपना पहले घर में ऊंच हालत का होने की बजाए उलट बुरा न होगा। और वह असर दोनों ग्रहों में दूध में खाण्ड की तरह मिल जाएगा। यह है हालत 100 फ़ीसदी की। दूसरी मिसाल फ़र्ज़न शुक्र हो ख़ाना नं० 6 में और मंगल होवे ख़ाना नं० 12 में दृष्टि में 6-12 अपने से सातवें हैं। यानी शुक्र नं० 6 का जो असर है ख़ाना नं० 6 में इसका उलट होगा। ख़ाना नं० 12 में उस ग्रह के लिए जो ख़ाना नं० 12 में है वह है मंगल। गोया अब मंगल के लिए वह ख़ाना नं० 12 सब ही चीज़ों के असर के लिए जो ख़ाना नं० 12 की हैं मुबारक होगा क्योकि नं० 6 का शुक्र नीच है जब उसका असर नं० 12 में गया तो वह नं० 12 की तमाम चीज़ों के लिए ऊंच फल किस के लिए होगा। मंगल के लिए जो ख़ाना नं० 12 का है यानी कुण्डली वाले के भाई (मंगल) का गृहस्त

का सुख उस भाई के लिए उम्दा होगा। मगर कुण्डली वाले के शुक्र (औरत) का फल वैसे का वैसे ही मन्दा और नीच होगा। संक्षेप से 100 फ़ीसदी की मिलावट की हालत में कुण्डली वाले को ज़ाती अच्छा बुरा असर मिलेगा। मगर अपने से या सातवें की दृष्टि असर करेगी। बाद के घर पर जिस की वजह से उस घर का जो ग्रह उस कुण्डली वाले का जैसा भी संबंधि होवे उस पर असर देगी। मगर कुण्डली वाले पर सीधा असर न होगा। मसलन बाद के घर में सातवें मिलावट की हालत में शुक्र है। तो असर होगा बाद के घर का शुक्र पर उलट कर या औरतज़ात के संबंधि या कुण्डली वाले के ससुराल वग़ैरह पर अपने असर का उलट असर.....होता होगा। अगर पहले घर का कुण्डली वाले का मन्दा फल मिल रहा है। तो उस मन्दे फल का उलट अच्छा फल मिलता जाएगा। कुण्डली वाले को उस ग्रह के संबंधि रिश्तेदार को जो बाद के ग्रह से कुण्डली वाले के साथ सम्बन्ध हो। यानी मंगल हो तो भाई बुध हो तो बहन वग़ैरह

राहु केतु बाहम बराबर भी है दोस्त भी है और एक दूसरे के सातवें रहने के असूल पर दूसरे का असर उल्टाते भी है। वह कब-कब राहु केतु के अपने से सातवें के सम्बन्ध के लिए अरमान नं० 176 भी देखें।

ख़ाना नं० की चीज़ों पर राहु का असर	ख़ाना नं० का कुण्डली के	सूरज या चंद्र के साथ राहू होवे				ख़ाना नं० का कुण्डली के	सूरज या चंद्र के साथ तो केतु होगा				ख़ाना नं० की चीज़ों पर केतु का असर
		केतु से बाहमी सम्बन्ध	असर	खुद सूर्य का असर	खुद चंद्र का असर		राहु से बाहमी सम्बन्ध	असर	खुद सूर्य का असर	खुद चंद्र का असर	
ख़ाना नं० की चीज़ों पर ख़ुद राहु का मुकम्मल असर फ़रमान नं० 177 में लिखा है।	1	दोस्त	राशि फल	नेक	नेक	7	दोस्त	असर	मद्धम	प्रबल	ख़ाना नं० पर ख़ुद केतु का मुफ़स्सिल असर फ़रमान 179 में लिखा है
	2	बराबर	बैठक हर दो राहु की	निस्फ़	नेक	8	बराबर	बैठक 3 पापी ग्रह	निस्फ़	नेक उम्र निस्फ़ सुख	
	3	ऊंच	–	नेक	नेक	9	ऊंच	बैठक 3 पापी ग्रह	नेक	नेक	
	4	दोस्त	–	नेक	निस्फ़	10	दोस्त का	राशि फल	मद्धम	निस्फ़	
	5	बराबर	–	नेक	नेक	11	बराबर	राशि फल	निस्फ़	निस्फ़	
	6	ऊंच	–	नेक	नेक	12	ऊंच	राशि फल	नेक	मद्धम	
	7	दोस्त	राशि फल	निस्फ़	प्रबल	1	दोस्त	राशि फल	नेक	नेक	
	8	बराबर	बैठक तीनों पापी ग्रह	नेक	नेक उम्र निस्फ़ सुख	2	बराबर	बैठक राहु केतु	निस्फ़	नेक	
	9	नीच	बैठक तीनों पापी ग्रह	ग्रहण	ग्रहण	3	नीच	बैठक राहु केतु	–	निस्फ़	
	10	दोस्त	बैठक तीनों पापी ग्रह	मद्धम	निस्फ़	4	दोस्त	राशि फल	नेक	निस्फ़	
	11	बराबर	बैठक तीनों पापी ग्रह	नेक	निस्फ़	5	बराबर	राशि फल	नेक	नेक	
	12	नीच	बैठक तीनों पापी ग्रह	ग्रहण	निस्फ़	6	नीच	राशि फल	निस्फ़	ग्रहण	
		घर का	बैठक तीनों पापी ग्रह	प्रबल	मद्धम		घर का	राशि फल	प्रबल	प्रबल	

सूरज/चन्द्र ग्रहण राहु केतु की नीच हालतों में (जब दोनों ही नीच) ग्रहण होता है। और ग्रहण की मियाद (ग्रहण का सा अंधेरा) राहु की दो साल केतु की एक साल दोनों ही इकट्ठे तो कुल 3 साल ज़्यादा से ज़्यादा होगी। क्योंकि हो सकता हैं कि सूरज हो ख़ाना नं० 12 में   चंद्र हो ख़ाना नं० 6 में

और राहु भी हो ख़ाना नं० 12 में   और केतु भी ख़ाना नं० 6 में

मंगल बद – विस्तारपूर्वक जुदी जगह लिखा है। ये ग्रह हर तरह से निर्दयी और क्रूर होता है (वास्ते जान व उम्र और दौलत व धन सब के लिए मन्दा)

मंगलीक – सिर्फ़ ख़ाना नं० 6 का मंगल मंगल नेक होगा। मां–नानी–सांस ज़ननी औरत की उम्र पर हमला किया करता है। मगर धन दौलत पर हमला नहीं करता मंगल बद की तरह

मिले जुले असर की मिक़दार–

अरमान नं० 109

क़ायम ग्रह / देखा ग्रह	हर देखा जाने वाले या दूसरे हमसाया (मिले–जुले होने वाले) ग्रह की ताक़त होगी							
	वृहस्पति	सूर्य	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
वृहस्पति		2	$\frac{1}{2}$	3 $\frac{3}{4}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{3}{4}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{5}{6}$
सूर्य	$\frac{2}{3}$		$\frac{3}{4}$	$\frac{3}{4}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{2}$	दौलत 2/3 वालिद 1/2 सुख 1/3	ग्रहण	$\frac{1}{2}$
चंद्र	$\frac{2}{1}$	$\frac{2}{1}$		$\frac{2}{1}$	$\frac{2}{2}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{2}$	ग्रहण
शुक्र	$\frac{1}{2}$	$\frac{3}{4}$	$\frac{1}{2}$		$\frac{4}{3}$	$\frac{2}{2}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{2}{1}$
मंगल	$\frac{2}{1}$	2	$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{4}{3}$	$\frac{5}{1}$ सिफ़र	$\frac{1}{2}$
बुध	$\frac{1}{2}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{2}$	$\frac{2}{2}$	$\frac{2}{2}$		$\frac{5}{4}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{4}$
शनि	$\frac{5}{4}$	दौलत 2/3 वालिद 1/2 सुख 1/3	$\frac{1}{3}$	$\frac{4}{3}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{4}{5}$		$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{2}$
राहु	$\frac{5}{1}$	ग्रहण	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{2}$	$\frac{2}{2}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{2}{1}$		$\frac{2}{2}$
केतु	$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{2}$	ग्रहण	$\frac{2}{1}$	$\frac{1}{2}$	$\frac{3}{4}$	$\frac{2}{1}$	$\frac{2}{2}$	
दोस्ती दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्से की मिक़दार होगी औसतन सब के हिन्दसों में हिन्दसा का ऊपर का ज़ज़ू देखा जाने वाले ग्रह के असर की									

मिक़दार और नीचे का जज़ू देखने वाले ग्रह के असर की मिक़दार होगी। सिर्फ़ एक ही जज़ू से पूरा-पूरा हिन्दंसा देखा जाने वाले ग्रह की ताक़त से इच्छा होगी।

ग्रह की मिसाल-तरबूज़ में इसी तरह नारियल ख़रबूजा अनार, बेर वग़ैरह में (मिलावट का सम्बन्ध)

वृहस्पत डण्डी- सूर्य- वज़न

बुध- गोलाई- आकार

चंद्र- तरबूज़ के अन्दर का पानी

शनि- बीज या तरबूज़ की छाल (छिलका)

शुक्र- बीज का गूदा (मगज़)

राहु- ज़ायका

मंगल- बीजों के बग़ैर तरबूज़ का गूदा

केतु- धारियां- रंग बिरंग

अरमान नं० 110

ख़ास-ख़ास मिले जुले ग्रहों का इकट्ठा असर अरमान नं० 180 में लिखा है।

अरमान नं० 111

हाथ से बनाई हुई और टेवे की जन्म कुण्डली व चंद्र कुण्डली का ज़िक्र अरमान नं० 181 में ज़िक्र है।

अरमान नं० 112

लाल किताब पेज नं० 113 पर उम्र के हर हिस्से पर हर एक ग्रह के असर के साल वग़ैरह सिर्फ़उस आदमी की उम्र के हिसाब से दिए हैं जो आदमी कि लाल किताब में हर ग्रह के ऐन निश्चित समय के अन्दर-अन्दर ही पैदा हुआ होवे या दिया हुआ नक़्शा दिखलाता है कि इल्म सामुद्रिक के हिसाब से जो उम्रें कि हर ग्रह की निश्चित हैं। वह हर ग्रह की कब जाहिर होंगी। हर एक आम दुनियावी इंसान पर हर ग्रह का दौरा इसके जन्म के साल से और होगा। जो अरमान नं० 113 में बर्ष फल के बयान में इर्ज है। दुनिया के आगाज़ में या बुध के आकार में सब से पहले अंधेरा (शनि) मानकर उसमें सूरज की रोशनी मानी गई। वृहस्पति जो दोनों जहान का मालिक है सूरज शनि दोनों के साथ होता हुआ माना है। यानी हवा अन्धेरे में भी होती है। और रोशनी में भी हुआ करती है। मसलन शीशे का एक बक्स हो तो उसके अन्दर ख़ाली जगह में भी हवा होगी और बाहर उस बक्से के भी हवा होगी। बुध का शीशा अंधेरे को भी और रोशनी को भी दोनों तरफ़ अन्दर बाहर ज़ाहिर होने दे देगा। मगर वह शीशा या बुध कभी हवा को अन्दर से बाहर से अन्दर न जाने देगा। यही दुश्मनी बुध की होगी वृहस्पति से या बुध के आकाश की ख़ाली जगह में क़िस्मत को ज़ाहिर करने वाला बच्चा सूरज या शनि को जुदा-जुदा और इकट्ठे ही होने हवाने की मंजुरी बुध की ताक़त से दे देगा। या बुध का शीशा ही वृहस्पत के दोनों जहानों में गांठ लगा देगा और यह गांठ ही ग्रह है या यह आकाश ही सबके लिए इकट्ठे गांठा हुआ मैदान है या यही अक़्ल और बुध सब तरफ़ गांठे लगा रही है।

अरमान नं० 113

लाल किताब पेज नं० 114 पर दी हुई फ़ेहरिस्त के नं० 8-9 राहु केतु का ज़िक्र है और नं० 6 पर बुध का। गौर से देखें तो मालूम होगा कि राहु ख़ाना नं० 12 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है। इसी तरह केतु ख़ाना नं० 6 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है और उसकी नीच फल की राशि भी उस के लिए ख़ाना नं० 6 ही लिखी है।

राहु - जब वृहस्पत के घर ख़ाना नं० सिर्फ़ 12 में हो तो नीच होगा हालांकि वृहस्पत व राहु बाहम दुश्मन नहीं बराबर के हैं। राहु के वक़्त (या जब राहु वृहस्पत इकट्ठे हों) वृहस्पत चुप ही हो जाता है। राहु को आसमान (ख़ाना नं० 12) नीला रंग माना है। वृहस्पत की हवा को जब आसमान का साथ मिले या ज्यों-ज्यों हवा आसमान की तरफ़ ऊंची होती जाएगी हल्की होती जाएगी और दूनियादारी के सांस लेने के काम की घटनी जाएगी। लेकिन जब वही वृहस्पत की हवा नीचे की तरफ़ होती जाएगी तो केतु का साथ होता जाएगा (ख़ाना न० 6) तो हर एक की मददगार होगी। इसी उसूल पर राहु के साथ जब वृहस्पत हो तो न सिर्फ़ वृहस्पत का असर चुपचाप बन्द हालत का होगा बल्कि राहु का अपन असर बुरा होगा या दम (सांस वृहस्पत की ताक़त) घटने पर या दम घुटने या घट जाने पर नतीजा मन्दा होगा। इसके बर-खिलाफ़ अगर राहु को बुध के ख़ाली आकाश में खुला ही मैदान मिलता जावे मगर वह ख़ाना नं० 12 के माने हुए आसमान की बजाए बुध के ख़ाली आकाश में ही हो तो राहु का फल अच्छा बल्कि उम्दा असर देगा। या राहु को बुध का घर ख़ाना नं० 6 या बुध का साथ मिले तो नेक असर देगा। राहु है भी बुध का दोस्त। इसलिए दोनों के बाहम साथ से दोनों का फल उम्दा होगा। या दोनों ही ख़ाना नं० 6 में ऊंच फल के और दोनों में से हर एक या दोनों ही ख़ाना नं० 12 में मन्दे फल के होंगे। राहु को फ़र्जी तौर पर अगर आसमान मानें तो यह फ़र्ज़ी दीवार वृहस्पत को साफ़ कह देगी कि आइए वृहस्पत तो मेरे ऊपर गैबी जगह (दूसरी दुनिया) या मेरे नीचे इधर-इंसानी दुनिया में एक ही तरफ़ रही। गोया राहु ने वृहस्पत को दो जहान में से सिर्फ़ एक ही तरफ़ कर दिया या राहु के साथ पर वृहस्पत दो जहानों में से सिर्फ़ एक ही तरफ़ के जहान का मालिक रह जाता है। या दो में से एक तरफ़ के लिए वह (वृहस्पत) चुप ही गिना जाता है।

केतु - जब बुध के साथ हो तो या वह बुध के घर ख़ाना नं० 6 में हो तो नीच होगा। लेकिन जब केतु को वृहस्पत का साथ मिल जावे तो केतु ऊंच फल का होगा। केतु वृहस्पत बराबर का फल देंगे।

राहु केतु चूंकि अपने से सातवें देखने के उसूल पर के ग्रह हैं इसलिए राहु अगर 3-6 (बुध के घर) में ऊंच हुआ तो केतु वहां ख़ाना नं० 3-6 में नीच होगा। यही हाल है केतु का। अगर केतु ख़ाना नं० 9-12 (वृहस्पत के घर) में ऊंच हुआ तो राहु उन घरों में नीच होगा।

बुध - जब बुध होवे राहु के घर ख़ाना नं० 12 में तो नीच होगा। क्योंकि ख़ाना न० 12 उसके दुश्मन ग्रह वृहस्पत का है। और जब बुध होवे केतु के घर ख़ाना नं० 6 में तो ऊंच होगा क्योंकि वह राशि नं० 6 बुध की अपनी ही राशि है और बुध व केतु दोनों ही आपस में बराबर के ग्रह है। और दोनों ही शुक्र के दोस्त हुए हैं। बुध पर कोई असर न होगा। मगर

केतु (शुक्र) दोनों नं० 6 में नीच ही होंगे।

ख़ाना नं० 8 में मंगल शनि की बुरी नज़र को ख़ाना नं० 2 का मालिक वृहस्पत देख कर ही पहचान लेगा मगर बोलेगा नहीं। उस बुरे नज़र के असर को वृहस्पत जब ख़ाना नं० 2 से ख़ाना नं० 6 के मालिक केतु के यहां भेजेगा तो वहां बुध भी होने से केतु बोल कर (बुध की ताक़त) बता देगा। (कुत्ते को मौत के यम नज़र आ जाने पर कुत्ता पहले बोल कर बता देगा) हाथी राहु का जिस्म है तो उसका सूंड बुध है। शुक्र अगर केतु का जिस्म है तो बुध उसकी टेढ़ी दुम है।

राहु जब वृहस्पत के घर या वृहस्पत के साथ हो तो नीच फल का होगा। केतु जब बुध के साथ या बुध के घर हो तो मन्दे फल का होगा।

बुध जिसे कुत्ते की दुम माना है। जब केतु से अलग ख़ाना नं० 12 में हो तो वह ख़ाना नं० 6 के सभी ग्रहों को रद्दी कर देगा। चाहे वह बुध के दोस्त हो चाहे वे बुध के दुश्मन।

ग्रह की अपनी राशि – हर ग्रह अपनी निश्चित राशि में नेक फल देगा। बेशक उसकी वह राशि किसी दूसरे ग्रह का पक्का घर निश्चित हो चुकी है।

राशि नं०	**किस ग्रह की**	**कौन से ग्रह का पक्का घर निश्चित हो चुकी है**	**इस राशि नं० में किस ग्रह का फल नेक होगा**
3	बुध	मंगल	बुध का नेक फल बशर्ते कि मंगल नेक होवे
2	शुक्र	वृहस्पति	शुक्र का नेक
5	सूर्य	वृहस्पति सूर्य मिले-जुले	सूर्य का
6	बुध केतु	केतु	बुध का उत्तम केतु का खुद केतु की चीज़ों पर मदा मगर दूसरों पर अच्छा। अगर बुध भी साथ हो तो .... केतु व दूसरों का मन्दा बुध का अच्छा होगा। बुध की चीज़ों पर।
7	शुक्र	शुक्र बुध	शुक्र का
8	मंगल	मंगल शनि चंद्र	अगर तीनों में से हर एक अकेला-अकेला होवे तो अच्छा फल वरना मन्दा।

हर ग्रह की अपने असर ज़ाहिर करने की निशानी के लिए ख़ानावार चीज़ें

	वृहस्पति	सूर्य	चंद्र	शुक्र	मंगल नेक	मंगल बद	बुध	शनि	राहु	केतु
1	पेशानी ज़र्द रंग शेर नर	दिन का वक़्त दायां हिस्सा	दिल बाग़ बायां हिस्सा बाई आंख का डेला	रुखसारा पराई मिट्टी का शौक़	32 दांत बाज़ू	शुतर बे	ज़बान सिर	आग से जलना गन्दा कपड़ा हल्क का कौआ	ठोडी नाना नानी	टांग नानका घर
2	चने की दाल	गन्दुमी	माता दूध चावल रूहानी ताक़त	घी काफ़ूर	हिरण चीता	महार	मूंग सालम	माश सालम	सरसों ससुराल कच्चा धुंआ	इमली तिल
3	तालीम	दिन की औलाद	घोड़ा	शादी	पेट होंठ छाती	ऊंट	चौड़े पत्ते का दरख़्त	कीकर बेरी भवें	तंदुवा ज़बान का रिश्तेदार स्याह रंग	रीढ़ की हड्डी केला फोड़े
4	बारिश सोना	दायीं आंख का डेला	तालाब कुंआ	दही चौपाया चरिन्द	तलवार डेक का दरख़्त	–	तोता क़लई चमगादड़	मकान काले कीड़े	ख़्वाब	सुनना
5	नाक केसर	इकलौता लड़का बन्दर लाल मुंह का	चकोर	फल	भाड़ नीम का दरख़्त	हर तरह	फ़क़ीर की आवाज़ आशीर्वाद	बुद्धु लड़का सुरमा	औलाद का सुख बज़रिया दौलत छत	पेशाब गाह
6	मुर्ग़ा गरुड	गन्दुमी रंग पांव की खराबियां	ख़रगोश सफ़र	चिड़िया लड़की	नाभि धुन्नी	से सब्ज़	फूल फुलबहरी अण्डा मैना लड़की	कौआ	पूरा स्याह कुत्ता	चिड़ा परदेस
7	किताबें दमें की मर्ज़ मेंढक	लाल गाय रूहानी तुक़्स	खेती की ज़मीन	औरत हर दो मुहब्बत गाय सफ़ेद	दाल मसूल पहला लड़का	कदमा नज़र	बकरी घास हरी भोडी गाय	बीनाई स्याह रंग गाय चरिंद	सट्टे का व्यापार	गधा सूअर दूसरा लड़का
8	अफ़वाह नकारा ख़ल्क	रथ गाड़ी	समन्दर मिर्गी की बीमारी ग़ैबी मदद या आमदन	राग आलू	बच्चे का जन्म लेना बाज़ू के बग़ैर जिस्म	बद वाला	फूल टूटा हुआ दीमक	बिच्छू मौत तालु कनपटी, पुड़पुड़ी	मालीख़ौलिया झोला	कान
9	मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा जद्दी मकान	भूरा रीछ	जायदाद शांति	दही का सफ़ेद रंग	सुर्ख़ रंग	ऊंट	चमगादड़ सब्ज़ रंग थथला, गूंगा	टाहली लकड़ी स्याह रंग	नील रंग दहलीज़	दो रंगा कुत्ता
10	सूखा पीपल नुकसान ज़र तालीम ख़त्म	नेवला भूरी भैंस	पानी तै ज़मीन रात का वक़्त	मिट्टी	शहद मीठा भोजन	कीना साज़	दांत घास खुश्क शराबी कबाबी	मगरमच्छ सांप	गन्दी नाली ग़र्क़ी	चूहा
11	गिल्ट गुलम्मा	सुर्ख़ तांबा	चांदी मोती सफ़ेद खूनी कुंआ	मोती दही रंग सफ़ेद	सिन्दूर लाल	काला काना	सीप हीरा फटकड़ी	लोहा	नीलम	कीमती दो रंगा पत्थर
12	सांस आम हवा पीतल, पीपल का दरख़्त	भूरी कीड़ी दिमांगी खराबी मस्नूई सूर्य	सफ़ेद बिल्ली खुशामद	चौपाया का सुख लक्ष्मी का सुख	बुलंद आवाज़	लावल्द	भेड़	मछली तख्त पोश मस्नूई तांबा बादाम	हाथी तंदुवा समन्दर का खोपड़ी	छिपकली मुतबन्ना

मसलन पहला लड़का औलाद में सब से पहला ही लड़का इकलौता कहलाता है। मगर औलाद में लड़की के बाद का लड़का मगर लड़कों में पहला लड़का होगा पहला लड़का।

ग्रह की निशानी – हर ग्रह अपना असर अपनी संबंधि चीजों से ज़ाहिर कर देगा। नर ग्रह नरों पर और स्त्री ग्रह स्त्रीज़ात पर असर करेंगे। स्त्री ग्रह (चंद्र शुक्र) मय बुध के साथ जब नर ग्रह होवें नेक फल होगा।

इंसान की उम्र और ख़ाना नं० की उम्र का 100 साला चक्कर का फ़र्क़

इंसान की उम्र ख़त्म हो या न हो मगर ख़ाना की उम्र ख़ास वक़्त तक निश्चित है जो निश्चित वक़्त पर ख़त्म गिनी जाएगी। इंसानी उम्र के लिए शनि के हाल में लाल किताब पेज नं० 316 ता 321 विस्तारपूर्वक लिखा है। और ख़ाना नं० की उम्र लाल किताब पेज नं० 321 के हाथ के ख़ाके के हाशिये में दी हुई है। यानी फ़र्क़ यह है कि किसी

ख़ाने की उम्र	100	75	90	85	औलाद	80	85	मौत	बुजुर्ग	90	धर्म स्थान	90
ख़ाना नं०	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

इंसान की 120 साला उम्र ही हो जावे या हो जाने वाली मालूम होती होवे तो उसके लिए हर एक ख़ानाकी चीज़ों का ज़्यादा से ज़्यादा अरसा सिर्फ़ इस नक्षा में दिए हुए सालों तक असर माना जा सकता है। जब ख़ाना की उम्र ख़त्म हो गई मगर इस इंसान की उम्र अभी चलती ही होवे तो इस ख़त्म वक़्त वाले ख़ाने की चीज़ों पर इसकी क़िस्मत का सम्बन्ध न होगा। हर ख़ाने की उम्र का शुरू इंसान के अपने जन्म दिन से शुरू गिनेंगे। 100 साल के बाद फिर वही दौरा शुरू होगा जो जन्म दिन में था। दांत वग़ैरह नए आएंगे। अब जिन घरों ने पहले 100 (सौ) साला चक्कर में बुरा फल दिया पहला दिया हुआ फल न देंगे।

अरमान नं० 113

ग्रहों की मियादें

ग्रह की उम्र का अर्सा

जब कोई ग्रह हर तरह से क़ायम अपने वजूद में स्वयं अपनी ही सम्पूर्ण ताक़त का (चाहे ऊंच चाहे नीच या घर का मालिक मगर किसी दूसरे का इस पर या इस में कोई असर न हो रहा हो) तो वह अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा। या इसकी उम्र होगी ख़ाना नं० 5 लाल किताब पेज नं० 116 पर दी हुई यानी वृहस्पत 16 साल– सूरज 22 साल– चंद्र 24 साल वग़ैरह (कुल ग्रहों की 120 साला मजमूआ से अपना–अपना हिस्सा)

ग्रह के असर का आम अर्सा

अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह ऊपर की शर्त (ग्रह की उम्र का अर्सा) से बाहर दोस्तों या दुश्मनों के बरताओं में हो जावें तो उस के असर के लिए लाल किताब पेज नं० 116 ख़ाना नं० 3 में दिये हुए साल लेंगे। यानी वृहस्पत 6 साल सूरज 2 साल और चंद्र एक साल वग़ैरह।

अपनी मियाद के शुरू दरमियान या आख़ीर पर हर ग्रह असर करता है। इसलिए ख़ाली हिस्से की आम मियाद में हर ग्रह के साथ कौन से ग्रह का असर शामिल होगा।

दौरा ग्रह का	असर का वक़्त	शुरू	दरमियान	आख़ीर	ग्रह का दौरा	असर का वक़्त	शुरू	दरमियान	आख़ीर
वृहस्पति 6	दरमियान	केतु	वृहस्पति	सूर्य	बुध 2	यकसां	चंद्र	मंगल	वृहस्पति
सूर्य 2	शुरु	सूर्य	चंद्र	मंगल	शनि 6	आख़ीर	राहु	बुध	शनि
चंद्र 1	आख़ीर	वृहस्पति	सूर्य	चंद्र	राहु 6	..	मंगल	केतु	राहु
शुक्र 3	दरमियान	मंगल	शुक्र	बुध	केतु 3	..	शनि	राहु	केतु
मंगल 6	शुरु	मंगल	शनि	शुक्र					

ग्रह की महांदशा – किसी ग्रह के बुरे और लगातार ही बुरे असर देने की मियाद उसके महादशा में ही जाना कहलाता है महांदशा के लिए लाल किताब पेज नं० 116 ख़ाना नं० 4 में दिए हुए साल लेंगे। यानी वृहस्पत 16 साल– सूरज 6 साल– चंन्द्र 10 साल वग़ैरह।

उम्र के एक 35 साला चक्कर में महांदशा का सिर्फ़ एक ही ग्रह ही हो सकता है। और सारी उम्र में चाहे एक ही ग्रह की लगातार चाहे किसी दो की एक के बाद दूसरे की साथ ही लगती हुई चाहें एक के बाद दूसरी या दूसरे के कुछ फ़र्क़ देकर हो ज़्यादा से ज़्यादा सिर्फ़ दो बार ही महांदशा आ सकती है। अगर किसी पितृ ऋण या बुज़ुंगों के पापों के सबब से एक महांदशा का ग्रह अपनी मियाद उम्र के 35 साला चक्कर के आख़री 35वें साल ख़त्म हो ओर इतिफ़ाक दूसरा महांदशा का ग्रह उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर के शुरू साल से ही जारी हो जावे तो पहली महांदशा का आख़री साल और दूसरी का पहला साल या दोनों का बीच का साल दो दफ़ा गिना जाएगा। यानी महांदशा का कुल उर्सा दोनों महांदशा के मजमुआ से न सिर्फ़ एक साल कम होगा– बल्कि पहली का आख़री साल और दूसरी का शुरू वाला साल या दरमियानी साल ख़्वाह वह दोनों महांदशाएं लगातार हों चाहे दरमियान में कुछ फ़र्क़ देकर होवें साफ़ साल होगा। या

दरमियानी साल महांदशा का तो न होगा। मगर मियाद में गिना जाएगा। या बर्ष फल के हिसाब और राशि नं० के ग्रह बोलने के हिसाब से कोई ऐसा ग्रह आवाजे जो महांदशा वाले ग्रह का दुश्मन हो तो पहली महांदशा का आख़री साल भी साफ़ साल होगा मसलन शुक्र की महांदशा होती है 20 साल जब ऐसी हालत वाली दोनों ही शुक्र की महांदशा आ जावें तो दो दफ़ा की 20 साल के हिसाब से कुल 40 साल के अर्सा से एक साल कम या 39 साल का कुल ज़माना दोनों महांदशों का होगा और दरमियानी 20वां साल साफ़ साल होगा। सबसे लम्बी महांदशा है भी शुक्र की ही। इसलिए माना है कि सारी उम्र में किसी इंसान का बुरे से बुरा ज़माना 39 साल ही ज़्यादा हो सकता है। जिस के दरमियानी साल को महांदशा का साल न गिनेंगे। कुण्डली में महांदशा वाले ग्रह की

दो हालतें - (i) जब किसी ग्रह के ''बराबर के'' ग्रह रद्दी हों मगर वह स्वयं रद्दी न हो। लेकिन बर्ष फल के हिसाब से वह जिस साल तख़्त का मालिक बने और उम्र के सालों के हिसाब से राशि नं० के ग्रह बोलने पर वह ख़ुद भी रद्दी हो जावे तो जिस दिन से वह कुण्डली के राशि नं० के ग्रह बोलने के टकराओ पर ख़ुद रद्दी हुआ उस दिन से वह महांदशा में हो गया माना जाएगा। बेशक वह तख़्त पर पहले ही आ चुका होवे।

(ii) जब कोई ग्रह कुण्डली में ख़ुद भी रद्दी होवे और उसके बराबर के ग्रह भी रद्दी हों तो जिस दिन वह ग्रह तख़्त का मालिक हुआ महांदशा में हो गया गिना जाएगा। चाहे राशि नं० के हिसाब से बोलने वाले ग्रहों के टकराओ का साल कब ही जारी हुआ हो या जारी होवे लेकिन अगर ऐसी महांदशा के वक़्त कुण्डली के ख़ाना नं० के हिसाब से उम्र की गिनती पर बोलने वाले ग्रह उस महांदशा वाले ग्रह के दोस्त ग्रह ही बोल पड़ें तो वह बोलने वाले दोस्त ग्रह अपने महांदशा वाले दोस्त ग्रह के महांदशा में हो जाने के मातम में उस ग्रह को (महांदशा वाले) कोई नेक फल पैदा करेंगे। सिर्फ़ दुनियादारों की तरह आम साधारण मातमपुर्सी करके चले जाएगे।

जिस ग्रह की महांदशा हो वह अपनी महांदशा के ज़माने में उस महांदशा के नीचे दिए हुए सालों में (इन्सान की उम्र के हिसाब से नहीं। बल्कि सिर्फ़ महांदशा के अर्सा की मियाद के सालों में कोई ख़ास ख़ास साल)अपना आम असर जैसा कि उसका कुण्डली में मौके के अनुसार इस ख़ास-ख़ास साल में होवे कायम रखा करता है। यानी ये ज़रूरी नहीं कि वह उस ख़ास-ख़ास साल में मन्दा ही होवे क्योंकि महांदशा में है या किसी और तरह से रद्दी है।

महांदशा के वक़्त न सिर्फ़ महांदशा वाले ग्रह का मन्दा फल होगा। बल्कि उस महांदशा वाले ग्रह के ''बराबर के ग्रह'' भी (लाल किताब पेज नं० 105 फ़रमान (109) चाहे वह) कुण्डली में अपनी अपनी ऊंच फल के ही या उस महांदशा वाले के साथी ग्रह या उनके साथ ही एक ही ख़ाना में क्यों न हों सो जाया करते है। यही हाल दोस्त ग्रहों का होगा जो सिर्फ़ मातमपुर्सी कर के चले जाया करते है लेकिन ख़ुद बुरा नहीं करते और न ही महांदशा वाले का मन्दा फल अच्छा करते है। महांदशा वाले के लिए इसके महांदशा के ज़माने में जख़्म पर नमक डालने का सा

असर करते हैं।

महांदशा वाले ग्रह के ज़ाती असर का साल

ग्रह	महांदशा के कुल साल	ज़ाती असरक़ायम रखने का साल	कैफ़ियत
वृहस्पति	16	10वां	यह दसवां साल वृहस्पति की गुरु पदवी और रियायती साल के अलावा होगा
सूर्य	6	ताक़ या टोंक	जो साल कि दो पर पूरा तक़सीम न होवे 1-3-5वां
चंद्र	10	जुफ़्त या जोड़ा	जो साल कि दो पर पूरा तक़सीम हो जावे 2-4-6वां
शुक्र मंगल	20 7	11वां चौथा	इस ग्रह के आम दौरा के 3 साला अर्सा का पहला साल शुक्र में मंगल के ग्रह के असर प्रबल होने का होता है
बुध शनि राहु केतु	17 19 18 7 वां	5वां 6 छठा 7वां तीसरा	**महांदशा का धोका** लम्बे अर्से वाली अकेली और दो छोटे-छोटे अर्सा वाली मिली-जुली महांदशा में बारह साल का धोका-सा लगा करता है कि शायद मौत ही आने लगे मगर वह सिर्फ़ धोका ही होता है। और बेमायनी महांदशा का जो साल होवे (उम्र का नहीं) इस अर्सा के सालों से एक दो वग़ैरह ता बारह साल में हर साल के विषय में ग्रह कुण्डली के अनुसार अपने असर में धोका दिया करते हैं। ख़्वाह इन 12 सालों में धोका देने वाले ग्रह महांदशा में हों या न हों।
इन्सानी	उम्र औसतन	एक सौ बीस साल	

महांदशा का	साल ग्रह	सूर्य	चंद्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहु	मौत	पितृ ग्रह	वृहस्पति	शुक्र	राशि ख़त्म
		1	2	3	4	5	6	5	8	9	10	11	12
							आम तब्दीली हालत						

महांदशा के असर के वक़्त महांदशा वाले ग्रह का कुण्डली के सिर्फ़ उस ख़ाना नं० का जिसमें कि वह बैठा हो और उन्ही चीज़ों कि उस ग्रह (महांदशा वाला)की उस बैठे हुए ख़ाना कि संबंधित हों पर मन्दा असर होता है

''बराबर'' के ग्रहों का जो महांदशा वाले के महांदशा शुरू होने के वक़्त उस महांदशा वाले के लिए सो जाते है। सोया हुआ असर भी सिर्फ़ उन ही चीज़ों से संबंधित होगा जो कि वह बराबर के ग्रह उसे दे सक्ते थे। उस ख़ाने/उन ख़ानों के हिसाब से जिसमें कि वह महांदशा वाला और वह बराबर वाले कुण्डली में बैठे हों। यानी कि अगर महांदशा न होती तो जो असर इनका हो सकता था वह अब महांदशा में सोया हुआ होगा। उसूल दोस्त ग्रहों की मातमपूर्सी और दुश्मन ग्रहों का जख़्म पर नमक मलने की तरह का होगा। उल्टा इस के महांदशा वाले ग्रह का ख़ुद अपना असर दूसरों के लिए चाहे वह 'बराबर के' दोस्त या दुश्मन ही महांदशा का कोई असर न होगा। वह असर वैसा ही होगा जैसा कि महांदशा के बग़ैर होना था। याद रहे कि धोके के 12 साला चक्कर में हर सातवां (राहु का) या आठवां (ख़ुद मौत निमाणी का) साल तब्दीली हालत हुआ करता है चाहे महांदशा ही क्यों न हो। इस तब्दीली हालत के लिए लाल किताब पेज नं० 10 फ़रमान नं० 23 की हिदायत मददगार होगी।

धोके का 12 साला चक्कर – महांदशा के अलावा तमाम उम्र पर भी अपना असर किया करता है। इस चक्कर के 12 सालों में हर साल के सामने लिखे हुए ग्रह अगर दुरूस्त और क़ायम या अपनी बुनियाद पर कुण्डली में खड़ें न हों (यानी बुध वग़ैरह से बुनियाद खो़खली या दुश्मन ग्रहों से ख़राब और नष्ट वग़ैरह) तो नाबालिग़ (चाहे बच्चा चाहे मर्द जैसा कि बालिग़ नाबालिग़ होने की शर्त अरमान नं० 12 13 में लिखी गयी है।) की क़िस्मत बल्कि उम्र तक बेमायनी होगी और बालिग़ के लिए ये धोका उस ग्रह का जो उम्र के हिसाब से मालूम होता होवे राशि फल का होगा यानी शक का फ़ायदा उठाया जा सकता है।

धोके का 12 साला चक्र

सूर्य	चंद्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहु	मौत	पितृ ग्रह	वृहस्पति	शुक	राशि ख़त्म
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120

धोके के ग्रह का धक्का – जिस तरह उम्र का पहला 35 साला चक्कर जब दोबारा आता है तो अपने पहले दौरे के बुरे ग्रहों के असर में बदलाव कर दिया करता है। उसी तरह ही ये 12 साला धौके का चक्र महांदशा के ज़माने में और उमर आम के जमाने में (हर ग्रह की महांदशा के सालों के अर्सा का उम्र से टुकड़ा) जब दूसरी बार (एक ही ग्रह का दूसरी बार धौके का साल) आवे तो सोए हुए ग्रहों के असर को जगाया करता है और बदलते हालात किया करता है चाहे भली तरफ़ हो चाहे बुरी तरफ। जिस का उपाओ फ़रमान नं० 23 लाल किताब पेज नं० 10 पर लिखा ही हुआ है।

ऊपर लिखा हुआ चक्कर देखने का ढंग :-

महांदशा के वक़्त ख़्वाह किसी भी ग्रह की हो ज़्यादा से ज़्यादा एक से चालीस तक हिन्दसे उसी तरतीब में लिख लेंगे जिस तरह की ऊपर की फ़ेहरिस्त में दिखलाए हैं। गोया 12 ख़ानों में हिन्द से लिखे मौजूद हैं। मगर ऊपर इन ख़ानों की पेशानी पर ग्रहों के नाम न लिखें। अब जिस ग्रह की महांदशा शुरु होवे पहले दफ़ा या पहली ही महांदशा वाले ग्रह का नाम एक के हिन्दसे वाले ख़ाने के ऊपर लिख दें और बाक़ी ग्रहों को नक़्शे में दी हुई तरतीब से यानी सूर्य के बाद के ख़ाने में केतु वग़ैरह अब जिस हिन्दसे की पेशानी पर कोई ग्रह लिखा हुआ होगा वह साल उस धोके वाले ग्रह के असर का महांदशा के सालों में तबदीली हालात का होगा। महांदशा में पड़ा हुआ ख़्वाह कोई भी ग्रह हो लेकिन अगर दो महांदशा लगातार एक के बाद दूसरी शुरु हो जावें तो दोनों के दरमियान के साल वाले हिन्दसे के ग्रह का असर बिल्कुल न होगा लेकिन बाक़ियों के बदस्तूर होगा यानी महांदशा गिनी तो पूरे साल ही जाएगी मगर दरमियानी साल महांदशा के बुरे ही असर का ज़रूर ही न होगा। मसलन शुक्र की दोनों ही 35 साला चक्करों में दो लगातार महांदशा आती मान लें तो महांदशा के सालों के ग्रह मन्दरजा ज़ैल होंगे।

शुक्र	राशि ख़त्म	सूर्य	चंद्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहु	मौत	पितृ ग्रह	वृहस्पति
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

इन्हीं चालीस मन्दे सालों के धोके को खोलने के लिए चालीस दिन रियायती या चालीस दिन तक हर उपायों को मियाद निश्चित की है।

ऊपर दिये हुए हिन्दसे दरअसल महांदशा के अर्सा या महांदशा की मियाद का हर साल नं० है उम्र का साल नहीं। अगर उम्र का कौन-कौन सा साल महांदशा में किस-किस ग्रह के धोके के साल है मालूम करना है तो जिस जगह अब हिन्दसा नं० एक लिखा है वहां उम्र का वह साल नं० लिख दें जिस साल कि महांदशा शुरु हुई और

महांदशा मज़कूल की मियाद के बराबर हिन्दसे उम्र के सालों के तरतीबवार लिखकर उम्र के सालों का साल नं० देख लें इस लिए हुए नक़्शे में तो महांदशा की मियाद के साल नं० हैं। यानी हिन्दसा नं० एक से मुराद है कि महांदशा का पहला साल हिन्दसा नं० दो से मुराद है महांदशा का दूसरा साल। कल्पना करते हुए किसी की 23 साला उम्र में शुक्र की महांदशा शुरु हुई तो जहां अब नं० एक का हिन्दसा लिखा है वहां 23 का हिन्दसा लिखा तो नं० दो की जगह 24वां हिन्दसा उम्र के साल का हो जाएगा या इस तरह हिन्दसे लिख लेने पर उम्र के सालों में महांदशा की मियाद का हर एक साल नं० मालूम हो जाएगा।

पहली महांदशा शुक्र की बीसवें साल ख़त्म हुई और दूसरी भी बीसवें साल शुरु हुई गोया बीसवां साल दोनों महांदशों का दरमियानी साल हुआ वह दरमियानी बीसवां साल असर देखने के लिए मिटा ही दिया। यानी इस बीसवें साल न शुक्र ही महांदशा का गिनेंगे न ही शनि को जो बीसवें साल की पेशानी पर लिखा गया है। अब कुण्डली के हिसाब से जहां-जहां कि शुक्र और शनि हों और मौका के अनुसार जैसा-जैसा उनका असर हो गिना जावेगा शेष सालों में हर ग्रह जो कि ऊपर के नक़्शे की पेशानी पर लिखा है महांदशा के सालों में धोका देगा और तबदीली हालत पैदा करेगा (एक तरफ़ तो फ़हरिस्त के हिसाब से जो ग्रह आवे वह ले लेंवें) दूसरी तरफ़ वर्ष फल के हिसाब से जिस ग्रह का दौरा हो (उम्र के जिस साल कि देखाना हो) वह ले लेंवे। अब इन तीनों ग्रहों में से अगर एक ही ग्रह दोनों तरफ़ या दो दफ़ा निकल पड़ें वह ग्रह धोके का ग्रह होगा। महांदशा के ज़माने में (अच्छी या निहायत बुरी) क्योंकि शुक्र महांदशा में है दुमन ग्रह भी सताएंगे। मगर वह भी अपने-अपने सालों में यानी एक तरफ़ जो ऊपर के नक़्शा के सालों में सूर्य चंद्र राहु बुरा फल देंगे सिर्फ़ पक्के दुश्मन ही दुश्मन ग्रह गिने जाएंगे। यानी सिर्फ़ वही दुश्मन ग्रह जो शुक्र के सामने लाल किताब पेज नं० 105 फ़रमान 109 की फ़ेहरिस्त में दुश्मन के ख़ाना में लिखे हैं। बाक़ी जो ग्रह रह गए वह वृहस्पति व मंगल हैं शुक्र के बराबर के। वह चुप या सो गए गिने जाएंगे और शनि बुध, केतु तीनों शुक्र के दोस्त हैं वह सिर्फ़ मातमपुर्सी कर के चले जाएंगे। दूसरी तरफ़ तख़्त का मालिक ग्रह व राशि नं० बोलने वाले ग्रहों का मिला-जुला असर भी साथ होगा। महांदशा का 11वां साल शुक्र के लिए महांदशा के ज़माने में रियायती साल होगा। ऊपर के नक़्शा की पेशानी के ख़ाने राशि ख़त्म, मौत, पितृ ग्रह का मतलब यह होगा कि

( ) मौत - उस शख़्स के ख़ाना नं० आठ में जो ग्रह हैं वे गिने जावें। उन सालों के हिन्दसे की पेशानी पर जहां कि लफ़्ज़ मौत लिखा है अगर ख़ाना नं० 8 उस शख़्स की कुण्डली का ख़ाली हो तो लफ़्ज़ मौत के ख़ाना के नीचे लिखे हुए हिन्दसों वाले साल धोके के साल न होंगे और अगर ख़ाना नं० 8 (बमुजिब जन्म कुण्डली) कोई ग्रह हो / कई ग्रह हों तो वह ख़ाना नं० 8 वाले ग्रह दो दफ़ा (अगर एक ही तो वह अकेला/ कई हों तो हर एक) अपने-अपने साल जहां कि हर एक या वह अकेला ऊपर दिए धोके वाले नक़्शे में हो) धोका देंगे। इसी तरह ही पितृ ग्रह-से मुराद ख़ाना नं० 9 (जन्म कुण्डली के चन्द्र कुण्डली के नहीं) के ग्रहों से होगी और राशि ख़त्म से मुराद ख़ाना नं० 12 के ग्रहों से होगी। महांदशा के बग़ैर बाकी उम्र के सालों में ऊपर का उसूल बदस्तूर होगा। सिर्फ़ पेशानी भरने का ढंग ज़रा फ़र्क पर होगा।

आम उम्र में धोके का 12 साला चक्कर – एक से लेकर 120 साल तक/जो औसत उम्र माना गया है ऊपर दी हुई तरतीब से तमाम हिन्दसे लिख देवें। कुण्डली वाले के वर्ष फल के हिसाब से जिस साल सूर्य का दौरा पहला दफ़ा शुरु होता होवे है उस साल के हिन्दसे वाले ख़ाने की पेशानी पर लफ़्ज़ सूर्य लिख दें और ऊपर दी हुई तरतीब से पेशानी के बाक़ी ख़ानों में बाक़ी तमाम ग्रह वग़ैरह लिख दें और सालों के सब ख़ाने आगे पीछे के पूरे कर लेंवे और ऊपर के ढंग पर धोके का साल देख लेवें।

फ़र्ज़न उम्र जारी के साल धोके की फ़ेहरिस्त में है। बुध उधर वर्ष फल के हिसाब से उम्र के जारी साल का ग्रह या राशि नं० के हिसाब से जारी उम्र का ग्रह भी बुध ही आ जावे तो बुध धोके का ग्रह होगा। यानी अगर एक ही साल में वर्ष फल का ग्रह या राशि नं० बोलने का ग्रह और धोके की फ़ेहरिस्त का ग्रह एक ही हो जावे तो वह ग्रह आम उम्र के लिहाज़ से धोके का ग्रह होगा (1) और अगर आम उम्र में धोके का ग्रह और महांदशा की फ़ेहरिस्त का धोके का ग्रह एक ही आ जावे तो वह ग्रह मौत तक की नौबत के लिए धोका देगा।

(2) धोके का ग्रह ज़रूरी नहीं कि नीच ग्रह ही होवे। सब से ऊंच होता हुआ भी एक ग्रह धोके का ग्रह गिना जाता है। ख़्वाह वह लाख ऊंच हालत का ही क्यों न हो।

नाबालिंग़ की हालत में या नाबालिंग़ रहने के दिन तक ये धोका का ग्रह फल का या पक्का धोका होगा। और उम्र ही ख़त्म कर देने तक हो सकता है। मगर बालिग़ की हालत या बालिग़ होने के दिन से ये धोका राशि फल का (यानी काबिल ए उपाओ) होगा। मगर हर दो हाल में धोका होगा ज़रूर। वह किस बात में हर एक ग्रह के धोके का साल आम उम्र और महांदशा के ज़माने के सालों में तो मालूम हो गया और ग्रह का नाम भी पता लग गया। अब धोका देने वाला ग्रह जन्म कुण्डली में जिस ख़ाना नं० का होवे उस ग्रह का उस बैठे हुए होने के ख़ाने के मुताबिक़ जिन-जिन चीज़ों का ताल्लुक़ हो उनमें वह ग्रह उस साल धोका देगा। जिस तरह महांदशा के ज़माना में हर ग्रह को अपना ज़ाती फल (बमुजब जन्म कुण्डली) देने का रियायती साल मिल गया गिना जाता है। इसी तरह ही इंसान की उम्र के = हर सातवें (आम हालत) / हर आठवें (अल्प आयु वाले) तबदीली हालात होगी। उस सातवें ख़त्म या आठवें शुरू के दरमियानी अर्सा में तब्दीली हालात ज़रूर होगी। ख़्वाह कोई ग्रह 12 साला धोके के नक़्शे के हिसाब से या वर्ष फल वग़ैरह के हिसाब से प्रबल हो रहा हो।

ऊपर का तमाम हिसाब अगर सालों में लिख कर देखा तो साल के बारह महीनों में भी वही असर ज़ाहिर होगा। यानी नक़्शे में सालों की जगह लफ़्ज़ महीना समझें और महीनों के वक़्त ख़ाना नं० एक से मुराद बैसाख का महीना लेंगे। जिसके बाद देसी नामों के बारह महीनें होंगे। यानी (1) बैसाख (2) जेठ (3) आसाढ़ (4) सावन (5) भादों (6) असौज (7) कार्तिक (8) मघर (9) पोह (10) माघ (11) फागुन और (12) चैत तरतीबवार होंगे। फिर देसी महीनों के मुताबिक़ अंग्रेज़ी तारीखें भी देखी जा सकती हैं। साल और महीने के बाद ख़ास दिन के लिए इसी नक़्शे में सिर्फ़ 1-32 तक हिन्दसे लिख कर नं० एक के हिन्दसे वाले ख़ाने पर जन्म दिन अरमान नं० 9 का ग्रह लिख कर तमाम ग्रह पूरे कर लें।

धोके के चक्कर की मियाद एक साल होती है। मगर इस एक साल में से भी आगे पूरा वक़्त देखेने के लिए हर एक ग्रह के तख़्त की मालकियत के ज़माने के दौरा में इसके शुरु दरमियान या आख़ीर पर के दूसरे साथियों का सम्बन्ध भी देख लें जो कि अरमान नं० 113ए में दर्ज़ है।

महांदशा दरअसल किसी ग्रह के किसी एक ख़ास हिस्सा की ताक़त के सो जाने से मुराद होती है। जिस तरह कि तमाम जिस्म से कोई अंग नकारा हो जावे। किसी ग्रह की कुण्डली के बारह ही ख़ानों के असर का सो जाना ग्रह के नष्ट हो जाने से मुराद होती है।

महांदशा के ज़माना में महांदशा वाले ग्रह पर इसके दुश्मन ग्रहों का असर इस ग्रह की अपनी सम्बन्धित रेखा का यकायक टूट जाना या मौत की निशानी होती है।

महांदशा के ज़माना में महांदशा वाले ग्रह से इसके दोस्त ग्रहों का मातम पुर्सी के लिए ही आ मिलना इस ग्रह का अपनी सम्बन्धित रेखा ख़त्म होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना होगा। यानी वह मौत की निशानी होते हुए भी उम्र व ज़िन्दगी का मालिक होगा बल्कि तबदीली हालात की निशानी होगी।

दो ग्रहों की महांदशा = अगर किसी वक़्त दो ग्रह महांदशा / के मालूम होते हों तो जो उन दो

में से रद्दी हो जाए वह महांदशा का होगा। मस्नूई ग्रहों और असल ग्रहों के टोले में से मस्नूई हालत वालों से जो रद्दी होगा वह महांदशा में होगा। मसलन सूर्य और मस्नूई सूर्य (शुक्र बुध) दोनों ही टोले शक्की हो जावें तो मस्नूई हिस्से का जो ज़्यादा रद्दी होवे। वह महांदशा का होगा।

क़ायम ग्रह या दुरुस्त और नेक बुनियाद का ग्रह = कभी महांदशा में न होगा और हर ग्रह जहां कि वह राशि फल का है। (अरमान नं० 6 नीच कहलाएगा। मगर महांदशा का न होगा क्योंकि काबिले उपाओ ही हो चुका है।)

महांदशा में कौन-कौन से ग्रह कितने-कितने साल सोए हुए होंगे

महांदशा का ग्रह	वृहस्पति	सूर्य	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
ग्रह जो सो जाएंगे	शनि 6	मंगल बद 6	वृहस्पति 2	वृहस्पति 6	शुक्र 1	वृहस्पति 6	वृहस्पति 16	वृहस्पति 8	वृहस्पति 6
	राहु 6		मंगल 6	मंगल 6	शनि 6	मंगल 6	केतु 3	सूर्य	सूर्य
	केतु 3		शनि 2	बुध 2	राहु	शनि 5		चंद्र 1	बुध
				शनि 6		केतु		शुक्र 3	शनि
								मंगल 6	
कुल साल	15	6	10	20	7	17	19	18	7

ऊपर की फ़ेहरिस्त में जिस तरतीब से ''बराबर के '' ग्रह लिखे हैं वह उसी तरतीब से एक के बाद दूसरा सोते हुए होते जाएंगे। जिन ग्रहों के सामने कोई हिन्दसा नहीं लिखा गया वह ग्रह निरपक्ष गिने जाएंगे।

वृहस्पति = की कुल महांदशा 16 साल होती है। मगर इस की महांदशा के ज़माना में सो जाने वाले ग्रहों के सालों की मीज़ान कुल 15 साल है। ये एक साल का फ़र्क वृहस्पति अपनी महांदशा के वक़्त बहैसियत गुरु अपने ज़ाती असर के लिए रखा करता है जो इस की महांदशा का शुरू होने का ही साल होता है। या यूं कहो कि वृहस्पति की महांदशा के कुल 15 साल मन्दे और 16 साल कुल में से महांदशा का पहला ही साल वृहस्पति की अपनी मर्ज़ी का होता है। इसी तरह ही वृहस्पति हर एक सोने वाले ग्रह का पहला साल भी दूसरे ग्रहों की तरफ़ से स्वयं वृहस्पति की गुरुयाई के लिए रख लेता है। जिस में भी वृहस्पति का अपनी मर्ज़ी का फल होगा। इस तरह पर 16 साला महांदशा के अर्सा के सालों में वृहस्पति का स्वयं अपना अख़्तियार किस-किस साल हुआ :

वृहस्पति की महांदशा के वक़्त सो जाने वाले ग्रह शनि 6 साल राहु 6 साल और केतु 3 साल यानी वृहस्पति की महांदशा के वक़्त तमाम पापी ग्रह 15 साल मियाद के होते हैं। वृहस्पति की महांदशा शुरु होवे तो इस महांदशा का साल नं० 1 पहला वृहस्पति स्वयं अपनी गुरुयाई का ले गया।

शनि के 6 सालों में से (2-3-4-5-6-7)	(शनि का पहला मगर वृहस्पति का दूसरा साल वृहस्पति शनि से गुरुदान का ले गया।)
राहु के छह सालों में से (8-9-10-11-12-13)	(ये आठवां साल है वृहस्पति की महांदशा का मगर राहु का होगा पहला साल)
अपना बतौरे ग्रह	वृहस्पति राहु से गुरुदान का ले गया।
केतु के 3 सालों में से (14-15-16)	(ये केतु का पहला मगर वृहस्पति का 14वां साल है) वृहस्पति केतु से गुरुदान का ले गया।

खुलास्तनं वृहस्पति अपनी महांदशा के वक़्त का पहला दूसरा आठवां दसवां चौदहवां कुल 5 साला तो इस तरह ले गया। और अपने दूसरे उसूल के अनुसार कि अपनी उम्र का पहला हिस्सा यानी 8 साल कभी बुरा फल न देगा। भला असर ख़्वाह देवे ख़्वाह न देवे। यानी वृहस्पति की महांदशा दरअसल नौवें साल से शुरू होगी और 8 साल बाक़ी में से भी 14वां और 10वां दो साल और अपनी मर्ज़ी के रख़ लेगा।

धोके के ग्रह के मानी - लफ़्ज़ धोका दरअसल गुमराही का ही नाम है। धोके का ग्रह अगर तारने वाला हुआ तो तारेगा दो गुना। अगर मारेगा तो भी दो गुना गर्ज़ेकि धोके के च्रक के ज़ाहिर होने वाला ग्रह होता है। दो गुना ताक़त का ख़्वाह भला करे ख़्वाह बुरा करे।

महांदशा के वक़्त में किन-किन ग्रहों पर महांदशा का असर न मानेंगे

महांदशा में होवे	तो कौन-कौन से ग्रह बदस्तूर होंगे
वृहस्पति	सिवाए पापी ग्रहों के सब और ग्रह बदस्तूर होंगे।
सूर्य	सिवाए मंगल बद के बाक़ी और सब ग्रह बदस्तूर होंगे।
चंद्र	बुध-शुक्र-सूर्य-राहु-केतु।
शुक्र	सूर्य-चंद्र-राहु-केतु।
मंगल	सूर्य-चंद्र-वृहस्पति-केतु-बुध-राहु नदारद।
बुध	सूर्य-चंद्र-शुक्र-राहु-केतु नदारद।
शनि	सूर्य-चंद्र-मंगल-बुध-शुक्र-राहु।
राहु	शनि-बुध-केतु-सूर्य नदारद
केतु	चंद्र-शुक्र-मंगल-राहु-सूर्य नदारद व बुध नदारद।
	महांदशा का असर ग्रह सम्बन्धित चीज़ों के असर के ज़रिए भी ज़ाहिर और सबूत दे देता है।

नष्ट ग्रह के वक़्त उस ग्रह का मस्नूई हालत का ग्रह काम देता है।

दो पक्के ग्रहों से मस्नूई ग्रह कौन-कौन सा बन जाता है

पक्का ग्रह	वूहस्पति	सूर्य	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
मस्नूई ग्रह	सूर्य	बुध	सूर्य	राहु	सूर्य बुध	वृहस्पति	शुक्र वृहस्पति	मंगल शनि	शुक्र शनि
	शुक्र	शुक्र	वृहस्पति	केतु	मंगल नेक	राहु	केतु सुभाओ	ऊंच	ऊंच
	ख़ाली				सूर्य शनि		मंगल बुध	सूर्य शनि	चंद्र शनि
	हवाई				मंगल बद		राहु सुभाओ	नीच	नीच

मस्नूई = मौत दरअसल पापी ग्रहों के काम का नतीजा है। और ग्रह पापी ग्रह तीन हैं।

पाप राहु – परशा चलाने वाला परसु मगर परशे कुल्हाड़े का साथ न होगा।

केतु – सिर्फ़ ख़ाली परसा या परशा कुल्हाड़ा–कुल्हाड़े वाले का साथ न होगा।

पापी शनि–परसराम–परसु–परसा दोनों की जमा यानी कुल्हाड़ा व कुल्हाड़े वाला दोनों ही इकट्ठें।

मंगल के दो हिस्से – सूर्य बुध (नेक) केतु शुक्र होता है।

नेक व बद – सूर्य शनि (बद) राहु शुक्र होता है।

सूर्य–शनि (रात दिन इकट्ठे ही) ख़ाली बुध होते हैं। अगर बुरी ख़ासियत में हो तो राहु नीच या मंगल बद होगा।

असर – मस्नूई बनावट के ग्रहों का असर ख़ास–ख़ास बातों का होगा।

मस्नूई वृहस्पति – औलाद की पैदाईश का मालिक

मस्नूई बुध–इज़्ज़त शौहरत

मस्नूई सूर्य – सेहत का मालिक

मस्नूई–शनि–सख़्त बीमारी

मस्नूई चंद्र – वाल्दैनी खून (नत्फा) का सम्बन्ध

मस्नूई राहु–झगड़े फसाद

मस्नूई शुक्र – दुनियावी सुख (बजुज़ औलाद)

मस्नूई केतु–ऐश का मालिक होगा।

मस्नूई मंगल औलाद ज़िन्दा रखने का मालिक (बेल सब्ज़ी का मालिक) हालत की बनावट के ग्रह की हालत में उसके हर दो ग्रहों का असर जुदा–जुदा कर लेना या दो का मिला–जुला कर लेना हो सकता है। यानी राशि फल का होगा।

वर्ष फल – भाग्य का वर्षभर का हाल देखने के लिए ये आवश्यक जुज़ है। और सामुद्रिक में वाक़िया की बुनियाद पर बनाया हुआ वार्षिक पुल ज़्यादा तसल्ली बख़्श होगा। वाक़ियात से मुराद खुशी या ग़मी के पक्के वक़ूआ से होती है। मसलन शादी का दिन महीना और साल। किसी हक़ीकी खून के सम्बन्धी की पैदाईश या मौत। नर ग्रहों स्त्री ग्रहों या मुख़न्नस ग्रहों के सम्बन्धित असर में से किसी एक चीज़ का पक्का वाक़िया। जन्म–दिन (तारीख़ पैदाईश नहीं इतवार सोमवार वग़ैरह) इंसान किस ग्रह का है–वाला ग्रह या इसका जद्दी या स्वयंसाख़ता मकान किस ग्रह का है वाला ग्रह। जन्म कुण्डली में लग्न के ख़ाना का ग्रह और अगर लग्न का ख़ाना ख़ाली हो तो जन्म राशि के घर का मालिक ग्रह गर्ज़ेकि जो भी सही–सही और दुरुस्त व पक्का वाक़या मिल सके ले लेवें। फ़र्ज़न किसी व्यक्ति की शादी का वाक़या पक्का मिल गया है। पहली शादी का (अगर कई दफ़ा शादी हो तो पहली शादी का दिन ही गिनने के क़ाबिल होगा) जो उस की 17 साला उम्र में हुई। यानि 17 साला उम्र से शुक्र शुरु हो गया। अगर शादी का साल महीना दिन मालूम न हो और पहली शादी की औरत की मौत का दिन महीना या साल ही मालूम होवे तो औरत के गुज़र जाने या शुक्र के ख़त्म होने का साल होगा। लाल किताब के पेज नं० 116 ख़ाना नं० 3 में हर एक ग्रह की दी हुई आम मियाद में शुक्र

का अर्सा 3 साल दिया है। 17 साला उम्र में शादी हुई तो उसका शुक्र का ग्रह 17 से शुरु हो गया मान कर 3 साल 19 साला उम्र के आख़ीर तक रहा। अगर 17 साला उम्र में औरत मर गयी तो 17वें साल या औरत के मरने के दिन शुक्र ख़त्म हुआ या औरत की मौत के दिन के दिन से 3 साल पहले से चल कर मरने के दिन तक शुक्र का दौरा था।

वर्ष फल बनाने के लिए ग्रहों का दौरा यानी कौन ग्रह किस ग्रह के पहले या बाद अपना असर देगा। लाल किताब के पेज नं० 7 पर तरतीबवार दिया है। यानी सब से पहले वृहस्पति के बाद सूर्य के बाद चंद्र वग़ैरह आख़री 9वां नं० केतु का है। ग्रहों की आम मियाद के सालों की तादाद और तरतीब भी लाल किताब के पेज नं० 116 ख़ाना नं० 3 पर दर्ज है। सारे ही ग्रहों की कुल मियाद का मजमूआ 35 साला उम्र का एक चक्र होगा।

मिसाल - किसी व्यक्ति का शुक्र शुरु हुआ 17 साला उम्र में तो वर्ष फल होगा-

6 साल वृहस्पति था	2 साल सूर्य था	1 साल चंद्र था	3 साल शुक्र हो	6 साल मंगल होगा	2 साल बुध होगा	6 साल शनि होगा	6 साल राहु होगा	3 साल केतु होगा
							1 ता 4	5 ता 7
8-13	14-15	16	17-19	20-25	26-27	28-33	34-39	40-42
43-48	49-50	51	52-54	55-60	61-62	63-68	69-74	75-77
78-83	84-85	86	87-89	90-95	96-97	98-103	104-109	110-112
113-118	119-120	जितने साल तक उम्र चलती या हो जाने वाली होवे लिख देवें।						

पहचान – कि वर्ष फल दुरुस्त है या ग़लत। उम्र के शुरु होने का पहला साल या हिन्दसा नं० 1 जिस ख़ाना में हो वहां देखें कि पेशानी पर कौन से ग्रह का नाम लिखा है। दुरुस्त हालत में हिन्दसा नं० 1 के ख़ाने वाला ग्रह उस की कुण्डली के ख़ाना नं० 9 या ख़ाना नं० 1 में होगा। या उस शख़्स का जद्दी मकान हिन्दसा नं० 1 के ख़ाना के ग्रह से मिलता या वह शख़्स स्वयं उस ग्रह का होगा। जन्म के दिन का ग्रह (इतवार के लिए सूरज। सोमवार के लिए चंद्र वग़ैरह) भी हिन्दसा नं० 1 के ग्रह का हो सकता है। इस जांच के लिए मंगल और शनि या सूर्य और बुध या सूर्य और चंद्र एक ही गिने जाएंगे। वरना लाल किताब पेज नं० 113 पर दिया हुआ वर्ष फल इस्तेमाल करें।

अगर ऊपर ज़िक्रकर्दा बातों से कोई भी दुरुस्त मालूम न होवे यानी हिन्दसा नं० 1 से न मिले तो कोई और वाक़या ले कर वर्ष फल बनावें।

उम्र के कौन से साल में किसी राशि नं० (खाना नं०) के ग्रह असर देंगे

हर ख़ाने में उम्र के 3 साल होंगे।

ख़ाना नं०	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	मेष	वृक्ष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
	1 ता 3	4ता 6	7ता 9	19ता 21	22ता 24	25ता 27	28ता 30	31ता 33	34ता 36	10ता 12	13ता 15	16ता 18
	37ता 39	40ता 42	43ता 45	55ता 57	58ता 60	61ता 63	64ता 66	67ता 69	70ता 72	46ता 48	49ता 51	52ता 54
	73ता 75	76ता 78	79ता 81	91ता 93	94ता 96	97ता 99	100ता 102	103ता 105	106ता 108	82ता 84	85ता 87	88ता 90
	109ता 111	112ता 114	115ता 117						118ता 120			

उम्र के हिसाब से असर का ख़ाना नं० देखते जावें। अगर कोई ख़ाना नं० ख़ाली ही आ जावे तो इस ख़ाली ख़ाना नं० की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस ख़ाने में हो वह ख़ाना लेवें। मगर ये वहम न करें कि एक ही ख़ाना के ग्रह कई बार क्यों बोले।

एक दिन का हाल

(1) हर एक व्यक्ति की क़िस्मत का आगाज़ उस के जन्म के समय के ग्रह (अरमान नं० 9) के शुरु होने से गिना जाता है। यानी इस की क़िस्मत का दिन जन्म समय से शुरु कर के 24 घण्टा बाद तक पूर्ण होगा।

(2) ज्योतिष की बनाई हुई कुण्डली (जन्म कुण्डली हो या चंद्र कुण्डली) जो लाल किताब के इल्म सामुद्रिक के अनुसार ख़ाना नं० 1 देकर तैयार कर ली हो (अरमान नं० 181) या ख़ाना नं० एक से ही शुरु होने वाली इल्म सामुद्रिक की कुण्डली बात की बुनियाद होगी। नाबालिग़ कुण्डली (अरमान नं० 12)

(क) पहले हफ़्ते में – (जन्म समय से शुरु करके उम्र का पहले सात दिन का अर्सा) ख़ाना नं० एक दी हुई वाली कुण्डली मौजूद है क़िस्मत का असर देखने के लिए।

(अलिफ़) तख़्त के मालिक ग्रहों – के लिए (यानी वर्ष फल वाली फेहरिस्त) जन्म समय का ग्रह सब से पहले दर्जा पर शुरु होने वाले गिनेंगे। उसके बाद लाल किताब पेज नं० 7 पर की दी हुई तरतीब से बाक़ी ग्रहों को लिखेंगे। मगर मियाद हर एक ग्रह की तख़्त की मालकियत की 35 साला चक्र सालों की बजाए अब सिर्फ़ 40 मिनट फ़ी यूनिट के हिसाब की जो लाल किताब पेज नं० 117 पर दर्ज है होगी। यानी आम वर्ष फल में जहां 35 साला चक्र में वृहस्पति को 6 साल तख़्त

का मालिक गिना है। वहां अब उम्र के पहले हफ़्ते के वर्ष फल के लिए वृहस्पति की तख़्त की मालकियत का ज़माना सिर्फ़ 4 घण्टे (पेज नं० 117 लाल किताब) होगा। इसी तरह की बाक़ी सब ग्रहों की मियाद होगी।

(बे) राशि नं० के ग्रहों – के लिए तमाम ख़ानों के ग्रह उस तरतीब से बोलेंगे जो तरतीब कि अरमान नं० 13 में लिखी है। मगर वह सालों की मियाद की बजाए अब सिर्फ़ दो-दो घण्टों फ़ी ख़ाना की मियाद पर यक्के बाद दीग़रे गिने जाएंगे। (जीम) धोके के ग्रह – का साथ अरमान नं० 113 ए आम उम्र वाले हिसाब का होगा। जो कि 32 दिन की तरतीब का है। 32 दिन (एक महीना) के बाद धोके के ग्रह का ''12 महीने के हिसाब वाला'' चक्र चला जावेगा। फिर एक साल की उम्र के बाद ''120 साल में हर साल के असर का'' धोके का ग्रह साथ देखेंगे। हर हालत में धोके के ग्रह का धक्का न भूल जाएंगे।

(ख) दूसरे हफ़्ते से 12 हफ़्ते तक – तख़्त के मालिक ग्रह राशि नं० के बोलने वाले ग्रह। धोके के ग्रह का चक्र वग़ैरह सब के सब पहले हफ़्ते की उम्र वाले होंगे। सिर्फ़ कुण्डली में थोड़ा फ़र्क होगा। वह ये कि जिस खाने का पहले नं० एक का हिन्दसा दिया था दूसरे हफ़्ते के शुरु होने के समय से अब हिन्दसा नं० 2 देकर बाकी सब ख़ाने बतरतीब पूरे करेंगे।

तीसरे सप्ताह के शुरु समय से उसी एक नं० का हिन्दसा दिया जाने वाले ख़ाने को नं० तीन का हिन्दसा देकर बाक़ी ख़ानों के नं० बिलतरतीब कर लेंगे। गर्ज़ेकि 12 सप्ताह तक उसी तरह ही हिन्दसा नं० 12 तक चलाया जाएगा। 12 सप्ताह की उम्र हो चुकने पर (जबकि 9 ग्रह 12 ख़ानों में घूम गए गिन जाएंगे। या 9 × 12 = 108 की माला चक्र पूरा हो जाएगा) कुल उम्र के लिए ही ख़्वाह उम्र का 85वां दिन ही हो 10000वां दिन हो कुल गुज़री हुई उम्र के दिन बना लेंगे। और कुल दिनों की तादाद को सात पर तकसीम कर के सप्ताह बना लेंगे। और बाक़ी बचे हुए दिन छोड़ देगें। ख़्वाह वह छह दिन तक ही क्यों न हों। अब जिस क़दर पूरे-पूरे सप्ताह बने हुए उन पूरे-पूरे सप्ताहों की तादाद को 12 पर तक़सीम करेंगे। जो हिन्दसा बाक़ी बचे वह हिन्दसा नं० उस ख़ाने को दे देवें जिस ख़ाने को कि नं० एक का हिन्दसा देते थे। यानी अगर एक बाक़ी बचा था तो नं० एक का हिन्दसा दे दिया। दो बचे तो नं० 2 का हिन्दसा दे दिया। इसी तरह ही 11 तक का हिन्दसा हो सकता है। अगर बाक़ी सिफ़र हो तो 12 का हिन्दसा देंगे। तख़्त के मालिक ग्रह राशि नं० के बोलने वाले ग्रह धोके के ग्रह का चक्र वग़ैरह सब पहले ही उसूल वाले बदस्तूर होंगे।

बालिग़ कुण्डली – जन्म समय का ग्रह शुरु नं० पर रख कर वर्ष फल (तख़्त के मालिक ग्रहों की सूची) बना लेंगे। जिसको पूर्ण करने के लिए सिर्फ़ 40 मिनट वाली यूनिट का हिसाब होगा। राशि नं० के हिसाब से बोलने वाले ग्रह उसी तरतीब से लेंगे। जो 3-3 साल के अन्तर पर (अरमान नं० 113ए) बोलते हैं। मगर एक दिन में असर के लिए हर एक ख़ाने के ग्रहों की मियाद फ़ी ख़ाना सिर्फ़ दो घण्टे होगी। एक दिन के बाद एक महीना तक असर के लिए ग्रहों के 35 साला चक्र के हर ग्रह के हिन्दसों को दिनों में लेंगे। एक महीने के बाद एक साल तक इन्हीं हिन्दसों को लाल किताब पेज नं० 123) ख़ाना नं० मियाद दिन की यूनिट लेंगे। धोके के ग्रह का दौरा भी ''आम उम्र के सालों'' वाला होगा।

जिसका दौरा एक महीना तक ''32 दिन वाला'' एक साल की उम्र तक ''12 महीने वाला चक्र'' ओर 129 साल की उम्र तक एक-एक साल वाला चक्र होगा। लेकिन (1) अगर जन्म समय (पैदाईश का ख़ास समय) मालूम न हो मगर जन्म दिन मालूम हो तो उम्र गुज़री हुई के कुल दिन लेंगे। और सात बारह की भाग वाला ऊपर लिखा उसूल इस्तेमाल करेंगे।

(2) अगर जन्म समय और जन्म दिन दोनों ही मालूम न हों तो किसी ख़ास वाकया को लेकर बनाए हुए वर्ष फल की मदद लेंगे।

(3) अलिफ़ - नाबालिंग़ हालत में अरग जन्म समय व जन्म दिन मालूम न हों लेकिन साल महीना मालूम हो तो किसी खास वाक़या से लिया हुआ वर्ष फल लेंगे और राशि नं० के ग्रह अरमान नं० 13 की तरतीब से होंगे। धोके का चक्र आम उम्र का ही होगा।

(बे) बालिग़ हालत में भी अगर जन्म समय व जन्म दिन मालूम न हों लेकिन साल महीना मालूम हो तो वर्ष फल किसी ख़ास वाक़या से लेंगे। राशि नं० के ग्रह 3-3 साल के अन्तर वाले हिसाब के होंगे। धोके का चक्र बदस्तूर आम उम्र के हिसाब का होगा।

वर्ष फल व राशि नं० के ग्रहों का बाहमी सम्बन्ध

वर्ष फल में उम्र के साल का ग्रह जो भी कोई निश्चित होवे। वह क़िस्मत के मैदान में ग्रह फल का कुण्डली के ख़ाना नं० 1 का दुनिया में तख़्त का मालिक और हुक्मरान राजा होगा। राशि नं० के ग्रह उसी साल के जिस साल का कि वर्ष फल वाला ग्रह होवे राशि फल के या उस राजा के साथ वज़ीर होंगे।

वर्ष फल में तमाम ग्रहों की आम मियाद के एक चक्र में 35 साल होते हैं। और राशि नं० के तमाम ख़ानों की मियाद के एक चक्र में 36 साल गिने हैं। क़िस्मत का हाल देखने के लिए वर्ष फल वाले ग्रह को राजा और राशि नं० वज़ीर की जोड़ी 35 और 36 साला जुदी मियाद होने के सबब इकट्ठी न चल सकी। इस एक साल के फ़र्क़ में चलने वाला ''धोके का ग्रह'' का जुदा चक्र होता है। वर्ष फल के दो चक्र 35×2 = 70 साल और राशि नं० के दो चक्र 36×2= 72 साल या इंसान 70-72 का जब हो जावे तो बाप बेटे की क़िस्मत एक जगह इकट्ठी मानी है। यानी बाप काबिले एतबार (बलिहाज़ क़िस्मत स्वयं बाप की अपनी क़िस्मत) न रहा। 70 ओर 72 के फ़र्क़ का सिर्फ़ एक 71वां साल ''धोके का ग्रह'' का अर्सा माना है। जिसके महांदशा के ज़माना के अर्सा के 40 साल के धोके वाले असर के लिए 40 दिन का आम उपाओ या चालीस रियायती दिन का अर्सा माना है।

अरमान नं० 114

ग्रह का उपाओ - (अलिफ़) रूहबुत के झगड़े की तरह ग्रह को रूह और राशि को बुत मानें तो ग्रह फल के उपाओ की इस इल्म में गुंजाईश नहीं मानी गयी। राशि या ग्रह या राशि/ग्रह फल के शक का इलाज़ और ग्रहों से ''धोके के ग्रह'' के धोके के धक्के से बच कर चलना इंसानी ताक़त में माना गया है। बुध के ग्रह का हीरा (सब्ज़ रंग पत्थर क़ीमती) सब को काटता और मारता है। मगर वह स्वयं इसी बुध की दूसरी निहायत नरम चीज़ कलई (टांके लगाने वाली धात) उस हीरे में सूराख़ डाल देती है। इसी तरह ही पापी ग्रह सब ग्रहों पर अपना धक्का लगाते हैं मगर उनको (पापी ग्रहों को) मारने के लिए स्वयं अपना ही पाप (लफ़्ज़ पाप से मुराद राहु केतु हैं। पापी से मुराद शनि राहु केतु

तीनों ही हैं। यानी राहु के मन्दे असर को केतु का उपओ दुरुस्त करेगा। और केतु के मन्दे असर को राहु का उपाओ नेक करेगा) महाबली होगा। और पाप की बेड़ी भर कर डूबेगी। मुख़्तसर तौर पर पापी ग्रहों का उपाओ या तो उन ग्रहों की सम्बन्धित चीज़ों की पालना करनी होगी या उनकी सम्बन्धित चीज़ों से उनकी आशीर्वाद या माफी ले लेना कारआमद होगा। मसलन शुक्र की सम्बन्धित चीज़ गाय और आम इंसानी खुराक या सब अनाज मिले मिलाए मुक़र्रर हैं। शुक्र की मदद के लिए गाय को अपनी खुराक का हिस्सा देवें। काग़ रेखा धन दौलत की हानि शनि की मन्दी निशानी कौए को रोटी का हिस्सा देवें। या औलाद के लिए दुनिया के दरवेश कुत्ते को अपनी खुराक का टुकड़ा बख़्शें।

(ब) हर ग्रह की मस्नूई हालत में दो ग्रह होते हैं। जब कोई ग्रह मन्दा हो जावे तो उसकी मस्नूई हालत में दिए हुए दो ग्रहों में से उसी एक ग्रह को हटाने के लिए जिस के हट जाने से नतीजा नेक हो जावे कोई और ग्रह क़ायम करें। जो बुरे फल के हिस्से के देने वाले ग्रह को गुम ही या नेक कर देवें। मसलन शनि मन्दा होवे..... तो इसके मस्नूई हालत की जुज़ ''शुक्र वृहस्पति'' में वृहस्पति के हटाने के लिए अगर बुध क़ायम कर दें तो शुक्र बाक़ी रह जाएगा। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर शनि नेक होगा।

(ख) लाल किताब में लिखे हुए उपाओ के अलावा हर एक पक्के ग्रह का उपाओ तो लाल किताब के अनुसार ही लेंगे।

(ग) हर एक ग्रह की मस्नूई हालत में दो ग्रह इकट्ठे माने गए हैं पक्के ग्रह का जिस चीज़ का असर या जो असर मन्दा होवे उस असर के देने वाले ग्रह को उसकी मस्नूई जुज़ से हटाने की कोशिश करें। मसलन शुक्र जब ख़राब करे या ख़राब होवे तेा शुक्र के मस्नूई जुज़ राहु केतु में से राहु को हटा दें तो बाक़ी केतु होगा। यानी शुक्र के नेक करने को राहु को नेक कर लेना मदद देगा।

(ख) मंगल बुध मंगल बद व शनि के सांप की ज़हर या मंगल बुध शनि मिले-जुले को मृगशाला (हिरण की खाल) पहाड़ी ज़बान में मृग को चीता कहते हैं। चीते की ख़ाल नहीं माना है। जिस पर ज़हरीला सांप न आएगा* और बुध शुक्र शनि की मिली-जुली चीज़ गऊग्रास अपनी खुराक से तीन टुकड़े रोटी के गां (गाय) कां (कौआ) और कुत्ते को देना अच्छा फल देगा वास्ते इज़्ज़त मान धन दौलत और औलाद के नेक और उम्मदा होने के वग़ैरह। मतलब ये कि मन्दे फल वाले ग्रह के लिए मन्दा करने वाली चीज़ को दूर करें। *मंगल बद के बुरे असर से मृगशाला बचा देगी।

(ग) पितृ ऋण या कुण्डली वाले के बुजुर्गों का पाप बाप के बिलावजह कुत्ते को मार देने के पाप में इस का लड़का दुख भोगने का सबब होगा। यानी कुण्डली वाले पर इसके बाप के पाप का बोझ भी हो सकता है। जिस समय तक केतु व वृहस्पति का उपाओ न करे पितृ ऋण का बोझ लड़के की 16 ता 24 साला उम्र तक दूर न होगा। इसी तरह ही सब ग्रहों का हाल हो सकता है। ख़्वाह ऐसे व्यक्ति के (कुण्डली वाले के) अपने ग्रह लाख राज योग ही क्यों न हों। बुरा असर दो ग्रहों का होगा। और उपाओ भी दो ग्रहों का करना होगा।

पितृ ऋण - से इच्छा खुफिया असर होता है। और धोके के ग्रह या उसके धक्के से ज़ाहिर हो जाएगा। गुनाह तो कोई करे मगर सज़ा इसकी कोई और भुगते। मगर भुगतेगा इस गुनाह करने वाले का असल क़रीबी सम्बन्धी। ख़ाना नं० 9 के ग्रहों से इच्छा होती है जब इस घर में या इस घर के मालिक ग्रह यानी वृहस्पति के किसी दूसरे घर में कोई और ग्रह (एक या एक से ज़्यादा) जो या तो बाहम दुश्मनी पर हों या वह दोनों या हर एक वृहस्पति की ताक़त को ख़राब करते

या वृहस्पति के असर में ज़हर मिलाते हों तो पितृ ऋण होगा। राहु को वृहस्पति के चुप करवाने वाला गिना है। वह अगर वृहस्पति का मुंह बन्द कर के स्वयं मन्दी हालत का असर वृहस्पति के सम्बन्ध से (यानी या तो वह वृहस्पति के घरों में हो या वृहस्पति के पक्के घर में) देवे तो पितृ ऋण का बोझ होगा। इसी तरह ही और ग्रह भी चंद्र की ख़राबी में माता तरफ़ के मातृ ऋण हो सकते हैं।

कल्पना करते हुए कुण्डली वाले के बाप के कुत्ते मान तो कुण्डली वाले पर वह वृहस्पति व केतु का पितृ ऋण हुआ। जो कुण्डली वाले पर बालिग़ होने की (कुण्डली) उम्र से 16 ता 24 साल रह सकता है। कुण्डली वाले के रिश्ते के सम्बन्ध और पाप की किस्म से ऋण का नाम निश्चित होगा।

ऋणों की क़िस्में -जैसी करनी वैसी भरनी नहीं कीती तो करके वेख

किसका बाप होवे	पिता का पाप	माता का पाप	अपना ही पाप	कुटुम्बी पाप	हक़ीकी रिश्तेदारों का पाप	धी बहन का पाप	जानवरों का का पाप	ससुराल का पाप	फकीर कुत्ता का पाप
तो ऋण होगा	पितृ ऋण	मातृ ऋण	ज़ाती ऋण	स्त्री ऋण	भाई का ऋण	बहन का ऋण	ज़ालिमाना ऋण	अनजन्मे का ऋण	दरगाही ऋण
ग्रह समबन्धित	वृहस्पति	चंद्र	सूर्य	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
कैफ़ियत	सराप	नीयत बद	आक़बत ख़राब	पेट मार	मित्र मार	ज़बानी धोका	जीव हत्या	दग़ा बेईमानी	बद चलनी
बालग़ी दिन से	16 साल	24 साल	22 साल	25 साल	28 साल	34साल	36 साल	42 साल	48 साल

(घ) धोके के ग्रह का जो छुपा छुपाया होता है इलाज भी देख लेना ज़रूरी होगा।

(ङ) अगर लड़का लड़की बाप के लिए दोनों ही मन्दे फल वाले पैदा हो जावें तो सूर्य लड़का बुध लड़की या लड़की के गले में तांबें का टुकड़ा मुबारक़ होगा। जो बुध को दबा लेगा।

(च) पापी ग्रहों के साथ जब वह अकेले-अकेले की बजाए कोई दो इकट्ठे हो तो मंगल को क़ायम करना मुबारक़ होगा। बशर्ते कि उस कुण्डली वाले का अपनी कुण्डली के हिसाब से मंल राशि फल का हो। यानी अगर मंगल ख़ाना नं० 1 या 8 में होवे तो मंगल का उपाओ ने होगा। बुध काम देगा।

इसी तरह ही स्त्री ग्रहों (चंद्र शुक्र) में बुध की ताक़त मदद देगी। बशर्ते कि बुध खाना नं० 3-6-7 या 9 का न हो। ऐसी हालत में वृहस्पति काम देगा।

सूर्य शनि के झगड़े में वृहस्पति मददगार होगा। बशर्ते कि वह ख़ाना नं० 2 का न हो। ऐसी हालत में मंगल मददगार होगा। खुलास्तन उपाओ के समय देख लें कि जिस ग्रह के ज़रिए मदद लेने को हैं वह स्वयं कहीं ग्रह पुल का ही तो नहीं है।

मियाद उपाओ - हर एक उपाओ की मियाद कम अज़ कम 40 दिन और ज़्यादा से ज़्यादा 43 दिन होगी। जो अपनी निस्फ़ और चौथाई हिस्सा मियाद में भी अपना असर ज़ाहिर कर देगा।

ख़ानदानी उपाओ पितृ ऋण मातृ ऋण वग़ैरह या कुल घर वालों की मदद के लिए उपाओ की मियाद होगी।

तो वही 40 हद 43 मगर हर रोज़ लगातार की बजाए सप्ताहावार लगातार होगी। यानी हर आठवें दिन जो 40–43 सप्ताह होंगे। उपाओ के समय ख़्वाह अन्तिम दिन 39वें 40वें ही भूल जावें या बन्द कर बैठे तो सब किया कराया निष्फल होगा। और नये सिरे से फिर दोबारा शुरु करके पूरी मियाद तक करने के बाद फल देगा।

अरमान नं० 115

ख़ास-ख़ास सम्बन्धित ग्रहों की मियादें

(सालों के हिन्दसों में)

	वृहस्पति	सूर्य	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
वृहस्पति	उम्र 75	मामूं को तकलीफ़ 7 दोनों का जुदा-जुदा और उत्तम	तालीम 24 तीर्थ 20 मिले-जुले उत्तम चंद्र 1/2	सुख 4 दौलत 2 आमदन 60 बचत 20	(बद) बीमारी 31 औलाद 8 नुकसान 5	दुश्मनी 40 सुख 4 वालिद दुःख 29 दौलत रद्दी 17	ग़म 14 दौलत 12 हानि 15	नुक़सान 5 पिता रद्दी 100 औलाद 21 उम्र 90	दुश्मन 40
सूर्य	मामूं को तकलीफ़ 7	शनि बुरा 9	मंगल बद 15 सफ़र फ़जूल 9	नुकसा 17 दौलत 5 शुक्र रद्दी 25	सेहत उमदा 6	शुक्र रद्दी 25	दुश्मनाना ख़राब	औलाद रद्दी 21	वृहस्पति के बिलमुकाबिल तो दुश्मनाना वरना नेक
चंद	तालीम 24 तीर्थ 20	मंगल बद 15 सफ़र फ़जूल 9	औलाद 12 जब मार्ग स्थान में तकलीफ़ 6 साल	आराम 4 बीमारी 15 दौलत 12 वरना 27	सुख 3 औलाद का 27 सुख मुसीबत 2	लड़कियां 6 बीमारी 15 दौलत 22	राजदरबार 12 दौलत अज़ शनि 42	पानी का ख़ौफ निस्फ़ उम्र 45	लड़कियां 6 साल
शुक्र	आमदन 60 सुख 4 मुहब्बत 20 राजदरबार 27 दौलत 2	नुक़सान 17 दौलत 5 शुक्र रद्दी 25	बीमारी 15 दौलत 27 आराम 4	औरत का सुख 37	आग का ख़ौफ 17 तीर्थ 20 सुख 7 बीमारी 9	सूर्य 22 औरत 37 दौलत 36 दुश्मन 40	दौलत 12	दुश्मनाना व ख़राब शुक्र पर	दुश्मनी 40 साल
मंगल	औलाद 8 बीमारी 31	सेहत 6 साल	सुख औलाद 27 आम सुख 3 मुसीबत 2	बीमारी 9 सुख औलाद 7 तीर्थ 20 आग का डर 17	मुलाज़मात 28 बीमारी 15 मौते 22	आग का डर 17 फ़ोकी इज़्ज़त 11 वालिद 12 लड़के 24	बीमारी 5 बीमारी 15 दौलत 24 तकलीफ़ 10	नुक़सान 5 साल	फोका ऐश 3 लड़के 24
बुध	वालिद दुखिया 29 नुक़सान 20 दुश्मन 40 सुख 4	शुक्र रद्दी 25	दौलत 22 लड़कियां 6 बीमारी 15	औरत 37 दौलत 27 दुश्मन 40 सूर्य 22 लड़के 24	आग का डर 17 फ़ोकी इज्जत 11 वालिद 12	औरत 37 मौत के खाने में 14	दौलत 45 तकलीफ़ 10 लड़के 24 दुश्मन 42	दोनों का उत्तम	दुश्मन 37 दुश्मन 40
शनि	हानि 15 ग़म 14 दौलत 12 आमदन 60	दुश्मनाना खराब	दौलत अज़ शनि 42 राजदरबार 12	दौलत 12 साल	बीमारी 5 (बद) 15 दौलत 24 तकलीफ़ 10	तकलीफ़ 10 लड़के 24 दुश्मन 42 दौलत 45	दौलत 24 हथियार का ख़ौफ 27	हमेशा शक़्की हानि 15	लड़के 24 शनि की निस्फ़ मियाद पर फ़ैसला होगा
राहु	उम्र 90 पिता चुप साढे 10 औलाद रद्दी 21 नुक़सान 5	औलाद रद्दी 21	निस्फ़ उम्र पानी का ख़ौफ 45	दुश्मनाना ख़राब	(बद) नुक़सान 5	दोनों का उत्तम	हमेशा शक़्की हानि 15	मौत के ख़ाने में 5	मुक़र्रर राशि पक्के घर से बाहर दोनों रद्दी
केतु	दुश्मन 40	सूर्य मद्धम	लड़कियां 6 साल	दुश्मनी 40	फोका ऐश 3 लड़के 24	दुश्मनी 37–40	लड़के 24 शनि की निस्फ़ मियाद पर फ़ैसला होगा।	अपनी-अपनी मुकर्रर राशि देखे-राशि व पक्के घर से बाहर	छलावा

अरमान नं० 116-117

लाल किताब पेज नं० 123–124 में इस्तिलाई बातें हैं जो हस्त रेखा और इल्म ज्योतिष को बाहम मिला कर इल्म सामुद्रिक की बुनियाद हैं।

अरमान नं० 118

(12 बारह ख़ानों की चीज़ें)

(1) ख़ाना नं० –1 स्वयं ज़ाती अपना जिस्म साथ लाया हुआ। वक़्त जवानी–दिमाग़ी ताक़त अपना स्वयंसाख़्ता मकान–रूह गुस्सा–तमाम अजू–नमक सफ़ेद अपना तख़्त। चार दिवारी मय तै ज़मीन के गोशे। दुनिया में नाम किस हैसियत का होगा। मर्दों का सम्बन्ध हाथ पर ख़ास निशान। (1) इस घर में सूर्य उन ग्रहों को जो सूर्य के = दोस्त/ख़्वाह दुश्मन हों मदद दिया करता है। (2) राहु राशि फल का होगा। लाल किताब पेज नं० 126 जुज़ नं० (1) 199/200 ख़ाना नं० (1) जुज़ नं० (1–2)

ख़ाना नं० –2 – स्वयं ज़ाती क़िस्मत का। रिश्तेदारों से पायी हुई चीज़ें। (मार्फ़त स्त्री) इज़्ज़त (शरीफाना) दौलत (शरीफ़ाना) बुढ़ापे तक। इश्क़ (ज़बानी–हवाई) ससुराल ख़ानदान व ससुराल के अपने घर का हाल। बचत अज़ ज़ाती कमाई। स्त्री धन (जहेज़ वग़ैरह–औरत का लाया हुआ धन) खटमिठा।

अरक मोह माया– ससुराल का मकान–स्वभाओ (नेकी)–भूक मकान का वास्ता (गुरूद्वारा मन्दिर जिबह ख़ाना–स्त्रियों का ताल्लुक़ माता भुआ फूफी मॉसी वग़ैरह–तिलक की जगह।) (पेशानी पर) उंगलियां (लम्बाई छोटाई। सीधी टेढ़ी) लाल किताब पेज नं० 128 जुज़ नं० (2) लाल किताब (वृहस्पति का असर) पेज नं० 144 जुज़ (1) 171–172 फ़रमान 124 ख़ाना नं० 2 का जुज़ (1 ता 4) इस घर के ग्रह आख़री उम्र में नेक फल देंगे।

ख़ाना नं० 3 – हक़ीक़ी रिश्तेदार–नज़र का असर (पत्थर फाड़े या तारे) भाई बहन भाई बन्द–चोरी–यारी–अय्यारी–नुक़सान–जंग व जदल भाई का घर। ताये बच्चे का मकान। नेकी–इन्साफ़–मुनसफ़ी व मनसबी बुर्जुगाना ताल्लुक़। बच्चा पैदा करने की ताक़त परिवार कबीले का बढ़ना व बढ़ाना – खाण्ड मीठा–उठती जवानी का हाल। दूसरों की मदद से पैदा करदा हालतें। आकश जिगर–खून–मकान के साज़ व सामान वास्ते आराइश – आम खुशी ग़मी की औसत हालत–खुशी ग़मी की रेखा–ठगी इस घर में (1) चंद्र हमेशा राशि फल का होगा। (2) शनि राशि फल का होगा। लाल किताब पेज नं० 128 जुज़ (3) 260/261 ख़ाना नं० 3

खाना नं० 4 – माता का सम्बन्ध–समन्दर पार सफ़र–समन्दर का सफ़र खुशी–साथ लायी हुई–चंद्र की चीज़ें – माता ख़ानदान मासी फूफ़ी का मकान। मोती अनबिध बग़ैर सुराख दूध रंग सफ़ेद – वृहस्पति का धन बवक़्त जवानी। शुमाल मशरिक़। ख़ाली तै ज़मीन दिल–दूध–दौलत–कुदरती तौर पर तबीयत का झुकाओ किया होगा। चक्र संख सदफ़ उंगलियों पर जौ का निशान। उस घर में (1) शुक्र राशि फल का होगा। (2) मंगल बद (मंगलीक) राशि फल का

होगा। (3) केतु राशि फल का होगा। लाल किताब पेज नं० 128 जुज़ नं० (4) 226 ख़ाना नं० (4) जुज़ (1-4)

ख़ाना नं० 5- औलाद का सम्बन्ध- औलाद नरीना-दौलत-औलाद का धन दौलत व क़िस्मत-औलाद को सुख। औलाद के जन्म दिन से अपने बुढ़ापे तक दूसरों की मदद से पैदा करदा। मशरिक़-रोशनी-हवा-औलाद के बनाए हुए मकान बचत अज़ तरफ़ औलाद-हवासे ख़्मसा-5 इन्द्रियां-हाज़म-औलाद व अपने खून का सम्बन्ध नेकी की मशहूरी रफ़तार-गुफ़तार-तहरीर-उंगलियों के दरमियान ख़ाली जगह लाल किताब पेज नं० 129 जुज़ (5)

ख़ाना नं० 6 - माता-पिता के या औलाद के सम्बन्ध के ज़रिए बन जाने वाले रिश्तेदार जिन का रिश्तेदारी का सम्बन्ध स्वयं कुण्डली वाले के सम्बन्ध के बग़ैर ही होवे। इंसान स्वयं किसी ग्रह का है। चेहरा व पेशानी की हालत दूसरों से पायी हुई चीज़ें (माता पिता के रिश्तेदारों) बुध की चीज़ें हमदर्दी (फोकी) मामूं-फूल की खुशबू बदबू-फोका पानी-नानका घर (नाने-नानी का) - आम बरताओ व साहूकारा मरने के बाद बाक़ी रहे हुअवों की हालत। शुमाल हमसाए मकान के इर्द-गिर्द की चीज़ें पुट्ठे नाड़ें ज़ायका-साग सब्ज़ी फूल पत्तर इस घर में (1) वृहस्पति राशि फल का होगा। (2) सूर्य के स्वयं अपने बुरे असर के लिए बुध का उपाओ मददगार होगा।

(3) मंगल इस घर में राशि फल का होगा। (4) शनि राशि फल का होगा।

केतु की चीज़ें - औलाद का सुख- हमदर्दी (सच्ची) - ख़ालिस खटाई - सफ़र आम मरने के बाद बाक़ी रहने वालों की हालत-पाताल -ज़ाती ख़ासियत (रूहानी ज़िस्मानी दिमाग़ी नाखून हाथ के-वाल्दैन की तरफ़ से रिश्तेदार नान के वग़ैरह क़द क़ामत हथेली व उंगलियां की तनासब का असर।) लाल किताब पेज नं० 129 जुज़ (6) केतु ख़ाना नं० 6 अरमान 178

ख़ाना नं० 7 - जन्म स्थान कहां का बासी - शक्र की चीज़ें साथ लायी होवें। स्त्री घर- लड़कियों के रिश्तेदारों के घर मिट्टी के ज़र्रे घी ज़र्दे - शादी- मकानात वग़ैरह (जायदाद) बवक़्त जवानी-वग़ैरह जनूब मग़रिब ज़ाहिरदारी बैरुनी तय जिस्म (जिल्द) पलस्तर सफ़ेदी मकान। कबीले की पैदाईश और परवरिश मकान का बनना पराई दौलत का मिलना (बज़रिया बुध की नाली) जिस्म के बाल-हथेली की हा हालत का हाल लाल किताब पेज नं० 244-245 ख़ाना नं० 7 जुज़ (1-5)।

बुध की चीज़ें साथ लाई हुई। कुव्वते बाह-अन्दरूनी अक़्ल जुज़ बहन पोते चेहरा-इस घर में (1) वृहस्पति राशि फल का होगा। (2) अगर सूर्य इस घर में हो। और शनि का टकराओ आ जावे तो चंद्र नष्ट करने से सूर्य की मदद होगी। यानी मियाद उपाओ के दिनों तक जली हुई आग को पानी की बजाए दूध वग़ैरह से बुझाते जाना वग़ैरह। (3) चंद्र इस घर में हमेशा राशि फल का होगा। (4) राहु राशि फल का होगा। लाल किताब पेज नं० 129-130 जुज़ (7) 278 फरमान 162 / 288

ख़ाना नं० 8 - स्वयं करतूत (मन्दी हालत) शनि की बुराई ताये चच्चे। मौत-अपने बुजुर्गों से सम्बन्धित क़ब्रिस्तान श्मशान भूमि की जगह -कोयले चीजों का जलना-मन्दे हाल-जनूब छत-मकान पिता इस घर में चंद्र हमेशा राशि फल

का होगा। लाल किताब पेज नं० 130 जुज़ (8) मंगल बद की बुराई बीमारी इंसान का जलना मन्दी हालतें बद फ़हमी कड़वाहट – लाल किताब पेज नं० 261 ख़ाना नं० 8 जगह-जगह लफ़्ज ख़ाना नं० से मुराद हस्त रेखा की कुण्डली का पक्का ख़ाना नं० मुराद होगी। राशि नं० न होगी।

ख़ाना नं० 9 – जद्दी बुजुर्गाना – बचत अज़ बुजुर्गान – करत धरम– जद्दी मकान बुजुर्गों के बनाए हुए। साहस–परोपकार। बुजुर्गों (बाप दादा) की उम्र बुजुर्गों का नेक सम्बन्ध (कुण्डली वाले से) कुण्डली क़िस्मत (स्वयं अपनी) की बुनियाद। बचपन का ज़माना – स्वयं ज़ाती। बचपन का ज़माना वाल्दैन की हालत। दूसरों की मदद से पैदा करदा हालतें ग़ैबी दुनिया–मौत जड़–कच्चा पक्का मकान–हर हिस्से की अन्दर की पैमाईश आराम या हराम खोरी। उंगलियों पर सीधे या लेटे ख़त – इस घर में (1) बुध सब से मन्दा ग्रह होगा। जिसके लिए अरमान नं० 178 (लाल गोली) नाक छेदना (अरमान नं० 62/94 बुध नाक़िस का उपाओ।) (2) शनि राशि फल का होता है। लाल किताब पेज नं० 130 जुज़ (9) इस घर के ग्रह शुरु उम्र में और हर एक ग्रह अपने शुरु होने के दिन से अपनी पूरी उम्र (ग्रह की) तक फल देंगे।

ख़ाना नं० 10 – ज़ाती शनि का (विरासत) साथ लाई हुई चीज़ें। पिता का/को सुख 3 साल लगातार–रिहाइश का मकान– मक्कारी होशियारी–मकान जायदाद (शनि की चीज़ें) मार्फ़त बुजुर्गों। गमी–ज़हमत–दुख अज़ सम्बन्ध दीग़रान ग़ैर हक़ीकी– नामक स्याह–तेल –वक़्त– शादी सामान ख़ुराक – बवक़्त जवानी– मगरिब बुहा लकड़ मकान ईंट पत्थर–बाल–कांटे–बाढ़–सेहत व आम बरताओ–बड़ी तिकोन व बड़ी मुस्ततील इस घर में (1) बुध राशि फल का होगा। (2) केतु राशि फल का होगा। लाल किताब पेज नं० 131 जुज़ (10) पेज नं० 294 जुज़ (1–2) 323 ख़ाना नं० (10) तमाम जुज़।

ख़ाना नं० 11 – मैदान किस्मत – समय जन्म किस्मत का मैदान समय जन्म पर वाल्दैन की हालत (बलिहास आमदन) लालच–आमदन ज़ाती–ख़रीद करदा मकान जो स्वयं न बनाए हुए हों औलाद की तादाद – औलाद की उम्र–जन्म–शानो शौकत– पोस्त ख़ाल–छिलका–आमंदन–आयी चलाई का ज़रिया –हाथ की क़िस्में–हर अज़ू मय नाख़ून का हाल–रंग और किस–किस तरह के हैं। पेशानी (सिवाए तिलक की ख़ास जगह) का हाल। लाल किताब पेज नं० 131 जुज़ (11)

ख़ाना नं० 12 – अज़ स्त्री सम्बन्ध –लक्ष्मी–दूसरों से पाई हुई चीज़ें स्त्री सुख–लक्ष्मी सुख (बवक़्त पैदाइश वाल्दैन का सुख) ससुराल का सुख–हमसायों के मकान – ख़र्च ज़ाती – दिमाग़ी हरक़त – स्वयंगर्ज़ी – कर्ज़ा। ससुराल बज़ाते – स्वयं शुमाल मग़रिब (वृहस्पति) जनूब मशरिक़ (राहु) – आसमान (राहु वृहस्पति)–हड्डी आबाद या वीराना – कुण्डली – स्त्री सम्बन्ध (जोड़े का साथ) स्त्री सम्बन्ध– बेवा औरतें–माशूक़ा वग़ैरह। हथेली उंगलियां मय अंगूठा का अन्दर या बाहर को झुकाओ–हथेली पर वृहस्पति के सीधे ख़त– उंगलियों पर वृहस्पति के चक्र – संख सदफ़–नाखून पांव के – चालाकी या बदनामी की शौहरत की चमक–हथेली पर वृहस्पति के ख़त–उंगलियों पर के वृहस्पति के निशान खाना नं० 4 पर लिखे हुए के अलावा। इस घर में बुध सबसे बुरा है जो राशि फल का होगा बज़रिया केतु का

उपाओ। लाल किताब पेज नं० 131 व 132 जुज़ (12) राहु ख़ाना नं० 12 अरमान 176

(ख) **बारह ख़ाने** – अगर कुण्डली में हर एक ख़ाने को एक घर मान लिया जावे तो इस की दृष्टि से सम्बन्ध रखने वाला ख़ाना उस मकान का सेहन होगा। घर वाले ग्रह का अपने मकान के सेहन पर अपना हक होगा। बेशक ग्रह का घर कुण्डली के बाद के नं० का ही क्यों न हो। सेहन माने हुए ख़ाना के ग्रहों के असर का अन्तिम फ़ैसला करना मालिक मकान के इख़्तियार में होगा।

(घ) **बारह ख़ाने** – लाल किताब पेज नं० 127 पर 12 ख़ानों की पक्की जगह दिखलायी गयी है उन ख़ास जगहों के अलावा।

हर ग्रह की रेखा भी कुण्डली का ख़ाना नं० हुआ करती है।

मसलन चंद्र का दिल रेखा जब वृहस्पति के बुर्ज को जा निकले मगर वृहस्पति के बुर्ज़ के अन्दर तक पूरी न हो तो शनि और वृहस्पति की उंगलियों के दरमियानी जगह को ख़ाना नं० 11 लिखेंगे। शनि का हैडक्वार्टर ख़ान नं० 8 होगा। अंगूठा ख़ाना नं० 2 होगा। दिल रेखा ख़ाना नं० 4 होगा। सिर रेखा ख़ाना नं० 7 होगा

(ङ) रेखा का शुरु व अन्तिम व हर ख़ाना नं० की हद बन्दी की ख़ास-ख़ास जगह और ऊपर नीचे को उठा या दबाव किसी हद के ऐन ऊपर ही किसी ग्रह का निशान भी धोके का सबब हो जाता है जिसके लिए हालत गुज़िश्ता पर नज़रसानी करना मददगार हुआ करता है।

कुण्डली के ख़ानों में मकान व सेहन का सम्बन्ध

अगर घर होवे ख़ाना नं०	तो सेहन होगा ख़ाना नं०	कौन सेहन का मुन्सिफ ग्रह होगा	अगर घर होवे ख़ाना नं०	तो सेहन होगा ख़ाना नं०	कौन सेहन का मुन्सिफ ग्रह होगा
1	7	मंगल	7	1	शुक्र
2	8	चंद्र (उम्र)	8	2	मंगल (बद)
3	11	सूर्य वृहस्पति	9	5	सूर्य
4	10	चंद्र	10	4	शनि
5	9	वृहस्पति	11	3	बुध
6	12	केतु	12	6	राहु

अरमान नं० 119 - राहु केतु के हाल में लिखा है -

अरमान नं० 119 के जुज़ – रेखाओं के कई मिले-जुले ग्रहों से कुण्डली बनाना जुदी जगह लिखा है।

अरमान नं० 120 ''वृहस्पति''

केतु वृहस्पति दोनों दरवेश (वृहस्पति दरगाही, केतु दुनियावी) और दोनों की बाहम बराबर के ग्रह हैं, फ़र्क ये है कि वृहस्पति की हवा बे कैद और खुली हवा हुआ करती है। मगर केतु जो सांप के फर्राटे की हवा है। दुनियावी धंधों से बंधी हुई किसी मतलब या ज़हर को साथ लेकर चलती है। वृहस्पति किसी बुराई भलाई का ख़्वाहिशमन्द न होगा। केतु किसी के भले या बुरे के लिए अपना छलावापन दिखला देगा। वृहस्पति पूजा पाठ और केतु पूजा पाठ करने की जगह या वृहस्पति के बैठने का तख़्त है। शनि मौत का यम तो राहु इसकी सवारी का हाथी है।

स्वयं वृहस्पति - जब ''क़िस्मत का ग्रह'' हो लेकिन अपनी जड़ मुक़र्रर राशि पक्के घर की अदली बदली बैठा होने की राशि या दृष्टि के सम्बन्ध में कुण्डली के किसी भी ख़ाने में (सिवाए ख़ाना नं० 10 के जहांकि वह शनि की मदद का उम्मीदवार होता है।) हर तरह से कुल अकेला ही होवे। कुण्डली वाले पर कभी बुरा असर न देगा। ऐसा व्यक्ति बेशक किसी दूसरे की मदद न पाएगा और न ही वह स्वयं किसी दूसरे की ममद करने के ऐसा काबिल होगा। बल्कि वह अकेले डण्डे की तरह के दरख़्त की मानिन्द (बांस पहाड़ी इलाका - शनि की हकूमत-ख़जूर-चंद्र के वीरान खुले मैदान या सुरुबाग़ बगीचे चंद्र की राजधानी) होता हुआ भी तमाम दुनिया के बर ख़िलाफ़ अपनी किस्मत को खुद ज़ाती मेहनत और कोशिश से क़ामयाब बना लेगा।

अगर किसी पितृ ऋण (पितृ ऋण या फ़रायज़ ज़रूरी बुजुर्गों के कर्ज़े यानी बुजुर्गों ने जन्म दिया तो स्वयं औलाद बनाई। उन्होंने पाला पोसा तो बच्चों को हर तरह से काबिल बनाना- ख़ैरात ली तो दान देना- वग़ैरह-वग़ैरह बच्चे पर बाप के कर्ज़ हैं।) या अपने बुजुर्गों के पापों के सबब ऐसा वृहस्पति अपने पहले दौर पर कुण्डली वाले की उम्र के पहले 35 साला चक्र में नाकारा साबित होवे तो किसी ख़ास उपाओ की ज़रूरत न होगी। वृहस्पति अपने दूसरे दौरे या उम्र के दूसरे 35 साला चक्र में अपनी पहली कमी भी पूरा कर देगा। निशानी - स्वयं वह शख़्स वृहस्पति के ग्रह का आदमी और उसका मकान जद्दी स्वयं साख़्ता वृहस्पति के ग्रह का होगा।

वृहस्पति व शनि का बाहमी सम्बन्ध - (अरमान नं० 180 वृहस्पति शनि मिले-जुले देखें)

हिस्सा अव्वल - जब दोनों ग्रह अपनी-अपनी हालत में जड़ राशि व दृष्टि वग़ैरह के सम्बन्ध में हर तरह से अकेले-अकेले हों (न तो स्वयं बाहम साथी ग्रह हों और न ही उन दोनों में से कोई एक ग्रह किसी और ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो)।

वर्ष फल के हिसाब से उम्र के जिस साल में शनि या वृहस्पति का दौरा हो और साथ ही दोनों में से कोई एक राशि नं० के हिसाब से बोलने वाले ग्रहों में बोल रहा हो तो वृहस्पति शनि की धन रेखा (अरमान नं० 100 बी) का असर पैदा होगा। बशर्ते कि दोनों में से कोई भी नीच फल की राशि का न हो (शनि ख़ाना नं० 1 में नीच और वृहस्पति नं० 10 में नीच होता है।) फ़क़ीर के डण्डे में दुश्मनों पर (इंसानी दुश्मन या उन दो को छोड़ कर बाक़ी सात ग्रहों से कोई ग्रह जो दुश्मन हो कर इस कुण्डली में वाक़िया हों) ज़बरदस्त डण्डे की तरह के सांप का असर देगा। हवाई ताक़त और आंख की चालाकी की रहनुमाई के साथ से पत्थर पर आवाज़ ही से पक्की लक़ीर और फ़र्ज़ी स्याह निशान

(दिल चंद्रमा) से नाकारा स्या पत्थर के पहाड़ को दमकते हुए ज़र्द सोने की हैसियत का कर देगी। बशर्ते कि शनि और वृहस्पति दोनों का ही असर क़ायम हो। यानी ऐसा व्यक्ति शराब ख़ोरी (शनि ज़ाहिल) या ख़ैरात का माल लेकर ख़ाने वाला दूसरों के मुफ़्त माल पर नज़र रखने वाला (वृहस्पति बरबाद) न हो। बल्कि वह सब के मालिक से सिर्फ़ अपनी क़िस्मत का हिस्सा मांगने वाला साबिर व शाकिर होवे। तो शनि की माया दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति गुरु के पांव की गुलाम होगी।

हिस्सा दोयम (अलिफ़) – वृहस्पति शनि दोनों ही ग्रह हर तरह से अकेले जब दोनों ही ग्रह ऐसी हालत के और दोनों ही नीच घरों के (शनि नीच नं० 1 में और वृहस्पति नीच नं० 10 में) होते हुए वर्ष फल के साल का ग्रह और राशि नं० के ग्रह बोलने के हिसाब से उम्र के साल पर इकट्ठे हो जावें तो रल मिल कर बैठेंगे दीवाने दो। हमयारां दोज़ख हमयारां का ज़माना पैदा होगा। जिसमें अगर दोनों ही का फल रद्दी होवे तो अन्धा बग़ैर टांगों के और टांगों से आरी मगर आंखें क़ायम वाले एक दूसरे पर सवार होकर बाहम रास्ता बता कर अपने दौरा की मिसाफ़त का मन्दा सफ़र तय कर लेंगे। गोया दोनों का मिलना ''उब बनाई जोड़ी एक अन्धा एक कोड़ी'' होते हुए भी अजानक की बरक़त के उम्दा नतीजे का फल देगा।

(बे) अगर शनि व वृहस्पत दोनों में से कोई एक भी रद्दी हालत का होवे तो रद्दी हालत वाले के मन्दे फल को दूसरा उम्दा बना देगा। यानी

(i) अगर वृहस्पत रद्दी हालत का हो और शनि क़ायम तो लोहे की तलवार तमाम दुनिया की रद्दी हवा को काटती हुई चलती जाएगी। (ii) अगर वृहस्पत उम्दा और शनि रद्दी हालत का हो। तो इसकी क़िस्मत दूसरों को लोहे के लिए पारस का काम देगी। मगर स्वयं उसके लिए बीमारियां व ख़्वाहिशातबद की निशानियां होगी।

हिस्सा सोयम – जब शनि और वृहस्पत दोनों बाहम साथी ग्रह हो जावें और सूरज का राज या तख़्त की मालकियत के ज़माना का दौरा आ जावे। (अलिफ़) जब शनि व वृहस्पत दोनों उम्दा हालत के हों। तो सूरज अपना पुरज़ोर असर देगा। अब चूंकि वृहस्पत और शनि दोनों ही उम्दा हालत के है इसलिए उत्तम फल और नेक नतीजे होंगे।

(बे) वृहस्पत व शनि हों तो साथी ग्रह मगर दोनों ही नीच हालत या नीच घरों के तो सूरज के राज के वक़्त या तख़्ताकी मालकियत के ज़माने में जब तक राज दरबार के सम्बन्ध से मायाम हुआ या पाया हुआ धन दौलत बरबाद और खुद उस इन्सान का कोई अंग (जिस्म का हिस्सा) ख़राब न हो जावे सूरज और शनि का दुश्मनाना और पुरज़ोर बुरा असर ख़त्म न होगा।

(जीम) अगर वृहस्पत व शनि के बाहम साथी ग्रह होने पर दोनों में से

(i) शनि तो हो उम्दा हालत का मगर वृहस्पत होवे रद्दी हालत का तो सूरज के राज या तख़्त की मालकियत के वक़्त मुक़दमा विवेक बीमारी के ज़रिए इस इंसान के राजदरबार से कमाए हुए या पाए हुए धन दौलत का सोना ख़त्म होने तक सूरज व शनि का दुश्मनाना और पुरज़ोर बरा असर न जाएगा। ऐसी हालत में उस इंसान के अंग (अज़ू जिस्म का हिस्सा) ख़राब होने की शर्त न होगी।

(ii) शनि रद्दी हालत का हो मगर वृहस्पत उम्दा हो तो उसके अंग (अज़ू जिस्म का हिस्सा) ख़राब हो जाने पर शनि व सूरज का दुश्मनाना व पुरज़ोर बुरा असर ख़त्म होगा। धन दौलत के ख़त्म होने की शर्त न होगी।

उपाओ - ऊपर लिखे हुए हिस्सा अव्वल हिस्सा दोयम व सोयम तीनों में ही बुरे असर से बचाओ का ढंग और मदद चूंकि तख़्त के मालिक ग्रह का दौरा ग्रह फल का होता है। और राशि नं० के हिसाब से बोलने वाले ग्रह का असर राशि फल का होता है। इसलिए बुरे असर से बचाओ और मदद के लिए राशि फल वाले ग्रह का (जो भी ऊपर लिखी हालतों में हो) उपाओ करें। लाल किताब फ़रमान नं० 120 पेज नं० 144 चर्बी से मंगल का बुर्ज ख़ाना नं० 3 नष्ट होने पर वृहस्पत या शुक्र जिस तरफ़ के बुर्ज का हिस्सा ज़्यादा भारी मालूम होवे वही तरफ़ प्रबल गिनी जावेगी। यानी अगर वृहस्पत की तरफ़ का हिस्सा भारी हो जावे बहुत बड़ा वृहस्पत या नरम हाथ का वृहस्पत होगा। और दोनों ग्रह वृहस्पत और शुक्र ख़ाना नं० 2 में वह मंगल नष्ट गिना जावेगा। शुक्र की तरफ़ का हिस्सा भारी हो जावे बहुत बड़ा शुक्र होगा। ग्रह वृहस्पत शुक्र ख़ाना नं० 7 में और मंगल नष्ट लेंगे।

अरमान नं० 121

में वृहस्पत का चंद्र या शुक्र या दोनों से सम्बन्ध लिखा है

अरमान नं० 122

वृहस्पति दोनों जहांन या अन्दर बाहर दोनों तरफ़ का मालिक गिना गया है। उसकी अन्दरूनी ताक़त स्वयी (जिस्म इंसान। ख़ुद अपना वजूद या ख़ुद अपने वजूद में या अपने लिए अपने आप से संबंधित या बन्द मुट्ठी में साथ लाई हुई चीज़ ख़ाना नं० 4 ऊंच वृहस्पत) हवा- प्यार (हर दो वास्तविक व ग़ैर वास्तविक)- मोह या मीर (मेरा अपना आप) कहलाती है और विदेशी चाल (दूसरों से संबंधित दूसरे जहान में साथ में साथ ले जाने के लिए चीज़ दुनिया से बाहर वाला बताओ वग़ैरह) क़िस्मत या चमतकार क़ुदरती कहलाती है।

पर्वतमाला और समन्दर - (लाल किताब पेज नं० 157 जुज़ 2) (फ़ारसी शब्द कोह में हाथ का खाने देखने से मालूम होगा। कि कुण्डली के ख़ाना नं० 9 को ऐसी जगह माना है जिसके एक तरफ़ शुक्र का बुर्ज ख़ाना नं०7 और दूसरी तरफ़ चंद्र का बुर्ज ख़ाना नं० 4 वाक़या हैं। लाल किताब पेज नं० 40 पर तोते की 35 को देखने से मालूक होगा कि वृहस्पत को गंगा (हिन्दुस्तान का एक बड़ा और मुतबरिक दरिया) और आम इस्तेलाह में दोनों जहानों की हवा भी माना है। गोया पानी और हवा का बाहमी सम्बन्ध रखने वाले चीज़ गिनी गयी है। पानी की ख़ासियत है कि वह हमेशा नीचे की तरफ़ बहता है ताकि उसकी सतह हमवार हो जावे। और सबकी कमीबेशी बराबर हो जावे। शनि को पत्थर पहाड़ माना है। और पानी चंद्र है) हवा की ख़ासियत है कि ग़मी से फ़ैलती और ऊपर को उठती है। अब वृहस्पत के दोनों जहानों ख़ाना नं० 2 (राहु केतु की मिले जुले की बैठक) और ख़ाना नं० 9 बच्चे की पैदाइश की जगह का सम्बन्ध साफ़ करने के लिए मालूम हुआ कि ख़ाना नं० 7 शुक्र की ख़ुश्की का ब्राहाण्ड और चंद्र के समन्दर की गैबी के दरमियान में बैठने वाला वृहस्पत या ख़ुश्की और पानी दोनों पर ही रहने वाली हवा जब ख़ाना नं० 9 से चलती है

और जब बच्चा ख़ाना नं० 9 में आ जाने के बाद इस दुनिया में आगे चलता है तो पहला ही पड़ाव या पड़ाओ शनि का हैडक्वार्टर या ख़ाना नं० 8 में आ निकलता है जो मौत का घर है। और मंगल व शनि की मिले जुले मालकियत है। (लाल किताब पेज नं० 97) गोया ख़ाना नं० 9 से चले हुए बच्चे या वृहस्पत की हवा के साथ शुक्र चन्द्र तो पहले ही थे मंगल शनि और आ मिले। अगर मंगल नेक के बुर्ज ख़ाना नं० 3 की हद और शनि की उम्र रेखा एक तरफ़ होवे तो सूरज की सेहत या तरक्की रेखा ख़ाना नं० 5 और मंगल बद ख़ाना नं० 8 की हदबन्दी भी इस जगह शनि के हैडक्वाटर के साथ आ लगी। शनि स्वयं पहाड़ है। मगर पहाड़ वृहस्पत की हवा को रोक नहीं सकता। हां अगर पानी से लदी हुई हवा के रास्ते में ऐसे ढंग पर आ जावे कि हवा पहाड़ से टकरा जावे तो हवा से पानी उतार लेगा। बारिश होगी। मगर हवा ख़ाली हो कर फिर आगे बढ़ेगी। या हट कर वापिस आएगी। मगर शनि के ख़ाना नं० 10 के पड़ाव को अगर वृहस्पत के ख़ाना नं० 9 से मिलाने के लिए ख़त ख़ीचे या उम्र रेखा का रूख देखें जो शनि के कोहसार की चीज़ है तो मालूम होगा कि ख़ाना नं० 8 शनि का पड़ाव का रूख हवा को रोक नहीं सकता। देखता ही रह जाता है। (सांप आज तक टकटकी लगाए देखता चला जाता है और वूहस्पत के इन्तज़ार में बैठा है।) ये हवा आगे बढ़ी तो ख़ाना नं० 11 आमदन वृहस्पत का घर मगर शनि की कुम्भ-राशि-पानी से भरा घड़ा (वही पानी जो अभी शनि ने वृहस्पत की हवा से निकाल लिया था) जिसके साथ ही ख़ाना नं० 12 ख़र्चा वृहस्पत की दूसरी राशि मीन मछली तड़प रही है। ये ख़ाना नं० 12 राहु के हाथी का भी है। यानी वृहस्पत गुरू के लिए हाथी भी आ गया। ब्रह्म का ख़याल छोड़ा हाथी की सवारी चुप चाप होकर कर ली। वृहस्पत ज़र्द और राहु नीला तो सबज़ रंग हुआ। बुध स्वयं आ निकला। गोया वृहस्पत के ज़र्द रंग का पता ही न चला कि कहां चला गया है। नीले रंग राहु से दोस्ती कर के बुध ने अपनी सिर रेखा खड़ी कर दी। अब वृहस्पत ने राहु के हाथी से बचना है या राहु का जाल काटना है। अपने दोस्त केतु को याद करता है। ये केतु चूहा भी बनता है। कुत्ता भी होगा। गधा भी है। कान भी होगा। और छलावा भी माना है। (लाल किताब पेज नं० 115) गऊ माता भी होता है। (लाल किताब पेज नं० 115) शुक्र में केतु ज़रूर माना है और बुध भी शुक्र का जुज़ है। इसलिए जब शुक्र बन गया तो बुध और केतु दोनों ही शुक्र के अन्दर ही लपेटे गए। केतु तो वृहस्पत के बराबर का है। ये छलावा बना गुरू को हिम्मत दी। चूहे ने राहु का जाल काटा। गधे को अपने मतलब के लिए बाप कहा। बुध की सिर रेखा की दीवार की रूकावट से आगे बढ़ा तो केतु के घर ख़ाना नं० 6 में जा निकला। मगर वहां भी बुध मौजुद है। इसलिए वहां गऊ माता बना और भाग कर ख़ाना नं० 2 में जा पहुचा। क्योंकि ख़ाना नं० 6 और ख़ाना नं० 2 के दरमियान कोई रूकावट की दीवार नहीं। और दूष्टि में भी ख़ाना नं० 2 देखता है ख़ाना नं० 6 को। और ये ख़ाना नं० 2 तो है ही गाय का स्थान या शुक्र की अपनी राशि बृख जो वृहस्पत का पक्का घर निश्चित है। ये ख़ाना नं० 2 ही एक घर है जहां गाय पक्के तौर पर ख़ड़ी है। गृहस्त है। राहु केतु की मिले जुले बैठक है। जिसमें ख़ाना नं० 8 के असर का शनि का वही सम्बन्ध आ जाता है। या मस्नूई शुक्र ख़ाली वृहस्पत हवाई ताक़त का गुरू और दुनियावी गाय गुरूद्वारा सब वृहस्पति के पहलू है। गोया वृहस्पत की हवा अब शनि के पहाड़ के सिलसिले की दीवारों से टकरा कर ख़ाना नं० 2 में वही समन्दर ले जाती है जो वृहस्पत के साथ ख़ाना नं० 9 से लगा हुआ चंद्र के समन्दर ख़ाना नं० 4 में मौजूद था। इस तरह पर ख़ाना नं० 9 व ख़ाना नं० 2 जब बाहम मिले तो ख़ाना नं० 2 कर्मी धर्मी कोहसार कहलाया। ख़ाना नं० 9

करम धर्म समन्दर या दरियाये गंगा हुआ। जिसमें हवाई ताक़त का साथ हुआ या ख़ाना नं० 2 में वृहस्पति की असल ताक़त पायी गयी। या ख़ाना नं० 9 को निधि सिद्धि का मालिक सुदामा (सिध साधु वृहस्पत गुरू मां माता मान इज़्ज़त) तो ख़ाना नं० 2 को धन्ना भगत (पत्थर से वृहस्पति दोनों जहान का मालिक) मुराद होगी। जिसकी गायां (गाय) राम चरावे यानी ख़ाना नं० 2 में :- शनि वृहस्पति शुक्र और राहु केतु 5 की पंचायत मानी जाएगी। या जिस वक़्त भ ये सब ग्रह यानी वृहस्पति की उत्तम हालत (संबंधित दुनियावी गृहस्त) होगी। क्योंकि ख़ाना नं० 2 (हथेली पर) के गुरू के सामने।

शनि का बुर्ज है ख़ाना नं० 10 सांप कान बन्द किए मगर टकटकी लगाए चुप चाप सूरज का बुर्ज है ख़ाना नं० 1 बन्दर बना बैठा जो फूंक नहीं मार सकता वृहस्पत की ताक़त हवा को ढूंढता है। (ख़ाना नं० 2 के वृहस्पत के सामने राहु केतु का बुर्ज है ख़ाना नं० 6 कुत्ता दरवेश गाय या हाथी ख़ाना नं० 12 में बंधा हुआ होगा।

बुध शुक्र का बुर्ज है ख़ाना नं० 7 शादी रेखा बुध स्वयं सिर रेखा बुध की मंगल का बुर्ज है ख़ाना नं० 3 ख़ाना नं० 3 मिथुन तर्जनी की जड़ बुध की राशि राहु केतु तो शुक्र में शामिल हैं।

गोया सब ही ग्रह गुरू का उपदेश सुन रहे हैं। या ख़ाना नं० 9 में उपदेश था। सिर्फ़ ज्ञान तो ख़ाना नं० 2 में ज्ञान का दाता वृहस्पत स्वयं मौजूद हुआ। राहु अपने कान लम्बे करके केतु के ख़ाना नं० 6 के साथ नं० 12 को मिला कर गुरू के ख़ाना नं० की जड़ में उपदेश की ख़ातिर स्वयं चुप होगा। अरमान नं० 123/औलाद मगर वृहस्पत अब चुप न होगा।

पैदाईश का वक़्त - मंगल शुक्र या बुध में से किसी भी एक दो या तीनों ही मिले जुले से शनि की दोस्ती (बर्ष फल और राशि नं० के ग्रह बोलने के हिसाब से उम्र के किसी साल में शनि का भी शामिल होना) औलाद की पैदाईश का वक़्त होगा।

ग्रहों का औलाद से सम्बन्ध

वृहस्पति - जिस्म में रूह के आने जाने का सम्बन्ध या पैदाईश औलाद मगर औलाद की ज़िन्दगी क़ायम रहने या मौत हो जाने का कोई बन्धन नहीं।

सूर्य - माता के पेट के अन्धेरे में रोशनी दे दुनिया या पैदा होने के बाद दुनिया में उनकी या उनसे वाल्दैन की क़िस्मत को रोशनी करना ख़ास कर बज़रिया नर औलाद अन्धेरे घरों में चिराग़ घरों में चिराग़ रोशनी करने की ताक़त।

चंद्र - उम्र-धन दौलत और वाल्दैनी नेक सम्बन्ध (नर मादा हर दो औलाद का)

शुक्र - जिस्म या बुत की मिट्टी। औलाद की पैदाईश में मदद या ख़राबी।

मंगल - ज़िस्म में ख़ून क़ायम रहने तक ज़िन्दगी का नाम और दुनिया में औलाद और उन के आगे औलाद दर औलाद क़ायम रख कर बेलों (पौधे) की जड़ बढ़ाना और उनका नाम या उनके नाम से सब का नाम बढ़ाना या दुनिया में नाम बाक़ी या पैदा कर देना। ख़ुद कुण्डली वाले में कुव्वते-बाह से अलाहदा बच्चे पैदा करने की ताक़त। जिस्म में ज़ोर रूह

बुत को इकट्ठा पकड़े रखने की हिम्मत।

बुध – औलाद का रिश्तेदारों से सम्बन्ध– लड़कियां– लड़कियों की नस्लों का बढ़ाना स्वयं कुण्डली वाले में कुव्वते–बाह ख़ाली व की ताक़त कुण्डली वाले और औलाद सब के लिए हर तरफ़ जगह ख़ाली करके मैदान बढ़ा देना।

शनि – औलाद की पैदाईश के शुरू होने का वक़्त– जायदी सम्बन्ध– मौत के बहाने।

राहु – वृहस्पत के असर के बर ख़िलाफ़ होना या वृहस्पत को चुप कराना रूह का आना जाना बंद करने या मौतें या बहुत देर तक पैदाईश औलाद को रोक देना या दीग़र ग़ैबी और छुपी छुपायी ख़राबियां या पांव तले भूचाल पैदा करना मगर लड़कियों की मदद करता है।

केतु – औलाद की ख़ुशहाली फलना मगर औलाद की तादाद में कमी का हिन्दसा रखना (मौतें कर के औलाद घटाने से मुराद नहीं। वैसे ही औलाद गिनती ही की होगी या बहुत देर बाद होगी। लेकिन जो होगी या जब होगी उम्दा और पूर्ण होगी।

ख़ुद कुण्डली वाले में बुध की कुव्वते–बाह और मंगल के ख़ून से बच्चा पैदा करने की ताक़त और वृहस्पत की औलाद की पैदाईश तीनों को इकट्ठा करके रखने वाली ताक़त नतफा या बीरज या नतफा की बुनियाद को नर मादा में मिलाने वाली तूफानी हवा या ख़ाली नाली होगी। यही तीन ग्रह केतु की तीन टांगे है। जिनकी वजह से ये शुक्र का बीज कहलाता है।

कुण्डली वाले का जो ग्रह रद्दी हालत या उम्दा हालत का होगा। वही हालत रद्दी या उम्दा हालत होगी।

साहिबे औलाद – (कौन बाल बच्चों व क़बीला और परिवार वाला होगा।) कुण्डली वाले के लिए।

साहिब औलाद दर औलाद होगा

(1) वृहस्पत–सूरज–शुक्र–बुध–शनि सब क़ायम या

(2) सिर्फ़ वृहस्पत या सूरज क़ायम या दोनों ही क़ायम या

(3) मंगल होवे शुक्र या बुध के पक्के घर या उनकी राशियों में और दृष्टि के सब ख़ाने ख़ाली हों या

(4) मंगल हर तरह से क़ायम और नेक होवे या

(5) मंगल हो शनि के दोस्तों (लाल किताब पेज नं० 105 पर ख़ाना ''दोस्त'' में लिखे) के साथ उनके पक्के घर या उनकी राशियों में

(बुध–शुक्र–राहु) और शनि हो। मंगल के दोस्तों (लाल किताब पेज नं० 105 पर ख़ाना ''दोस्त'' में लिखे) के साथ उनके पक्के घर या उनकी राशियों में (सूरज–चंद्र–वूहस्पत)

मंगल शनि मिले जुले हों। ख़ुद अपनी औलाद तो उम्दा माक़ूल तादाद और नेक होवे। मगर पोते देर बाद या तादाद में कम हों। पोतियों (लड़कों की लड़कियों) की शर्त नहीं।

वृहस्तपि क़ायम तो सब औलाद (नर मादा) क़ायम। केतु क़ायम तो सब लड़के ..... क़ायम
राहु क़ायम तो सब लड़कियां क़ायम।

मंगल बुध साथी ग्रह। चाहे स्वयं दोनों बाहम साथी ग्रह हों या दोनों ही एक दूसरे के दोस्तों के घर या राशि में बैठ जावें। या दोनों बाहम मिले जुले ही हो जावें मगर बिलमुक़ाबिल न हों तो लावल्द न होगा।

चंद्र नष्ट तो औलाद ज़रूर नष्ट होगी (नर मादा बच्चों की तमीज नहीं) मगर लावल्द होने की शर्त न होगी।

चंद्र हो खाना नं० 1 शनि नं० 7 सूरज नं० 4 शुक्र नं० 5 = नामर्द होगा।

औरत बांझ या नकाबिले औलाद होगी।

शुक्र हो ख़ाना नं० 2-6 में दृष्टि या साथी वग़ैरह हो जाने के सब ही घर ख़ाली हों यानी ख़ाना नं० 2 या 6 का शुक्र हर तरह से अकेला हो चंद्र कुण्डली का औलाद के बारे में कोई सम्बन्ध न होगा।

लावल्द होगा।

शुक्र केतु मिले जुले ख़ाना नं० 1 में और बुध नष्ट हो (सामने के दांत ख़त्म या चंद्र शुक्र बाहम बिलमुक़ाबिल और पापी ग्रह या दुश्मन घरों का साथ हो जावे।

औलाद के बिघन (मौते) ख़राबियां होगी

*ख़ाना नं० 5 या 9 में या नं० 3 या 9 में पापी ग्रह हों या *ख़ाना नं० 5 या 9 में या नं० 3 या 9 वृहस्पत या सूरज के दुश्मन ग्रह हो या मंगल ख़ाना नं० 4 या पापी ग्रह नं० 9 में या राहु बुध नं० 1 या केतु शुक्र नं० 1 या राहु अकेला ख़ाना नं० 9

शुक्र केतु ख़ाना नं० 1 में मंगल ख़ाना नं० 4 में ..... औलाद के बिघन पापी ग्रह तीनों या कोई एक नं० 5 या 9 में मंगल ख़ाना नं० 4 में औलाद के बिघन

***खाना नं० 5 व 9 का ख़ास फ़र्क़ पेज नं० 120 अरमान नं० 124 से पहले लिखा है।**

बुध व शुक्र का ख़ाना नं० 5 में औलाद पर कोई बुरा असर न होगा।

औरत पर औरत मरती जावे या मां बच्चों का सम्बन्ध ही न देखे या सूख से पहले चलती जावे।

सूरज हो ख़ाना नं० 6 में और शनि हो ख़ाना नं० 12 में तो

बच्चे पिता पर भारी (दुख या मौत का सबब) होंगे।

बुध मारता होवे वृहस्पत को या बुध हो वृहस्पत के घरों में या वृहस्पत के साथ ही।

सूरज हो ख़ाना नं० 6 में और मंगल हो ख़ाना नं० 10 या 11 में तो ..... लड़के पर लड़का मरता जावे मंगल शुक्र या बुध के दुश्मन ग्रह औलाद की उम्र कम या औलाद को नष्ट करते है।

शादी हो औलाद में गड़बड़ हो।

(i) शुक्र बुध मंगल तीनों ख़ाना नं० 3 दृष्टि ख़ाली नं० 11

(ii) शुक्र बुध मय राहु या केतु ख़ाना नं० 7

मंगल शुक्र या बुध के दोस्त ग्रह बच्चे की उम्र लम्बी या बच्चे को आबाद व क़ायम करते है। शुक्र के दोस्त ग्रह (स्वयं शुक्र नहीं) लड़के पैदा करते है।

बुध या बुध के दोस्त ग्रह लड़कियां पैदा करती हैं।

ख़ाना नं० 3-5-11 में अगर बुध हों तो लड़कियां पहले और जरूर क़ायम होगी। नर बच्चे की शर्त नहीं।

ख़ाना नं० 3-5-11 शुक्र के दोस्त ग्रह/(खुद शुक्र नहीं) हों तो लड़के ज़रूर क़ायम लड़कियों''

चंद्र ख़ाना नं० 6 में हो तो लड़कियां ही लड़कियां होंगी केतु ख़ाना नं० 4 में हो तो लड़के ही लड़के पैदा होंगे।

मगर आपस में साथी ग्रह न बन रहे हों लाल किताब पेज नं० 326 शनि व चंद्र का सम्बन्ध

तादाद औलाद - शुक्र या बुध या दोनों मिले जुले से जितने दूर पर वृहस्पत हो यानी जितने दरमियानी घर हों। क़ायम रहने वाली तादाद बच्चे इतनी होगे कम अज़ कम जिस में से नर मादा ऊपर ज़िक्र किए ढंग पर देख लेंगे।

औलाद का वाल्दैन को सुख - ख़ाना नं० 1-3-5 के ग्रहों की अच्छी या मन्दी हालत से ज़ाहिर हो जाएगा।

वाल्दैन व औलाद का बाहमी सम्बन्ध - एक दो तीन चार हद 12 की तरतीब से अगर कुण्डली में हो।

पहले घरों में	दरमियान में	आख़िर या बाद के घरों में	तो असर क्या होगा	
वृहस्पति		बुध	पैदाईश औलाद ज़रूर होगी	बुध वृहस्पति बाहम
बुध		वृहस्पति	बुध के वक़्त से वालिद दुखिया	बिलमुक़ाबिल हो जावें। तो
			बरबाद या खत्म ही होगा।	लड़कियां ज़रूर कायम होंगी
मंगल	वृहस्पति	बुध	औलाद (नर) क़ायम।	लड़कों की शर्त नहीं होगी।
मंगल	बुध	वृहस्पति	औलाद (नर) क़ायम।	
वृहस्पति	मंगल	बुध	औलाद (नर) क़ायम।	
वृहस्पति	बुध	मंगल	औलाद (मादा) क़ायम।	
बुध	वृहस्पति	मंगल	औलाद (मादा) क़ायम।	
मंगल वृहस्पति		बुध	मुश्तरका औलाद (लड़के लड़कियां) क़ायम और सब सुखी होंगे	
मंगल बुध		वृहस्पति	लड़की क़ायम। वालिद दुखिया	
वृहस्पति		मंगल बुध	लड़की क़ायम। वालिद दुखिया।	
बुध		मंगल वृहस्पति	औलाद व बाप दोनों ही दुखिया।	
मंगल		बुध वृहस्पति	औलाद क़ायम मगर बाप की हालत रद्दी।	

नोट – इस तमाम अरमान में जहां कही भी मन्दे ग्रहों का ज़िक्र है उनके मन्दे फल सिर्फ़ उसी दिन से या दिन तक गिने जाएंगे जिस दिन से कि वह मन्दे ग्रह वर्ष फल के हिसाब से शुरू या ख़त्म होवें। सारी उम्र के लिए ही मन्दे नहीं ज़्यादा से ज़्यादा हर ग्रह अपने पहले दौरा (आम असर की मियाद या ग्रह की अपनी उम्र) या उम्र के पहले 35 साला चक्र तक असर कर सकता है। महांदशा वाला ग्रह भी जो जन्म दिन से ही शुरू हो जावे और चाहे दो दफा ही यक्के बाद दीग़र दौरे में मन्दा हो जावे 39 साल ज़्यादा से ज़्यादा मन्दा रह सकता है। खाना नं० 5 में सूर्य या वृहस्पति के दुश्मन ग्रह से औलाद बरबाद होगी। लेकिन ख़ाना नं० 9 में ऐसे दुश्मन ग्रह का दोस्त ग्रह अपने दिन की औलाद को ज़रूर क़ायम रखेगा। कल्पना करते हुए ख़ाना नं० 5 में शनि और नं० 9 में मंगल हो तो मंगलवार के दिन वाली औलाद ज़रूर क़ायम रहेगी।

अरमान नं० 124

किस्मत का असर – ख़ाना नं० 9 के ग्रह क़िस्मत के बुनियादी ग्रह होते हैं। इस ख़ाने में ख़ाना नं० 3 और ख़ाना नं० 5 के ग्रहों का असर भी आ मिलता है। औलाद की पैदाईश के दिन से ख़ाना नं० 5 का असर न सिर्फ़ ख़ाना नं० 9 में जाने लग जाता है बल्कि बाप बेटे की मिली–जुली किस्मत 70–72 साला सवाल पैदा करने लग जाता है। ख़ाना नं० 3 का असर कुण्डली वाले के अपने जन्म से ही ख़ाना नं० 9 में मिलना माना है। औलाद की पैदाईश के दिन से पहले ख़ाना नं० 5 का असर ख़ाना नं० 9 में गया वह बाप बेटे की मिली–जुली किस्मत पर असर नहीं करता बल्कि ख़ाना नं० 9 की दूसरी चीज़ें यानी करम धर्म और कुण्डली वाले के अपने बुज़ुर्गों के सम्बन्ध में असर रखता है। औलाद की पैदाईश के दिन से ख़ाना नं० 5 का असर कुण्डली वाले के बुज़ुर्गों की बजाए स्वयं कुण्डली वाले की अपनी क़िस्मत (जो बाप बनता है।) पर असर करता है। इसी तरह ही ख़ाना नं० 3 का असर भाई की पैदाईश के दिन से ख़ाना नं० 9 में जब जाएगा तो कुण्डली वाले की अपनी ज़ात पर असर करेगा। और भाई की पैदाईश से पहले कुण्डली वाले के अपने बुज़ुर्गों के सम्बन्ध में दख़ल देगा। लेकिन अगर इसका (कुण्डली वाले का) भाई पहले ही मौजूद हो तो बड़े भाई की किस्मत का असर कुण्डली वाले में आएगा। ख़ाना नं० 3 की इस ताक़त की वजह से मंगल की राशि नं० 8 मंगल बद मौत ने भी उलटा देखा। क्योंकि मंगल नेक व बद दोनों भाई ही हैं। उम्र के पहले 35 साला चक्र में आकर छोटे भाई भी हो और औलाद भी शुरू हो जावे। तो ख़ाना नं० 5 का असर ख़ाना नं० 3 के असर पर प्रबल होगा। अगर ख़ाना नं० 3 व नं० 5 दोनों ही ख़ाली हों तो क़िस्मत की बुनियाद पर सिर्फ़ ख़ाना नं० 9 के ग्रह माने जाएंगे। अगर ख़ाना नं० 9 भी ख़ाली हो तो ये शर्त ही उड़ गई।

ख़ाना नं०5 का असर कुण्डली वाले पर इसके बुढ़ापे में होता है। और ख़ाना नं० 3 का बचपन से या यूं कहो कि ख़ाना नं० 3 का असर उम्र के पहले 35 साला चक्र में होता है। और ख़ाना नं० 5 का उम्र के दूसरे 35 साला चक्र या क़िस्मत की बुनियाद पर उम्र के पहले 35 साला चक्र में ख़ाना नं० 3 का असर होगा और दूसरे 35 साला चक्र में ख़ाना नं० 5 का असर क़िस्मत की बुनियाद पर होगा। खुलास्तन उम्र के दूसरे 35 साला चक्र में ख़ाना नं० 5 का असर ख़ाना नं० 3 के असर पर प्रबल होता हुआ क़िस्मत की बुनियाद पर होगा। हर हालत में ख़ाना नं० 5 प्रबल होता है और

ख़ाना नं० 3 नीचे दब जाने वाला। ख़ाना नं० 9 का अपना असर हर वक़्त साथ होगा। पहले घरों के ग्रह बाद के घरों के ग्रहों को अपनी दृष्टि के वक़्त जगा दिया करते हैं। अगर बाद के घरों में कोई ग्रह न होवे तो वह ख़ाना सोया हुआ गिना जाता है। कल्पना करते हुए ख़ाना नं० 11 में तो ग्रह कोई न कोई मौजूद है। मगर ख़ाना नं० 3 ख़ाली है। तो इस हालत में ख़ाना नं० 11 के ग्रह सोए हुए माने जाएंगे जिन को जगाने के लिए ''किस्मत'' को जगाने वाले ग्रह की ज़रूरत होगी। (अरमान नं० 10) बाद के घरों के ग्रहों के जागने के दिन से किस्मत का जागना मुराद होगी। इस तरह पर (यानी ख़ाना नं० 3 या 5 के ग्रह का दौरा आया तो नं० 9 के ग्रह जारी हो गए।) अगर ख़ाना नं० 9 के ग्रह मन्दरजा ज़ैल ख़ास-ख़ास सालों में जागें तो नीचे दिया हुआ असर पैदा होगा। जिस साल से साल से बाद के घरों के ग्रह जाग पड़े होंगे और उस साल से पहले दो सोए हुए माने जाएंगे।

वृहस्पति के ख़ाना नं० 9 में - मन्दरजा ज़ैल ख़ास-ख़ास वक़्तों में जागे हुए ग्रहों का असर

बुध का इस घर से सम्बन्ध जुदी जगह भी दर्ज है

वृहस्पति - जब उम्र के 16वें साल शुरु से जारी हो जावे निहायत मुबारक़ फल देगा। शुक्र का साथ यानी ऐसी हालत में शुक्र वृहस्पति मिला-जुला ख़ाना नं० 9 में हों तो स्त्री भाग में काग़ रेखा (मगर तीर्थ यात्रा 20 साल उत्तम) का मन्दा फल देगा। चंद्र के साथ से यानी चंद्र वृहस्पति मिला-जुला ख़ाना नं० 9 में मातृ हिस्सा की मदद। तीर्थ यात्रा 20 साल और उत्तम दोनों का साथ यानी चंद्र वृहस्पति शुक्र मिला-जुला नं० 9 में कभी अमीरी के समन्दर की ठाठें। कभी ग़रीबी में रेत के ज़र्रा को भी चमक न होगी।

सूर्य - जब 22वें साल उम्र के शुरू हो जावें मुबारक फल देगा। राजदरबार मुबारक फल - वाल्दैन के लिए मुबारक- अपनी उम्र लम्बी - बाप की उम्र लम्बी-बाबे की उम्र लम्बी होगी। शुक्र का साथ यानी शुक्र सूर्य मिला-जुला ख़ाना नं० 9 में स्त्री भाग में काग़ रेखा। मगर यात्रा उत्तम और 20 साल उत्तम फल देवे। चंद्र का साथ यानी चंद्र सूर्य मिला-जुला नं० 9 में मातृ हिस्सा की मदद। 20 साल तीर्थ यात्रा उत्तम दोनों का साथ यानी चंद्र शुक्र सूर्य नं० 9 में कभी अमीरी का समन्दर ठाठें देवें। ग़रीबी में रेत के ज़र्रा की भी चमक न होवे। सूर्य जब ख़ाना नं० 9 में हो तो ख़ाना नं० 5 भी रोशन और नेक असर देगा।

चंद्र - जब 24 साला शुरु उम्र में जारी हो तो वही जो ऊपर चंद्र वृहस्पति - चंद्र सूर्य - चंद्र वृहस्पति शुक्र - चंद्र सूर्य **शुक्र** - का ऊपर लिखा है। चंद्र जब ख़ाना नं० 9 में हो तो ख़ाना नं० 5 भी चंद्र का अन्दरूनी तौर पर नेक असर देगा। क्योंकि यह घर सूर्य का माना है जिसके सामने चंद्र जुदा और ज़ाहिरा फल न देगा।

शुक्र - जब उम्र के 25वें साल शुरु होवें तो मंगल बद का नीचे लिखा असर देगा।

मंगल (नेक) - जब उम्र के 13वें साल शुरु होवें तो उसकी पैदाईश पर उसके वाल्दैन के पास दौलत का भण्डारा कायम होगा। हुकूमत का साथ होगा। फिर मंगल के वक़्त से वही उम्दा हालत जो बवक़्त पैदाईश वाल्दैन की थी होगी।

मंगल (बद) – जब उम्र के 15वें साल शुरु होवें तो तबदीली मज़हब पैदाईश में राज़ वाल्दैन की माली हालत उसके जन्म से ख़राब हो कर मंगल बद के ज़माने के ख़त्म पर दुरुस्त होगी।

बुध – जब उम्र के 34वें साल शुरु होवे तो ऊपर लिखा मंगल बद का असर देगा। पापी ग्रह जब ऐसे ढंग पर शुरु होवें कि उनके असर का दूसरा दौरा उम्र के मन्दरजा ज़ैल सालों से शुरु होवे तो।

शनि – 60वें साल मुबारक अगर शुक्र का साथ हो यानी शुक्र शनि मिले–जुले ख़ाना नं० 9 में हों या शुक्र वृहस्पति दोनों का साथ यानी शुक्र शनि वृहस्पति नं० 9 में हों तो हर दो हालत में उत्तम फल देगा। चंद्र का साथ यानी चंद्र शनि ख़ाना नं० 9 में खराब असर। चंद्र का फल मन्दा मिला होगा। वृहस्पति चंद्र दोनों का साथ यानी चंद्र शनि वृहस्पति ख़ाना नं० 9 में ख़राब असर। चंद्र का फल मन्दा होगा। शनि के साथ राहु या केतु नं० 9 में निहायत मुबारक भारी क़बीला और धन दौलत शाहाना होगा।

राहु– जब उम्र के 42वें साल भी शुरु होता होवे मुबारक। खर्चा बहुत बड़ा मगर क़बीले की बेहतरी में होगा। औलाद के लिए ग़ैरमुबारक होगा। भाई बहनों से इत्तेफ़ाक़ रखने में बरक़त होगी। औलाद 21 साला फ़र्क़ वाली क़ायम और मददगार होगी।

केतु – 48 साला उम्र के शुरु से जारी स्वयं अपने लिए मुबारक सफ़र दर पेश रहे। शुक्र का साथ यानी शुक्र केतु नं० 9 में मिली–जुली हों तो मुबारक। दौलत पर दौलत आवे। चंद्र का सम्बन्ध यानी चंद्र केतु मिला–जुला नं० 9 में माता व माता ख़ानदान पर बुरा असर देवे। ख़ास कर उस वक़्त जब केतु के दुश्मन ग्रह (मंगल) का दौरा होवे।

ख़ाना नं० 9 के ग्रह

ऊपर लिखे सालों में वर्ष फल के हिसाब से शुरु हों या न हों तो भी ऊपर का फल देंगे। शुरू उम्र की तरफ़ से अपनी–अपनी उम्र में शुरू हो कर (यानी वृहस्पत 16 साला उम्र से–सूरज 22 साला उम्र से– चंद्र 24 साला उम्र से– शुक्र 25 साला उम्र से– मंगल नेक 12 साला उम्र से– मंगल बद 15 साला उम्र से– दोनों मिले जुले 28 साला उम्र से– बुध 24 साला उम्र से– शनि 60 साला राहु 42 साला उम्र से– केतु 48 साला उम्र से) अपनी–अपनी उम्र के असर तक ही यानी वृहस्पत 16 साल से शुरू हो कर 16 साल ही यानी 32 साला उम्र तक सूरज 22 से 22 साल कुल 44 साला उम्र तक शनि 60 से 60 साल कुल 120 साल कुल 120 साल तक वग़ैरह–वग़ैरह ऊपर का फल देंगे। बर्ष फल के हिसाब से ख़ाना नं० 9 वाले का असर इसकी अपनी आम तौर पर शुरू होने की मियाद की बजाए जन्म दनि से ही शुरू होता है तो वह ग्रह जन्म दिन से अपनी उम्र के अर्सा तक ही ऊपर का फल देगा। यानी बुध 34 साल मंगल 28 साल शनि 60 साल वग़ैरह।

संक्षेप से ख़ाना नं० 9 के तमाम ग्रह जब कभी भी शुरू हावें वह अपनी अपनी आम उम्र की मियाद तक फल देगे। सिवाए शनि के जो 60 साल फल देगा और उम्दा। इस तरह ख़ाना नं० 9 में शुक्र या बुध मंगल बद सब से मन्दे और शनि और शनि नं० 9 में सब से उत्तम और सब से लम्बा अर्सा 60 साल का होगा।

ख़ाना नं० 2 में – सब ग्रह ऊपर ख़ाना नं० 9 के लिए लिखा हुआ तमाम फल उम्र के 60 साठ साल लिखा है। तो वह

उम्र के शुरू की तरफ़ से साठ साल बुढ़ापे की तरफ़ को होगा। और यही शनि ख़ाना नं० 2 में 69 साल होगा। मगर मौत के दिन की तरफ़ से पीछे जन्म दिन की तरफ़ को गिन कर इसी तरह ही सब ग्रह देंगे।

अरमान नं० 125 ता 129

वृहस्पत – पापी ग्रहों (शनि राहु केतु) मय बुध के साथ पिघले हुए सोने की तरह राशि फल का होता है। जिस में हर तरह की शक का फ़ायदा उठाया जा सकता है।

वृहस्पत के निशानात

(1) वृहस्पत के सीधे खड़े ख़त वृहस्पत का राहु के साथ का सम्बन्ध

(2) चक्र के सीधे खड़े ख़त वृहस्पत का बुध के साथ होने का सम्बन्ध

(3) संख़ के सीधे खड़े ख़त वृहस्पत का केतु के साथ होने का सम्बन्ध

(4) सदफ़ के सीधे खड़े ख़त वृहस्पत का शनि के साथ होने का सम्बन्ध

अरमान नं० 130

राशि फल का वृहस्पत् या उंगली की पोरियों पर वृहस्पत के निशानों से लिया हुआ वृहस्पत हो तो ंद्र का काम देगा।

सूरज शुक्र मिले जुले हों = हवाई ताक़तों का मालिक वृहस्पत होगा। और सोना वग़ैरह ठोस हालत की चीज़ो का संबंधित न होगा।

(i) कुण्डली में जब शुक्र नीच हो (शुक्र नं०6 में) तो सूरज मंगल वृहस्पत का फल मन्दा होगा और

(ii) जब पापी ग्रहों या केतु का फल मन्दा हावें। तो वृहस्पत का फल भी मन्दा होगा।

(iii) जब सूरज या चंद्र उम्दा न हों (अरमान नं० 108 फ़ेहरिश्त ग्रहण) वृहस्पति की हवा निहायत सर्द बरफानी तूफान की हवा की तरह क़िस्मत के असर को सुला देगी। या क़िस्मत का आम दुनियावी असर मन्दा ही होगा या हल्की क़िस्मत होगी।

(iv) जब मंगल नष्ट हो (मंगल बद हो) तो वृहस्पति भी नष्ट होगा। यानी आकाश बेल होगी जो जिस वृक्ष पर चढ़े उसे तबाह कर देगी।

(vi) जब बुध का साथ हो तो बुध फ़ौरन वृहस्पत को अपने दायरा में बांध लेगा। और वृहस्पति या तो शनि का सांप बन कर या सूर्य की किरने हो कर बाहर निकलेगा। यानी

लखोंपति होता हुआ मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे मगर अक़्ल की कोई पेश न जाएगी।

(1) **ख़्वाह** = वृहस्पति अकेला या हो बुध की राशि 3-6 में
अपने दोस्त चंद्र के साथ ही बुध का पक्का घर 7
और बुध को देखें वृहस्पति या देखें चंद्र वृहस्पति

(2) **ख़्वाह** = बुध देखें वृहस्पति बुध की राशि 3-6 में या
या वृहस्पति चंद्र मिले-जुले को पक्का घर 7

में से यानी 3 में बुध देख सकता है। 11-9 को या 11-9 में से 3 को

में से यानी 6 में बुध देख सकता है। 12-9 को या 2-12 में से 6 को

में से यानी 7 में बुध देख सकता है। 1-9 को या 7 में से नं० 1 को

(3) चाहे किसी और तरह भी बरूए दृष्टि वग़ैरह बुध की राख। रेत वृहस्पत की ग़ैबी हवा या गृहस्ती ताक़त सोने वग़ैरह में मिल जावे।

ऐसी हालत में अगर सूर्य व चंद्र उम्दा हों (बमुजब अरमान नं० 168) तो क़िस्मत उम्दा होगी। फ़ैसला हक़ में हावे।

(4) लेकिन अगर वृहस्पति अकेला या वृहस्पत चंद्र इकट्ठे या दोनों चंद्र या वृहस्पत में से कोई एक अपने ऊंच घर ख़ाना नं० 2 या 4 में (या स्वयं बुध नं० 2-4 में या दोनों मिले जुले के साथ ही मिल बैठे चाहे किसी भी घर) हो जावें। तो बुध दुश्मनी की बजाए मदद देगा। चंद्र का पूरा नेक असर होगा। बढ़ के पेंड़ की तरह छत्रधारी दौलत का मालिक होगा।

(5) अकेले-अकेले चंद्र या वृहस्पति को बुध मार लेगा। दूध में रेत या सोने में राख स्वाह कलई का टांका या कोढ़ पैदा कर देगा।

(6) नीज़ अरमान नं० 108 (वृहस्पति बुध मिले जुले वग़ैरह) देखें।

वृहस्पति जब दो या दो से ज़्यादा ग्रहों के साथ हो जावें। या उनको देखता हो। जो ग्रह कि आपस में दुश्मन हों (बुध या मंगल की वह ताक़त जो मंगल या बुध नर ग्रहों व स्त्री या प्रभावहीन ग्रहों के दरमियान होने पर रखते हैं।) कि शर्त न होगी। और न ही उन ग्रहों की वृहस्पत से दुश्मनी की शर्त होगी) तो वह उनकी बाहम वाली दुश्मनी हटा देगा। ये मतलब नहीं है कि दोस्ती ही पैदा करवा देगी। दोस्ती पैदा करवाने वाला चंद्र है।

वृहस्पति व शनि का बाहमी सम्बन्ध - (i) वृहस्पति के घरों में शनि बुरा फल न देगा। मगर शनि के घर ख़ाना नं० 10 में वृहस्पति नीच फल का होगा। (ii) (वृहस्पति शनि मिले जुले) जुदी जगह लिखा है। वृहस्पति दोनों जहानों की हवा का मालिक है। और सिर्फ़ नेक हिस्सा का यानी जब तक हवा में सर्दी (चंद्र) गर्मी (सूर्य) और नेकी की हालत (मंगल नेक) मौजूद हो वृहस्पति दोनों जहान के मायनों का होगा। लेकिन जब कोई भी और हालत इस में मिली तो वृहस्पति सिर्फ़ एक हालत का मालिक होगा।

वृहस्पत का राहु से सम्बन्ध - (i) राहु के सम्बन्ध से वृहस्पत चुप हो जाता है। मगर क़ायम ज़रूर होता है। सोना (वृहस्पति) राहु के सम्बन्ध में पीतल होगा। वृहस्पति को अगर चंद्र की मदद मिल जावे तो दुश्मनों को मार लेता है। पीतल पर पानी लगे तो नीला रंग राहु अलग होने लगेगा। यही राहु जब शनि के लोहे पर लगे (लोहा व नीला थोथा)

तो तम्बा (सूजर) होगा। (ii) राहु साथी के सिर की लहर तो वृहस्पति इसकी पेशानी होगी। मिले जुले होने की वजह से हाथी का सिर दो तुरबों की शक़्ल में बट गया। हू–ब–हू दोनों ग्रहो के मिले जुले होने पर आमदन की नाली की दो रंगी होगी।

दु:ख मुसीबत ग़ैबी हमले जिन्न भूत तमाम फ़र्ज़ी भूत तमाम फ़र्ज़ी और वहम की बुरी हवाएं)

चंद्र व चंद्र का घर

( )